महाकवि चन्ददास के 'रामविनोद' एवं केशव जी की 'रामचन्द्रिका' का तुलनात्मक अध्ययन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय की पी-एच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध - प्रबन्ध

प्रस्तुतकर्ता :

कु० सिलविया ब्राऊन

एम. ए. (हिन्दी, इतिहास, दर्शनशास्त्र), 'साहित्यरत्न'
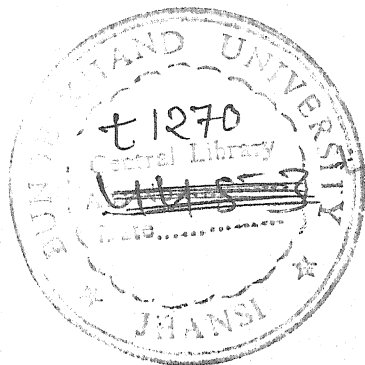
निर्देशक :

डॉ० चन्द्रिकाप्रसाद दीक्षित

प्रवक्ता हिन्दी

पं. जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय, बाँदा

निर्देशक : चन्ददास साहित्य - शोध - संस्थान, बाँदा

तार — 'ग्रन्थ'

फोन — ६२ पी.पी.

चंददास साहित्य शोध संस्थान

सिविल लाइन्स, बाँदा-२१०००१

साहित्य, संस्कृति, कला, पुरातत्व एवं दुर्लभ पाण्डुलिपियों के अन्वेषण, संग्रह, प्रकाशन का बाँदा,
बुन्देलखंड स्थित अखिलभारतीय शोध केन्द्र

निदेशक—
डा० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित'
स्नातकोत्तर, हिन्दी विभाग
पं० जवाहर लाल नेहरू महाविद्यालय, बाँदा

दिनांक ८.५.८३

प्रमाण-पत्र

मैं प्रमाणित करता हूं कि कु० सिलविया ब्राउन ने मेरे निदेशन में 'महाकवि केशव की रामचन्द्रिका और चंददास कृत रामविनोद' का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर शोध-प्रबन्ध, विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित अवधि में पूरा किया है।

डा० दीक्षित

(डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित)
अध्यक्ष, हिन्दी,
पं० जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय
बाँदा

आत्म निवेदन

मेरा पी० एच० डी० के लिये शोध प्रबन्ध " महाकवि चंददास की रामविनोद एवं केशव जी की राम चन्द्रिका का अध्ययन "प्रस्तुत है ।

इस शोध कार्य के निर्देशक डा० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित हिन्दी प्रवक्ता । पं० जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय बांदा व निर्देशक हिन्दी शोध संस्थान बांदा हैं । आपने महाकवि " चन्द दास " की दुलर्भ पाण्डुलिपियों का अन्वेषण, सर्वेक्षण कर, उक्त ग्रन्थ की बिखरी साहित्य धनराशि को, एकत्र कर, व उसे अज्ञात के अन्धकार में लाकर हिन्दी साहित्य को अमुल्य ग्रन्थ व नवीन दिशा दी तथा वैज्ञानिक आधार पर " रामविनोद " की विस्तृत विश्लेषणात्मक विवेचना प्रस्तुत की जिससे मेरे शोध को विषय कलेवर प्राप्त हुआ ।

शोध विषय में महाकवि की " राम विनोद " व केशवदास की राम चन्द्रिका के काल-वैशिष्ट्यता, राजनीतिक, सामाजिक व धार्मिक स्थितियाँ व प्रभाव दोनों महाकवियों व आचार्यों के व्यक्तित्व व कृतित्व का विषय वस्तु अधिकारिक कथा व प्रसंगों, व उन पर संस्कृत प्रभाव काव्य गठन, काव्य शिल्प तत्वों व काव्यांगों तथा दोनों महाकवियों को साहित्य को प्रदेयता आदि, की विविधता और साम्यता की तुलना व विवेचना अपने बौद्धिक स्तर लेखिनी को सरस्वती देवी का अंश अविलम्ब देकर तथा रामविनोद व राम चन्द्रिका के इस राम " के " रामत्व की पूर्ण शक्ति का आधार मान कर, पूर्ण करने का प्रयास किया है, चूंकि साहित्य अनुभूति से पूर्ण व उच्च बौद्धिक स्तर विद्वानों के सन्मुख यह शोध एक धूल कणिका मात्र है ।

डा० चन्द्रिका प्रसाद जी । निर्देशक । ने अपने गहन व गम्भीर ज्ञान से मुझे पूर्ण सहयोग के साथ जो प्रेरणा दी, वह सदैव मेरे मानस पटल पर अंकित रहेगा ।

तिथि : 23. 6. 1983

कु० सिलविया ब्राउन

" सिला "

महाकवि चन्द्रदास के राम विनोद व कवि केशव की राम चन्द्रिका का तुलनात्मक अध्ययन ।

प्रथम सर्ग :- रीति युगीन परिवेश का अनुशीलन

(क) रीतियुगीन राजनीतिक परिवेश और साहित्यिक सृजन में उसका प्रतिफलन ।

(ख) रीतियुगीन सामाजिक परिवेश का युगीन रचना चिन्तन में योगदान ।

(ग) रीति युगीन सांस्कृतिक और धार्मिक परिवेश और तत्कालीन साहित्य सृजन की दिशा व दृष्टि ।

(घ) रीति युगीन साहित्यिक परम्पराएँ और रचना शास्त्रों में उसके प्रतिफल का अनुशीलन ।

द्वितीय सर्ग :- चन्द्र दास और केशव के व्यक्तित्व एवं कवित्व (कृतित्व) का तुलनात्मक अध्ययन ।

(क) चंद्रदास और केशव का परिचयात्मक अनुशीलन ।

(ख) चन्द्रदास और केशव की जीवन दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन ।

(ग) चन्द्रदास व केशव का दार्शनिक चिन्तन का रहस्योद्घाटन ।

तृतीय सर्ग :- राम विनोद व राम चन्द्रिका की विषय वस्तु का शास्त्रीय तुलनात्मक अध्ययन ।

(क) राम विनोद व राम चन्द्रिका की आधिकारिक कथावस्तु का भाव और शिल्प ।

(ख) रामविनोद और राम चन्द्रिका की प्रासंगिक कथाओं का तुलनात्मक अनुशीलन ।

(ग) रामविनोद और राम चन्द्रिका की वस्तु का शास्त्रीय विवेचन ।

(ग) प्रबन्ध काव्य की दृष्टि से दोनों महाकाव्यों की कथा वस्तुओं का अनुशीलन ।

चतुर्थ सर्ग :- राम विनोद व राम चन्द्रिका में दर्शन भाग व संवेदनात्मक अनुभूतियों का तुलनात्मक अध्ययन,

(क) रामविनोद और राम चन्द्रिका के दार्शनिक चिन्तन का अनुशीलन ।

(ख) राम विनोद एवं राम चन्द्रिका के भाव पक्ष पक्ष व भक्ति काव्यों का भाव संवेदनात्मक अनुभूतियों का अध्ययन ।

(ग) राम विनोद व राम चन्द्रिका का मानवीय एवं प्रकृति का सौंदर्य पर अनुशीलन ।

पंचम सर्ग :- राम चन्द्रिका और राम विनोद के शिल्प तत्वों का अनुशीलन ।

(क) राम विनोद व रामचन्द्रिका की भाषा का तुलनात्मक अध्ययन ।

(ख) राम विनोद व रामचन्द्रिका के सम्वादों का तुलनात्मक अध्ययन ।

(ग) राम विनोद व राम चन्द्रिका के अभिव्यंजना कौशल का अनुशीलन ।

षष्ठ सर्ग :- रीति आचार्य की दृष्टि से केशव और चन्द्रदास का तुलनात्मक मूल्यांकन ।

(क) काव्यादर्शों की दृष्टि से राम विनोद व राम चन्द्रिका का अध्ययन ।

(ख) रस नियोजन एवं निष्पादन के धरातलों पर राम विनोद व राम चन्द्रिका का अनुशीलन ।

(ग) रीति तत्वों के आधार पर राम विनोद तथा राम चन्द्रिका का विश्लेषण ।

(घ) राम विनोद व राम चन्द्रिका का आचार्यत्व की दृष्टि से अनुशीलन ।

सप्तम सर्ग :- हिन्दी साहित्य के संदर्भ में चन्द दास और केशव के प्रदेय का तुलनात्मक मूल्यांकन ।

(क) चन्ददास और केशव के काव्य के अन्तरंग और बहिरंग क्षेत्रों में प्रदेय का तुलनात्मक अध्ययन ।

(ख) समीक्षा व आचार्यत्व के क्षेत्रों में चन्ददास व केशव के प्रभावों का विस्तारीय अनुशीलन ।

(ग) चन्ददास व केशव के सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रदेय और प्रभाव का अनुशीलन ।

(घ) चन्ददास और केशव की समीक्षा के प्रमाण धरातलों पर गहन अनुचिन्तन ।

" रीति युगीन राजनीतिक परिवेश और साहित्यिक सृजन में उनका प्रतिफल "

राजनीतिक दृष्टिकोण व ऐतिहासिक साक्ष्यानुसार केशव व चन्द्रगुप्त का काल मुगल शासक अकबर और औरंगजेब के मध्य का काल माना गया है ।1। अकबर का कार्य काल 1556 से 1605 तक । जहांगीर का काल 1605 से 1627 तक तथा औरंगजेब का काल 1657 से 1707 तक । इन्हीं राजनीतिक स्थिति व शासक के काल के मध्य दोनों कवियों का कार्य काल माना गया है । केशव का साहित्यिक कार्य काल 1612 वि० से संवत 1674 वि० माना है । यद्यपि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, डा० रामकुमार वर्मा, रामनरेश त्रिपाठी, मिश्रबन्धु आदि महोदय अधिकांश विद्वान केशव का जन्म सं० 1612 वि० मानते हैं । किन्तु गौरी शंकर द्विवेदी तथा ला० भगवान दीन ने सं० 1618 वि० माना है । " रसिक प्रिया से उनका जन्म काल सं० 1648 वि० अर्थात सन् 1591 और साहित्यिक कार्य 1627 जहांगीर काल ही निकलता है ।2। इससे सिद्ध होता है कि केशव का कार्यकाल जहांगीर के समकालीन है और किसी युग का साहित्य उस युग के मान्य भावों, विचारों तथा आकांक्षाओं और युग की परिस्थिति के अनुसार बनता है इससे स्पष्ट है, कि युग विशेष के साहित्य का सृजन उस युग की विभिन्न परिस्थितियों - राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक - के अनुसार ही होती है । किसी साहित्य का इतिहास इस सार्वभौम सत्य का अपवाद नहीं है ।

---

1. मिडेवल इंडिया लेन पूल सं० 104-106
2. संवत सोलह से बरस बीते अठतालीस
*. कार्तिक सुदि तिथि सप्तमी वार बरन रजनीस
अतिरति गति मति एक करि, विविध विवेक विलास
रसिकन को रसिक प्रिया कीन्ही केशव दास ।।2। रसिक प्रिया पृ० सं० ।।

अतएव किसी काल के किसी कवि के ग्रन्थों की सहानुभूति पूर्ण आलोचना करने के लिए उन परिस्थितियों का जानना आवश्यक है । इसके अतिरिक्त कवि पर उसके पूर्व आती हुई साहित्यिक परम्परा का भी प्रभाव पड़ता है वह अपने से पूर्व आती हुई साहित्यिक विचार धारा से अनुप्राणित होकर काव्य रचना करता है । अतः केशव व कवि चन्ददास के काव्य अध्ययन के पूर्व उनसे पहले साहित्यिक विचार धारा, तत्कालीन राजनीतिक सामाजिक और धार्मिक स्थितियों का दिग्दर्शन कराना आवश्यक होगा ।

केशव :- केशव के पूर्ववर्ती हिन्दी साहित्य के इतिहास को देखने से हिन्दी काव्य क्षेत्र में विभिन्न धारायें दिखाई देती हैं जिनमें वीरगाथा काव्य योगियों का नाथों का संत काव्य, सूफियों की प्रेमाश्रयी धारा राम काव्य और कृष्ण काव्य धारायें प्रमुख हैं ।

कवि चन्द दास :- के काव्य पर भी इन्हीं धाराओं राजनीति सामाजिक परिवेश को प्रभाव परिलक्षित है । जहाँगीर के पहिले ही अकबर के काल से हिन्दुओं पर से जजिया कर हटा दिया गया था, हिन्दुओं को पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त हुई, वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित हुआ, ।1। अकबर और जहाँगीर हिन्दुओं और मुसलमानों को समान दृष्टि से देखने लगे ।2। हिन्दुओं को ऊँचे पद मिले । दीन इलाही धर्म चलाया गया हिन्दु धर्म परिवर्तन को बाध्य नहीं किया गया ।

मेडियल इंडिया लेन पूल पृ0 सं0 251-52

,, ,, ,, पृ0 सं0 270-282

इस प्रकार से यह सिद्ध होता है कि कवि केशवदास अपने आश्रयदाता महाराजा वीरसिंह देव को प्रसन्न करने के लिये शृंगारिक काव्य की रचना रसिकप्रिया की किन्तु उनकी "रामचन्द्रिका" भी उस प्रभाव से वंचित न रह सकी। यह सब राजनीतिक स्थितियों का प्रभाव केशव के काव्य में स्पष्ट परिलक्षित होता है।

चन्द्रदास :-

दूसरी ओर चन्द्र दास का कार्यकाल की परिस्थितियाँ, केशवदास के परिस्थितियों से बिलकुल भिन्न व विपरीत था। अकबर और जहाँगीर की उदार व सहिष्णुता की नीति के विपरीत औरंगजेब की नीति अनुदार व असहिष्णुता की नीति थी और चन्द्र दास का काल सन् 1666 से 1771 तक माना गया है तथा "राम विनोद" का चन्द्र दास व रासो का चन्दबरदाई दोनों 18 वीं शताब्दी के अभिन्न कवि सिद्ध होते हैं। रासो का कवि चन्द्र वस्तु 18 वीं शताब्दी का कवि है क्योंकि रासो मे गुरुगोविन्द, छत्रसाल, औरंगजेब, शाहआलम आदि युद्ध का वर्णन है। ये सभी पात्र ऐतिहासिक पात्र हैं। इससे सिद्ध है कि रासो की सभी हस्तलिखित प्रतियाँ भी सं 18 सौ के बाद की है और उदयपुर के राजकीय पुस्तकालय की प्राचीन प्रति से 1760 की वस्तुतः अनेकों अनुमान और महाविद्वानों जैसे- कविराज श्यामल दास, कविराज मुरारिदान, पुरातत्व वेत्ता, डा० बूलर गौरीशंकर हीरा चन्द्र ओझा आदि तथा चन्द्रदास की रचनाकाल 18 वीं शताब्दी ही है। -1। इन तिथियों

1- समै अठारह से बरस अरु चार परधान
माघ शुक्ल तिथि अष्टमी बरनेऊ चन्द पुरान।। रामविनोद,
पृष्ठसं० 64, छन्द-3512।

से सिद्ध है कि वे औरंगजेब के काल के कवि थे । तब राजनैतिक स्थितियाँ औरंगजेब का कार्यकाल 1658 से 1707 तक माना गया जबकि महाकवि चन्द्रदास का काल सन् 1666 से 1771 तक माना गया है । इस समय मुगल शासन अपनी राजनीतिक "शक्ति" के लिये परमोत्कर्ष पर था । इसी शक्ति के सहारे औरंगजेब ने अपना पिता शाहजहाँ को 1657 में बन्दी बनाकर समस्त भाइयों को नष्ट करके "आलमगीर" की उपाधि धारण करके , 50 वर्षों तक राज्य किया । उसकी असहिष्णुता की नीति के विरोध में दो महान शक्तियों का उदय हुआ जो हिन्दू राष्ट्र निर्माण व हिन्दू संस्कृति व धर्म रक्षा में लगे थे । वे थे छत्रपति शिवाजी और गुरु गोविन्द सिंह । उन्होंने औरंगजेब की धार्मिक असहिष्णुता की नीति का विरोध किया क्योंकि हिन्दुओं के मन्दिर तोड़े जा रहा था । 1632 में नये मन्दिर निर्माण पर रोक लगा दी गई । "जजिया कर" लगा दिया गया ।

ऐसी परिस्थितियों में कवि "चन्द्र दास" पंजाब में महाराजा रणजीत सिंह के दरबारी कवि होने के नाते तत्कालीन परिस्थितियों" का उनके काव्य पर प्रभाव पड़ा ।

रणजीत सिंह ने एक शक्तिशाली सिक्ख राज्य की स्थापना की थी । इस ऐतिहासिक सत्य का पता "रामविनोद" के "दल में रणजीत सी एक अहै" से लगता है । इसी काव्य में औरंगजेब का रावण के रूप में चित्रित किया गया है । " अवतार लयो दस आय लियो" से दस कलाओं

के अवतार गुरुगोविन्द सिंह का अवतरण सांकेतिक है । ।1।
इन पंक्तियों से सिद्ध होता है कि ये महान विभूतियां भारतीयों की स्वाधीनता के लिये उदित हुईं । राम विनोद की पंक्ति "सुने न दशरथ और प्राणनाथ उर" यहां सीता या शिवा पर हुए अत्याचार का वेदना चित्रण है । सीता शब्द का प्रयोग शिवा की राज्यों ।सीता। की ओर से लड़ने वाले तत्कालीन महान योद्धा प्राणनाथ का संकेत छिपाये हुए "शिवा दान लेकर, शिवा दान कीजे----- आदि सांकेतिक पंक्तियां यहां सीता शब्द द्वारा शिवा राज्यों की स्वतंत्रता दिलाने, बधिया कर प्राण लेने वाला था । उसे धार्मिक लेने आदि की चेतना रामविनोद की पंक्तियों से व्यक्त हुई है । इस प्रकार रामविनोद हिन्दू अत्याचार के विरुद्ध मोर्चा तैयार करने के भावों को प्रकट करता है तो दूसरी ओर हिन्दू एकता, मनुष्य मात्र समता, मुस्लिम के विरोध में खड़ा किये गये चेतनात्मक भावों का समावेश है ।

जबकि औरंगजेब हिन्दुओं को पूर्ण रूप से नष्ट करने पर तुला था, मन्दिर का विध्वंस, मूर्तियों का विध्वंस, बधिया कर बनाना और हिन्दुओं को निर्धन और दुर्बल बनाना, तीर्थ त्योहार पर प्रतिबंध लगाना, तलवार के बल पर हिन्दुओं को धर्म परिवर्तन करवाना ।

इसी से हिन्दुओं में प्रतिरोध की भावना जागृत हो रही थी । पंजाब में गुरुगोविन्द और महाराष्ट्र में शिवा के नेतृत्व में इस संघर्ष का सूत्रपात हो चुका था ।

1- चन्द्र दास और उनका रामविनोद- एक अध्ययन । पृष्ठ 33 ।

मथुरा में जाटों ने, गोकुल के नेतृत्व में सन् 1669 में गोकुल ने गोकुल मन्दिर तोड़ने पर विद्रोह किया । चूंकि शक्तिशाली औरंगजेब ने उसे कुचल दिया । दिल्ली के निकट नारनौल के सत्यनामी सम्प्रदाय ने मुगल शासक औरंगजेब के विरुद्ध इतना बड़ा विद्रोह किया कि स्वयं औरंगजेब को अपने झण्डे पर कुरान की आयतें छपवानी पड़ी जिससे मुगल शासकों को बल मिले । इन्हीं अत्याचारों के मुख्य शिकार हुए थे तेग बहादुर । जिनके स्थान पर नौ वर्षीय बालक गुरु गोविन्द सिंह ने गुरु की गद्दी का गुरुतर भार सम्भाला । जो मुगल शासक औरंगजेब की आंखों में खटक रहा था । इस प्रकार देश के विभिन्न भागों में औरंगजेब के अत्याचारों के विरुद्ध सिर उठा रहे थे । और शक्ति सम्पन्न मुगल-वाहिनी बड़ी क्रूरता से इस विद्रोह को कुचल रही थी । इस दमन के फलस्वरूप विद्रोहाग्नि कुछ समय के लिये तो राख के समान हो जाती और समय पाकर दबी हुई चिंगारी के समान उभर आती थी । अतएव राजनैतिक दृष्टि से यह युग घोर अव्यवस्था का युग था । भ्रष्टाचार का बोलबाला तथा इन अत्याचारों के विरुद्ध मेवाड़ के राजा राजसिंह, शिवाजी और छत्रसाल सामान्य से जागीरदारों के लड़के थे । और गोकुल के साधारण जमींदार सतनामी में सिक्ख इन अत्याचारों के विरुद्ध जूझ रहे थे किन्तु इनमें कोई उच्च आदर्श नहीं था । केवल गुरु गोविन्द सिंह धर्म की रक्षा और हिन्दू राज्य की स्थापना करने के हेतु सैन्य शक्ति एकत्र कर रहे थे । ऐसी विषम परिस्थितियों में कवि चन्द्र दास लाहौर में गुरु गोविन्द के आश्रित कवियों में से थे । अतएव तत्कालीन परिस्थितियों का उन पर प्रभाव

पड़ना अनिवार्य था । कवि स्वयं राजपूत जाति के थे अतः कर्म से योद्धा और स्वभाव से घुमक्कड़ थे । और घूम घूम कर भारत की शोचनीय दशा का उन पर प्रभाव पड़ा । और इसी से संबंधित रामकथा के आधार पर राम विनोद की रचना की जिसमें तत्कालीन रावण रूपी औरंगजेब तथा राम रूपी गुरु गोविन्द कथा की पूर्वकथा के आधार पर राम विनोद की रचना की ।

गुरु गोविन्द सिंह की वीरता देश रक्षा की भावना और सीता से क्रिया राज्यों का वर्णन तथा सीताहरण से किया राज्यों के हरण (औरंगजेब यानि रावण) की कल्पना की गई है । वीर भाव के लिये वीर रस ही इस काव्य का प्रधान रस है ।

उक्त तथ्य ये दिखाते हैं कि " केशवदास " का काव्य राज्याश्रय कवि होने के कारण राज्यों की विलासमयी व राजाओं की राजनीति से प्रभाव से प्रभावित होकर श्रृंगारिक राजनीति की पटु व कौशलपूर्ण वाक्य चातुर्य से परिपूर्ण थी जिसमें राज्यों को अपने काव्य कौशल को दिखाने हेतु, पांडित्य से पूर्ण थी जब कि चन्द्रदास देश सुरक्षा, भाषा, धर्म, साहित्य रक्षक " गुरु गोविन्द सिंह " केदारधारी कवि थे, अतः गुरु गोविन्द सिंह जी की राजनीति से प्रभावित हुए बिना न रह सके । चन्द्रदास ने गुरु गोविन्द सिंह जी को मात्र शासक ही नहीं, हिन्दू धर्म व राज्य रक्षक " राम " के रूप में दशम अवतार भी स्वीकार किया जिस प्रकार राम ने असुरी वृत्ति वाले राक्षसों व सीता हरण करने वाले रावण का नाश करना प्रजा हित माना था वैसे ही गुरु गोविन्द सिंह ने सिया (सीता) राज्यों के हरणकर्ता औरंगजेब, धर्म जाति व भारतीय संस्कृति

का नाश करने वाले इस " रावण " । औरंगजेब । को मिटाने के लिये " पंच प्यारे " का निरूपण कर तथा लाख योद्धाओं से अकेले एक सिख योद्धा युद्ध करे ऐसी शक्ति प्रदान की । ऐसे ओज व शक्ति, देश भक्त, सत्य के अवतार गुरु गोविन्द के दरबारी कवि चन्द्रदास - धर्म, युद्ध, धर्म, साहित्य, तत्व योग साधना देश रक्षा की ओजस्विता से पूर्ण काव्य की रचना की जिसमें " राम विनोद " वीर, सात्विक धर्म, रक्षा आदि अनुकूल राजनीतिक परिस्थितियों से परिपूर्ण है ।

अतः दोनों महा कवियों (केशवदास व चन्द्र दास) की राजनीतिक परिस्थितियाँ विपरीत थीं अतः दोनों का राजनीतिक प्रभाव विभिन्न रूप से उनके काव्यों में परिलक्षित होता है ।

रीतियुगीन सामाजिक परिवेश का युगीन रचना में योगदान — इस युग का सामाजिक जीवन " वैभव काल " में वैभव सम्पन्नता और भोग विलास के फलस्वरूप कलापूर्ण और रुढ़िग्रस्त था । जन साधारण के साथ पढ़े लिखे भी रूढ़ियों और ग्रन्थियों के जाल में फंसे थे वर्ण-व्यवस्था राम भक्ति और कृष्ण भक्ति की तत्कालीन परम्परा के प्रभाव से ढीली पड़ गयी थी तथा नये व्यवसायों के कारण नई नई जातियों का जन्म हो रहा था । सामन्तों, शासकों व राजाओं की निरंकुशता जन साधारण का शोषण कर रही थी ।1। डा0 लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय हिन्दू वर्ण व्यवस्था, कुटुम्ब व्यवस्था, स्त्री दशा, विवाह आदि पर विस्तार से प्रकाश डाला है ।

हिन्दू मुस्लिम भी पूर्ण रूप से ऐक्य नहीं थे । मुसलमानों में

---

1. आधुनिक हिन्दी साहित्य की भूमिका । पृष्ठ 59

डा0 लक्ष्मी ~~xxxxxx~~ सागर वार्ष्णेय

शिया सुन्नी, ईरानी तूरानी का भेद था । मुगल शासकों के अधीन हिन्दू शासक व राजा या सामन्त को स्वतंत्र अधिकार न थे । देश मनसबदारों व अमीरों का जाल फैला था जो राज्य की मुख्य शक्ति के रूप में सुख भोग रहे थे ।

मुगल शासकों के महलों व दरबार का ऐश्वर्य अपनी पराकाष्ठा पर था । और भोजन वस्त्र, जैसे वस्त्र भूषण, भोज्य पदार्थ , सजावट अत्यन्त व्ययपूर्ण था । स्वर्ण व रत्न जटित, आभूषण वैभव से पूर्ण जीवन से विलासिता का रूप होता रहता था । इस विलक्षण विलासिता से छोटे शासक भोगी बने थे ।

दूसरी ओर श्रमिक वर्ग या जन साधारण की जीवन दशा अति शोचनीय थी । प्रजा में गरीबी का साम्राज्य था । ।2। इस युग में शासक वर्ग में भोग विलास के कारण भ्रष्टाचार फैला था तथा प्रजा व किसान का पैदावार करों के बोझ से दबे थे । ऐसी विषम सामाजिक स्थिति में ही रीति युगीन काव्य की रचना का युग था " किन्तु इस युग के अधिक कवि राज्याश्रयी थे जिन्होंने भोग विलास और वैभव की दृष्टिकोण में रखा जन साधारण की भावना की उपेक्षा की । कई कवियों ने वैभव संयुक्त ही काव्य शास्त्रों का निरूपण किया । रीति ग्रन्थों की रचना की, तथा पूर्ववर्ती भक्ति काल की , राम काव्य " कृष्ण काव्य " सूफी प्रेम, सन्त कबीर और चन्दीदास द्वारा, सूरदास द्वारा बनाये राग मार्गों पर जो सर्व साधारण में प्रचलित था से प्रभावित हो रीति काव्य साहित्य को प्रवाह दिया ।

---

1. रीति काव्य की भूमिका पृ0 13

केशवदास का युग भक्ति काल व रीति युगीन सन्धि काल था जो एक ओर उन पर भक्ति दूसरी ओर वैभव का प्रभाव रहा । उस काल में प्रजा भी उतनी दुखी नहीं थी जितनी कि " चन्द दास के रीति युग में दोनों के सामाजिक परिवेश भिन्न थे । किन्तु साम्य था । राजा सामन्त, अमीर, वैभव सम्पन्न और प्रजा पीड़ित मुस्लिम हिन्दू का पूर्ण रूप ऐक्य न होना, सामाजिक रूढ़ियाँ, परम्परा, भक्ति की विभिन्न धारायें, जन साधारण का शासक वर्ग से शोषित होना, अतः शासक वर्ग विलासिता और दुराचार के जाल में उलझे थे तो जनता निर्धन, शोषण युक्त कार्यों से लिप्त भक्ति के भाव से पूर्ण, ऐसी विरोधी अवस्था का सामाजिक प्रभाव रीति-युगीन साहित्य पर " केशव दास " व " चन्द दास "। के रामचन्द्रिका " और " राम विनोद " को देख कर स्पष्ट हो जाता है ।

केशव राज्याश्रय कवि थे अतः उन्होंने राजदरबारों की विलासिता देखी, गणिकायें गुण युक्त थीं विद्वान गणिकाओं के गीतों को समझने के लिए ज्ञान की आवश्यकता थी, अतः राजाओं सामन्त, शासक वर्ग अमीर काव्य शास्त्र, संगीत शास्त्रों का अध्ययन में अभिरुचि लेने लगे,' काव्य सौन्दर्यता लाने के लिये काव्य शास्त्रों की रचना हुई,/ तो जन साधारण शोषित होकर कृष्ण भक्ति और राम भक्ति, सच्चा प्रेमी भावनाओं से परिपूर्ण था उसका भी प्रभाव रीतियुगीन काव्य पर पड़ा जब कि कहा जाता है कि जन साधारण की भावना की उपेक्षा की गई थी किन्तु सूफी सन्त धारा, कृष्ण प्रेम, राम भक्ति भी जन साधारण की निधि थी, जिसे भक्त कवियों ने प्रसारित किया था " उस प्रभाव से रीति युगीन कवि

वंचित न रह सके और उनके काव्य में इन विपरीत परिवेश का प्रभाव दो प्रकार से पड़ा राजाओं को प्रसन्न करने के लिये , स्वयं मान सम्मान पाने के लिये, सौन्दर्य की अनुभूति को प्रगट करने के लिये काव्य नारी को अलंकरणों से शब्द चमत्कार, नख शिख वर्णन कर, अभिव्यक्त किया दूसरी ओर दलित जन साधारण की भक्ति को कृष्ण, राम को श्रंगारिक रूप में प्रस्तुत किया । अब यहाँ " केशव दास " भक्ति के काल के अंतिम चरण के कवि थे । दूसरे उनके पारिवारिक संस्कार का भी उन पर प्रभाव था अतः उन्होंने " राम चन्द्रिका " की रचना की जो भक्ति के साथ काव्य चमत्कार के निकट बहुत अधिक है ।

इस छन्द योजना, रस, में श्रंगार रस की प्रधानता लिये हुये प्रकृति वर्णन, पाण्डित्य पूर्ण ग्रन्थ है । जो राम भक्ति से वंचित है, मार्मिक स्थलों को अलंकार से पूरित किया है ।

" राम विनोद " ने जन साधारण की भावना को प्रस्तुत किया है । " चन्द " के काल में सामाजिक स्थिति अति विषम में जाति रूढ़ि-वादिता के बन्धन ढीले पड़ रहे थे । वैभव विलास का युग समाप्त हो गया था । स्वयं औरंगजेब विलासी नहीं था , सहिष्णुता के स्थान पर असहिष्णुता की नीति ने स्थान ले लिया था । हिन्दू जनता त्रस्त हो रही थी । राजपूतों की वीरता का ह्रास हो रहा था । जन साधारण की भक्ति में बाधा उत्पन्न की जा रही थी, युद्धों के कारण किसान, साधारण जनता दुखी थी । हिन्दू व शीया राजाओं की भी स्थिति बिगड़ गई थी । समाज में धन के साथ साथ धर्म का भी शोषण हो रहा था ।

स्त्रियों की दशा और भी दयनीय थी । ऐसे युग में "पन्त" हुए और उनका "रामविनोद" भक्ति, योग साधना, परिपूर्ण है क्योंकि इन दुखों को दूर करने का एक मात्र साधन "देह सदेह ब्रह्म" की प्राप्ति कर भक्ति का संवर्धन का सन्देश पर विजय प्राप्त नहीं हो सकती । उनके "राम" गुणोविन्द के रूप में औरंगजेब के द्वारा सामाजिक अव्यवस्था के व्यवस्थित करने के लिये अवतरित हुए थे ।

रीति युगीन संस्कृति व धार्मिक परिवेश व तत्कालीन सृजन की दिशा व दृष्टि

पिछले अध्यायों में राजनीति और सामाजिक परिवेश का दिग्दर्शन कराते समय संस्कृति व धार्मिक परिवेश की झलकियाँ भी प्रस्तुत हैं जिससे सिद्ध होता है कि शासकों के विलासिता से परिपूर्ण था और प्रजा उसकी अनुगामी थी । मध्य युगीन रीति काल में शासक बर्बर थे और प्रजा पीड़ित थी । अतः दोनों को धर्म के मूल तत्व का ज्ञान नहीं था । यही बात दुःख का कारण बनी । मुसलमान मुल्ला मौलवियों द्वारा बताये गये संकुचित रास्ते के अनुगामी थे । शासक हिन्दू धर्म को हानि पहुँचाने में जुटे थे । हिन्दू पण्डितों में आडम्बर, रूढ़िवादिता, व्यभिचार, ढोंगीपन था । उनके द्वारा बताये गये व्यर्थ कर्मकाण्ड का हिन्दू प्रजा पालन करती थी । दोनों धर्मों में आडम्बरों का प्रभाव था । सात्विक या सत्य धर्म का अभाव था ।

अकबर की सहिष्णु नीति वाले उदार शासक न थे, न तुलसी, सूर कबीर, नानक जैसे भक्त कवि थे जो जनता को उचित, नैतिकता से पूर्ण सच्चे धर्म का दिग्दर्शन कराते ।

यही बाह्य धर्म आडम्बर, रीतिकाल को मूढ़ता व पतन की ओर

का वर्णन किया है । नाथ मुनि, यामुनाचार्य आचार्यों ने भी इसे परिमार्जन किया । इस प्रकार इन सम्प्रदायों में रामानुज, माध्वाचार्य, विष्णुस्वामी की भक्ति धारा 11वीं शताब्दी में चली थी । इन सब का प्रतिबिम्ब रीतियुगीन साहित्य पर पड़ा । इस प्रकार इन चारों आचार्यों से प्रभावित होकर 14 शताब्दी से 16 वीं शताब्दी तक पाँच मुख्य वैष्णव सिद्धान्तों की स्थापना हुई जो निम्न प्रकार से है ।

1- रामानन्द का रामनन्दी सम्प्रदाय,

2- चैतन्य प्रभु का चैतन्य सम्प्रदाय,

3- वल्लभाचार्य का पुष्टि मार्ग,

4- हित हरिवंश का राधा वल्लभीय मार्ग ,

5- हरिदास जी का हरिदासी सम्प्रदाय ।

इन सम्प्रदायों का प्रभाव रीतियुगीन कवियों पर इन दार्शनिक सम्प्रदायों पर पड़ा । किन्तु इन सम्प्रदायों से सात्विक धार्मिक भूमिका के स्थान पर रीतियुगीन कवियों ने राम भक्ति और कृष्ण भक्ति भाव में शृंगारिक रंगों से चित्रित किया । लेकिन तब तक पूर्वकालीन या पूर्ववर्ती व तत्कालीन धार्मिक व दार्शनिक एवं रचनात्मक विचारधाराओं की भी छाप इस युग की रचना पर परिलक्षित होता है ।

किन्तु इन काव्य ग्रन्थों में गहरी आस्था अनुभूति व आत्मज्ञान का दिग्दर्शन नहीं होता । क्योंकि ये रचना परात्पर स्वभाव था क्योंकि भगवान में श्रद्धा न थी उनके भगवान तो उनके आश्रयदाता शासक थे जो स्वार्थ सिद्धि से पूर्ण होकर राजाओं की कृपा दृष्टि के याचक थे ।

प्राचीन भक्ति से पूर्ण ग्रन्थों के व्यापक प्रभाव के कारण "भज गोविन्दा भज गोपिन्दा" की तो करता है पर आत्म विचार नहीं। इस का निराध भी पुकार कहा जा सकता है, भक्ति की पुकार नहीं।।

क्योंकि प्राचीन साहित्यिक राधा कृष्ण की भावना को शृंगार में राधा-कृष्ण को आलम्बन मानकर काव्य रचना की है। अतः राधा-कृष्ण सीता-राम का आध्यात्मिक स्वरूप बदल कर रीतिकालीन युग में लोक के सामान्य नायक नायिका मात्र बन कर रह गयीं।

इस प्रकार सामाजिक व धार्मिक, सांस्कृतिक परिवेश से रीतियुगीन में जो काव्य रचा गया उसका रचयिता अपने समय की ऐसी भूमिका निभा रहा है जिसमें एक साथ चारण, लक्षणविद आचार्य, राजगुरु व कामवेत्ता भक्त भी थे। इसके अतिरिक्त अर्थ की दृष्टि से आश्रयदाता की प्रसन्नता उसके समस्त पद-मान व भविष्य की थैली थी। इसीलिये चिन्तन की अपेक्षा उनकी दृष्टि कला की साधना में लगी रही। उनकी कला साधना भी परम्पराबद्ध थी। कवि की चिन्ता का विषय कला कुशलता, सौन्दर्य प्रियता, सहृदयता, श्रेष्ठ चमत्कारपूर्ण उक्तियाँ, पद लालित्य प्रभाव उत्पन्न करने वाली जगमग आदि ऐन्द्रिक पिपासा पूर्ण रूप से रीतियुगीन काव्य में व्याप्त है। केशव की धारणा :-

जदपि सुजाति, सुलच्छनी, सुबरन, सरस, सुवृत्त।
भूषन बिन न बिराजई, कविता बनिता मित्त।।

यहाँ भी केशव की सांस्कृतिक दृष्टि में अलंकारी कामरूप है। सामाजिक जीवन में भी शोभाजनक साधनों का महत्व इस सीमा तक बढ़ा

हुआ था कि कृपालीनता व कुलच्छनता उनके समक्ष बौनी थी ।

इस प्रकार रीतिकालीन कवियों की दृष्टि में कविता सर्वांग सुन्दरी, भावमयी, नवीना विविध अलंकारों से अलंकृत कामिनी के समान थी जिसकी रमणीयता व कमनीयता रसिक के मन को बेधने की अतिशय क्षमता रखती थी । इस प्रकार जीवन के प्रति भोगवादी दृष्टिकोण रखने के कारण साहित्य का सांस्कृतिक रूप भी श्रृंगारिक और विलासिताप्रिय हो गया जो संस्कृति को अवनत करने लगा ।

रीतियुग विभिन्न सम्प्रदायों का युग एवं धार्मिक विघातों का युग था । हिन्दी साहित्य के वृहत इतिहास में इस ओर संकेत किया गया है । "मंदिरों और मठों में देवदासियों का सौन्दर्य और उनके घुंघरुओं की झनकार, महन्तों के सेवा और मनोरंजन के लिये सर्वदा प्रस्तुत रहती थी । सूक्ष्म आध्यात्मिकता की विभूति का यह स्थूल रूप वास्तव में धर्म के इतिहास में एक अंधकार पूर्ण पृष्ठ है ।" ।1।

इतना ही नहीं इस युग में मध्व, निम्बार्क, चैतन्य तथा राधावल्लभ भी सम्प्रदायों की रूढ़ियाँ भी थीं । जिनमें राधा की महत्ता के कारण श्रृंगार भावना और भी मुखर थी । डा० नगेन्द्र के शब्दों में " मठ और मन्दिर देवदासियों और गुरुओं व चरणों की छम-छम से गूंज रहे थे ।" ।2।

रीतियुग की धार्मिक स्थिति को प्रभावित करने वाले सम्प्रदायों में निर्गुणोपासक सम्प्रदायों में प्रमुख रूप से चरणदासी सम्प्रदाय, शिवनारायणी

1- हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास, पृष्ठ 18 - डा० सावित्री सिन्हा

2- रीतिकाव्य की भूमिका - डा० नगेन्द्र ।1959ई०। पृष्ठ 16 ।

सम्प्रदाय, गरीबदासी सम्प्रदाय, रामसनेही सम्प्रदाय, धामी सम्प्रदाय एवं जगजीवनदास द्वारा पुनर्गठित सतनामी सम्प्रदाय आदि थे। इस युग के संतों में कुछ संत अपने ऊँचे चरित्र के हुए जिनमें जगजीवन, बुल्ला साहिब, चरनदास, सहजोबाई, दयाबाई आदि प्रमुख हैं। संत पंद दास इसी युग की संत धारा के एक जबरदस्त क्रान्तिकारी कवि हुए जिन्होंने तत्कालीन धार्मिक रूढ़ियों को तोड़ने तथा एक सांस्कृतिक क्रांति करने में कलम तथा तलवार दोनों की साधना की।

रीति युग के सूफी सन्तों में चिश्तिया, निजामिया, नक्शबंदिया, कादिरिया, सत्तारिया आदि प्रमुख हैं। इन सूफी सम्प्रदायों के कवियों ने प्रेमप्रधान काव्यों की रचना की तथा वेदान्त और मुस्लिम एकेश्वरवाद से प्रभावित होकर धर्म की आन्तरिक एकता पर बल दिया। अन्य धार्मिक सम्प्रदायों में शैव, गोरखपंथी, जैन, काली, दुर्गा तथा भवानी के उपासकों के भी सम्प्रदाय थे। इतना ही नहीं उत्तर रीतिकाल में (सं0 1850) के आसपास) दक्षिण और पूर्व में ईसाई धर्मान्त भी धीरे धीरे जनता में प्रचार आन्दोलन शुरू कर रहे थे तथा धार्मिक बुराइयों को दूर करने में ईसाई मिशन भी प्रभावी था।

रीतियुगीन धार्मिक परिस्थितियाँ जहाँ एक ओर [illegible] की और थी वहाँ विविध देवोपासना पर भी बल दी गई थी। समग्र रूप से देखा जाय तो इस युग का धार्मिक जीवन रूढ़ियों और अंधविश्वासों से ग्रस्त था। भैरव, भवानी और दुर्गा तथा रुद्र को खुश करने के लिये बकरे, भैंसे और मनुष्य तक की बलि चढ़ाना, जादू टोने में विश्वास रखना, सन्तानोत्पत्ति

के लिये समाधियों और मकबरों की पूजा, भूत प्रेतों में विश्वास आदि बाह्याडंबर प्रचलित थे ।

"मुई नारि घरिरो परि नासी, मूंड मुड़ाये सन्यासी ।" वाली उक्ति इस युग में पूरी सार्थक होती है । इस युग का धर्म पंडे, पुरोहितों और पुजारियों के हाथ में थी । धर्म का ह्रास और अधः पतन इस युग की एक मूल प्रवृत्ति सी बन गई थी । ऐसे धार्मिक विघटन के युग में किसी अभिनव तुलसी, सूर, कबीर की आवश्यकता थी और इसी आवश्यकता की पूर्ति हेतु महाकवि चन्द दास द्वारा इस युग में हुई । केशव ने इस तरह का कोई सांस्कृतिक उन्नयन का लक्ष्य तो सामने नहीं रखा । उन्होंने "रामचन्द्रिका" की रचना इसी धार्मिक परिवेश से प्रभावित होने के कारण की होगी । चंद दास का धार्मिक एवं सांस्कृतिक काव्य इस युग की गिरती हुई धार्मिक प्रवृत्तियों का निषेध ही एक आधारभूत सम्बल प्रदान करता है ।

रीतियुग की साहित्यिक प्रवृत्तियाँ:-

रीतियुग की साहित्यिक प्रवृत्तियों का वर्गीकरण आचार्य पं० रामचन्द्र शुक्ल जी ने इस प्रकार किया है ।

अ- रीति ग्रन्थकार कवि, जिन्हें रीतिकाल का प्रतिनिधि कहे जाते हैं ।

ब- रीतिकाल के अन्य कवि, जिन्होंने रीति ग्रन्थ न लिखकर दूसरे प्रकार की पुस्तकें लिखीं तथा दूसरे वर्ग को सात वर्गों में पुनः विभक्त किया गया ।1।

।1। पहला वर्ग : शृंगारी कवियों अथवा शृंगार रस के मुक्तक पद्य लिखने वालों का ।

।2। दूसरा वर्ग : प्रबन्ध काव्य या कथात्मक प्रबन्ध लिखने वालों का ।

।3। तीसरा वर्ग : वर्णनात्मक प्रबन्ध लिखने वालों का ।

।4। चौथा वर्ग : नीति के मुक्तक पद्य कहने वालों का ।

।5। पाँचवाँ वर्ग : ज्ञानोपदेशकों का जो ब्रह्मज्ञान और वैराग्य की बातें पद्य में कहते थे ।

।6। छठा वर्ग : भक्त कवियों का, जिन्होंने भक्ति और प्रेमपूर्ण विनय के पदों की रचना की है ।

।7। सातवाँ वर्ग : आश्रयदाताओं की प्रशंसा में वीर रस की फुटकल कविताएँ लिखने वालों का ।

डा० शुक्ल ने अपने इतिहास में रीतिकाल के काव्य को ग्यारह विभागों में विभक्त किया है । ।2।

।1। लक्षण ग्रन्थकार ।2। वीर काव्य ।3। कथा काव्य ।

---

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास - पं० रामचन्द्र शुक्ल पृ० 297 - 299
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डा० रामशंकर शुक्ल " रसाल " पृ० सं० 400 से 547

विशिष्ट पद रीति का प्रयोग करता है । इसी प्रकार आचार्य कुन्तक के वक्रोक्ति सम्प्रदाय से भी रीतिकालीन कवि अछूते नहीं हैं । आचार्य आनन्दवर्धन का ध्वनि सम्प्रदाय भी दरबारदार कवियों को प्रभावित करता रहा ।

डा० भगीरथ मिश्र ने हिन्दी रीति ग्रंथों का वर्गीकरण इस प्रकार किया है । -11

(1) अलंकार निरूपक ग्रंथ ।

(2) रस या नायिका भेद निरूपक ग्रंथ,

(3) शृंगार एवं हास्य से इतर रस ।

(4) छन्द निरूपण

(5) लक्षण ग्रंथ

इन्हीं रीति ग्रंथों के वर्गीकरण की दृष्टि में रख रीतियुगीन कवियों ने साहित्य सृजन किया । किसी साहित्य में जब कुछ काल से लक्ष्य रचना हो चुकती है तो लक्षण ग्रन्थों के निर्माण का युग आता है । लक्षण ग्रंथ अपनी स्वतंत्र सत्ता नहीं रखते वे साहित्य पर निर्भर रहते हैं । हिन्दी का संस्कृत साहित्य से इतना निकट का सम्बन्ध रहा है कि उसे स्वतंत्र रूप से विकसित होने का अवसर ही न मिला । हिन्दी के अधिकांश प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से संस्कृत साहित्य से परिचित रहते थे । अतः इनके साहित्य पर संस्कृत साहित्य का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही था । अतः हिन्दी में लक्षण ग्रंथों की रचना के लिये यह आवश्यक था कि पहले लक्ष्य रचना अधिक मात्रा में हो ले । भक्तिकाल से पहले ही रीति ग्रंथों का

स्थायी भी शृंगार के अन्तर्गत संचारी होकर आ सकते हैं । संयोग व वियोग दो पक्षों के होने के कारण इस रस का विस्तार भी कुछ-कुछ दोनों अनुभूतियों तक किया गया है । उसी परम्परा के अनुसार केशवदास जी ने शृंगार को रस राजत्व सिद्ध करना चाहा है । उन्होंने रौद्र, वीभत्स इत्यादि रसों को भी शृंगार रस के अन्तर्गत रखने का प्रयत्न किया है । जो असफल रहा । केशवदास ने कौतुक रति क्रीड़ा में भी रौद्र रस की कल्पना करने का उद्योग किया है । इसका प्रभाव "रसिक प्रिया" में होने के कारण उसे केवल शृंगार रस की पुस्तक कहा जाये तो अतिशयोक्ति न होगी ।

रीति परम्परा के अनुसार केशवदास के द्वारा जिन वार्णिक और मात्रिक छन्दों का प्रयोग किया गया है वे रसिक प्रिया में मात्रिक, दोहा, छप्पय, सवैया कविप्रिया में मात्रिक, दोहा, छप्पय, पद्मावती, रोला, सोरठा, चौपाई ।

राम चन्द्रिका में मात्रिक, दोहा, रोला, घत्ता, छप्पय, अरिल्ल, पादाकुलक, सोरठा, गंगा, गीतिका, छिल्ला, मधुभार, चौपई, आदि ।

वार्णिक में 58 वार्णिकों को प्रयोग किया गया है । मुख्य है - श्री, सार, दंडक, तोमरावली, कुमार ललिता, आदि ।

इससे सिद्ध होता है रीतियुगीन परम्परा के अनुसार छन्द प्रयोग के क्षेत्र में केशवदास जी अपनी मौलिकता लिये हुए है ।

" नवरस षोडश भक्ति रस अड़सठ भूजन मर्म " -1।
से स्पष्ट है कि चन्द दास जी ने अपने काव्य में नवरस और भक्ति के षोडश रसों को समाविष्ट करके सद् गुरु मताचार्य के अनुकूल काव्य सृजन किया है। रीतियुगीन परम्परानुसार चन्ददास का काव्य "रामविनोद" में अलंकारों की उत्कृष्ट योजना भी द्रष्टव्य है। इसमें शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनों पाये जाते हैं। यमक अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, श्लेष आदि स्थान स्थान पर काव्य में सौन्दर्य उत्पन्न करते हैं।

छन्दों के प्रयोग में रामविनोद में त्रोटक छन्द का अत्याधिक प्रयोग किया गया तथा कटुआ नाम के ऐसे छन्द का प्रयोग किया गया है जिसका पता पुरातत्व वेत्ताओं व कविराजों को भी नहीं है। गुजराती भाषा से उन्होंने "तारक" छन्द को लेकर रामविनोद में प्रयुक्त किया। अतः कह सकते हैं कि "चन्द के छन्द" को छन्द शास्त्र के पंडितों को खोजने वाले हैं।

इस प्रकार अपने गम्भीर सूक्ष्म ज्ञान रामविनोद में रस, अलंकार और छन्दों के द्वारा चन्ददास ने अपने काव्य रामविनोद में किया व रीतियुगीन परम्परा का प्रभाव है।

1- शृंगार रस - चन्द दास।

जब केशव डेरे उसे कहि के दो मे दिया कालिंद विनय गहि है ।
अभयधाम रह पानीराम रहे, कामद रहे विश्राम रहे ।
रचि रामचन्द्रिका रामहि मैं, दुरै केशव पु अति धारिहि मैं ।

किन्तु अन्तःसाक्ष्य से उक्त बात की पुष्टि नहीं होती क्योंकि केशव कथनानुसार रामचन्द्रिका की समाप्ति का काल सं 1658 कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष बुधवार को माना गया है ।

1। सोरह सौ अट्ठावन, कार्तिक सुद बुधवार ।
रामचन्द्र की चन्द्रिका तब कीन्हों अवतार ।

किन्तु विज्ञान गीता के अनुसार सिद्ध होता है कि "विज्ञान गीता" रचना के पूर्व केशव काशी गये थे और तुलसीदास से मिले थे ।

अतः सिद्ध है कि केशवदास तुलसीदास के समकालीन अकबर और जहांगीर काल के कवि हैं । यह काल मुगल काल व इतिहास के महत्व काल अपने वैभव व सुख सम्पन्नता का काल था ऐसे विलास और वैभव सम्पन्न राजनैतिक वातावरण में पलने वाले या रहने वाले कवि दरबारी विलासी, रसिकता पूर्ण वातावरण से कैसे बच सकते थे । उनके शासक, गणिकाओं और नायिकाओं के मधुर संगीत व काव्य संगीत की मधुर ध्वनि में खोये रहते थे । गणिकायें व नृत्यकी अपनी कला में पारंगत थीं उनकी संगीत व काव्यकला की बारीकियां जानने के लिये शासकों को विद्वान पंडितों का आश्रय लेना पड़ता था । उन पंडितों व विद्वानों में "केशव" का अंश

1- रामचन्द्रिका पूर्वार्द्ध, पृ0सं0 5 ।

स्थान था । ओरछा निवासी सम्मानित रसिक राजदरबारी कवि केशव निवासित थे । और इनकी पत्नी जीवन के अन्तिम काल तक इनकी प्रेमभाजन रहीं । केशव की "विज्ञान गीता" से ज्ञात होता है कि "महाराजावीरसिंह" ने उनसे मनोभिलाषित मांगने को कहा तो "केशवदास" ने निवेदन किया कि "मेरी सन्तान को अपने पूर्वजों द्वारा दी गई वृत्ति प्रदान करने की कृपा करें ". इस प्रार्थना को वीरसिंह ने स्वीकार कर केशव को गंगा तट जाने की आज्ञा दे दी । -1- इससे सिद्ध होता है केशव को सन्तान सुख प्राप्त था । "देऊ बालनि आसु" में बालनि शब्द से पुत्रों का अभिप्राय है । अर्थात उनके पास कोई कन्या नहीं थी । और "केशव पुत्र वधू" के नाम से बुन्देलखण्ड में छन्द भी प्रचलित है, जिससे पुत्र व पुत्र वधू का होना सिद्ध होता है । तथा यह भी सिद्ध होता है कि अवश्य कोई कीर्तिमान व्यक्ति थे । कई विद्वानों ने तो बिहारी को केशवदास का पुत्र कहा है व गौरी-शंकर द्विवेदी ने बुन्देलवैभव नामक ग्रंथ में स्पष्ट किया है कि बिहारी केशवदास के पुत्र थे और काशीनाथ मिश्र के पौत्र थे । -2- स्व० जगन्नाथदास रत्नाकर जी ने भी यह बात सिद्ध करने का प्रयत्न किया है ।

स्व० राधा कृष्ण दास जी ने सं० 1952 वि० सन् 1895 के लेख द्वारा भी यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया कि केशव और बिहारी का पिता पुत्र का सम्बन्ध था ।

1- सुत दये सुतवानि की देऊ बालनि आसु ।
कीन्हीं आपनी आपने, गंगा तट देउ बासु ।। - विज्ञान गीता, छ० 56
पृष्ठ 124, 126

2- बुन्देलखण्ड वैभव - प्रथम भाग पृष्ठ 152 ।

कि चंद की वह प्रेरणा स्रोत थी और "चन्द" को उनके प्रति असीम स्नेह था ।

ऐसा स्नेहशील परिवार पंजाब के युद्धों से विरत होकर, शान्ति की खोज में भ्रमण करता कस्बा पहुँचा और इसी को अपना साधना क्षेत्र बनाया ।

केशवदास और चन्ददास के जीवन परिचय से सिद्ध होता है कि दोनों विभिन्न, भाषा, जाति, कुल, स्थान, समय, के थे । विभिन्न राजाओं के आश्रय में थे । दोनों की विभिन्न परिस्थितियाँ थीं । केशव जहाँगीर कालीन सुख समृद्धि युग के कारण भोग विलासी शासक के आश्रय के कारण "शृंगारिक" और विलासी कवि सिद्ध हुए । दोनों कवि अपने युग की माँग को पूराकर रहे थे । केशव रसिक वातावरण के रस प्रधान कवि हुए तो चन्द युग के विषमता और जाति और राष्ट्रीय चेतना जगानेहेतु वीररस प्रधान कवि प्रसिद्ध हुए ।

दोनों के परिवार सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे थे । दोनों भक्ति के भाव से भी पूर्ण थे । दोनों प्रकाण्ड पंडित थे । दोनों को अपने आश्रयदाताओं से सम्मान मिला । दोनों अपने जीवन के उत्तरार्ध काल में अपने निवास से हट कर गंगा के किनारे वाले क्षेत्र में शान्ति, सात्विक और आध्यात्मवाद से भर कर आ गये । केशव ओरछा छोड़कर बनारस गंगा तट पर जा पहुँचे तो चन्द लाहौर छोड़ कस्बा फतेहपुर आ गये । दोनों का जीवन साहित्य सेवा में बीता । दोनों साहित्य प्रेमी होकर भी आश्रय दाताओं के साथ युद्धों में जाते रहे ।

चन्ददास और केशव की जीवन दृष्टि :-

प्रत्येक व्यक्ति अपने परिवार, जाति, धर्म, सभ्यता, काल, वातावरण, के प्रभाव से प्रभावित होता है। उस प्रभाव या बन्ध, वाणी के अनुसार अपने भावों और विचारों की परिपक्वता को प्राप्त करता है। अपनी प्रवृत्तियों, आदर्शों, मनोवृत्ति और रुचियों के अनुसार दूसरे मनुष्य के प्रति उसकी विचार धारा बनती है।

इसी प्रवृत्ति के अनुसार समान प्रवृत्ति वाले मानवों में मित्रता और असमान प्रवृत्तियाँ और आदर्शों वाले मनुष्य में शत्रुता या असमानता के भाव दृष्टिगोचर होते है। कवि भी मनुष्य है। वह बाल्यावस्था से लेकर मृत्यु तक एक समाज में रहता है। उसकी दैनिक आवश्यकता, एक दूसरे के सहयोग से पूरी होती है। शिक्षा, धर्म, मानवीय मनोवृत्ति, आकांक्षाओं की पूर्ति भी समाज जाति से पूरा होती है। बाल्यावस्था में उसका संग अपने अनुकूल स्वभाव वाले बालकों से होताहै। विद्यार्थी जीवन में शिक्षक माता पिता और सहपाठियों की विचारधारा, हाव भाव, गुण, अनुकरणीय बातों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मानस सागर में डूबता रहता है। और अशान्तता की गहराई में पैठता जाता है। जैसे सागर अपने में मिलने वाली सरिता को तात्विक सलिल के साथ साथ पत्थर कंकर और बालू को ग्रहण कर लेता है। वैसे ही इस अध्ययन स्थिति में छात्रों छात्राओं के मानस सागर में शुद्ध पाठ्य सामग्री सलिल के साथ साथ जाति, धर्म, शिक्षक साथियों के वातावरण में गुण, कंकड आदि जमा होते हैं। बालक अनिश्चित

अवस्था की किशोरी में होता है । यहीं उसके विकास स्थल में जो मिल पाते उन्हीं संगियों से उसके चरित्र और आदतों का निर्माण होता है । उसके पश्चात अन्तः स्थल में छिपे देवांकुर शिक्षा के साथ विकसित होते हैं । ये मानस सागर के ऐसे मूल्यवान मोती होते हैं जिन्हें पाठक स्वयं खोजकर बाहर निकालता है । तो उन विद्यार्थियों में से कोई चिकित्सक कोई शिक्षक, वकील कलाकार, चित्रकार, कवि, लेखक, गायक, नृत्यक, नेता, साधु, असाधु आदि के रूप में समाज के सामने प्रकाश में स्तम्भ के रूप में कोई भी रूपकार बन उपस्थित होते हैं । ऐसे प्रकाश स्तम्भ में कोई भी रचनाकार अपना रचना का ही उचित और पूर्ण कर सकता है । जब वह अपने मानस की मंजुषता को विशेष अवलोकन अन्तर्दर्शन के द्वारा कर ले ।

कलाकार अपने मानस नेत्रों से अपने हृदय में छिपे मोतियों को गहरे पैठ कर देखता है । और तब अपनी लेखनी, तूलिका, छैनी हथौड़ा, नेता अपनी भावना बुद्धि, साधु अपनी साधना से मंजुषता को उभार कर उसे स्थल पर पहुंचाने के लिये अपना अपनी अनुभूति की गहन अभिव्यक्ति से ही कर सकता है ।

जब तक कृति शुद्ध, सुन्दर, सात्विक, न होगी, व्यक्ति विशेष का ध्यान अपनी ओर आकर्षित न कर सकेगी । मूर्तिकार सुन्दर मूर्ति का निर्माण करेगा तो वह "शिव" बन जनता की पूजा का पात्र होगी । चित्रकार के चित्रकारी हृदय के रंगों से रंगी, रंगोलियां बिखेर देगी । नृत्यक की नृत्य कला देवताओं को धरा पर ला देगी । मुनियों के ध्यान डिगा देगी तो मनुष्य

खोजने वाले हुवे । और युद्ध की विरक्ति पश्चात मानव में मानस में तुलसी के "राम" को खोजने के साधक बन गये । अपनी साधना से "रामविनोद" काव्य रचना कर मनुष्य को मनुष्यता की ओर अत्याचारी के नाश के लिये प्रेरणा देने लगे । व्यक्ति पूजा के स्थान पर राष्ट्रपूजा का सन्देश दे मानव कल्याण करने की जो स्निग्ध धारा बहायी उसी से शिवाजी, गुरु गोविन्द सिंह, उनके सहयोगी, देश की साधारण जनता से वीरता का पाठ पढ़ा कर मनुष्यों में से कायरता निकालने का जो प्रयत्न किया वह उच्च स्तर का दृष्टिकोण "चन्द" प्रस्तुत करते हैं । "रामविनोद" के राम इक्ष्वाकु वंश के राम नहीं वह भारत रक्षा वाले "गोविन्द" बन साधारण की नैया पार लगाने वाले गुरु हो गये । आज से 1-1/2 शताब्दी पहले ही यह ग्रन्थ जनता के सामने आता तो भारतीय जनता गुलामी की जंजीरों में जकड़ी न दिखती । हरेक मनुष्य गोविन्द बना । गोकुल की रक्षा करता यही साहित्य से सदैव मनुष्यता को जागृत करता । उसे सभी कविताओं में नहीं होता ।

कवि केशव और चन्ददास की विभिन्न दृष्टिकोण का मुख्य कारण था राजनीतिक विभिन्नताओं में विद्वानों अने काव्य जीवन के लक्षण दिये एक दूसरे से सर्वथा भिन्न होता है । काव्य जीवन की सर्वसम्मत व्याख्या न हुई है । न हो सकती है । मुख्य कारण यह है अपनी व्यक्तिगत रुचि से प्रभावित होकर लोगों ने काव्य जीवन का लक्षण किये हैं । सामाजिक परिस्थितियां एक देश व काल की एक सी नहीं रही । अतः काव्य आदेश भी सर्वसम्मति से एक नहीं रहा ।

जब जीवन में आनन्द के अवसर अधिक आते रहते हैं तथा सामाजिक परिस्थितियां अनुकूल होती हैं । कि अधिक लोगों को सुख व्यवस्था दी जा सके तो स्वाभाविकता ऐसे लोगों में रहने वाले कविगण के काव्य में उस आनन्द का प्रतिबिम्ब अवश्य प्राप्त होगा । और आचार्य गण भी उसी काव्य की परिभाषा "काव्य आनन्द है", "काव्य सौन्दर्य है", इत्यादि से कुछ मिलती जुलती ही करेंगे ।

और केशवदास ऐसी सामाजिक और राजनीतिक परिस्थिति में रहे कि उन्हें सम्मान, पूजा, भेंट मिला, चतुर्दिक सुख पूर्ण स्थितियां ही दृष्टिगोचर हुई । इन सबके प्रभाव से कवि केशवदास का जीवन के प्रति दृष्टिकोण सुख भोगी रहा, समय और सुख के कारण ज्ञान अर्जित कर उस ज्ञान को प्रदर्शित कर, आनन्दानुभव करना, उनके जीवन व काव्य का लक्ष्य था । राजा इन्द्रजीत (ओरछा) के दरबार, कवियों गायक, गायिकाओं, नर्तिकाओं की सी भीड़ लगी रहती थी । जहाँ उनके लौकिक सुख सम्भोग की संचित सामग्री थी । यह स्वभाव वास्तविक रसात्मक काव्य में सहृदयता से मग्न होने वाला न रहा होगा क्योंकि काव्यानन्द और जीवन के वास्तविक आनन्द के उपभोग में बहुत अन्तर है । काव्यानन्द हृदय की सहानुभूति के परिधि विस्तार से प्राप्त होता है । काव्य में वर्णित भिन्न भिन्न भावों में मग्न होने में जो आनन्द प्राप्त होता है वह वास्तविक उपभोग से प्राप्त होने वाले आनन्द से भिन्न है क्योंकि वास्तविक आनन्द तो उन पात्रों को मिला होगा जिनका वर्णन हम काव्य में पाते हैं । पाठक

"कृति" "रामविनोद" एक अनुपम आदर्श जीवन का दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो तुलसीदास कृत रामचरितमानस के समकक्ष हो । लोक कल्याण कारी मार्ग प्रस्तुत करने में सहयोग प्रदान करेंगे । यही उनका जीवन के प्रति दृष्टिकोण है जो केशव को "रामचन्द्रिका" द्वारा प्रस्तुत नहीं किया जा सकता ।

<u>चन्द्र दास एवं केशव के आदर्शों का तुलनात्मक अध्ययन :-</u>

केशव के आदर्श उनके काव्यों को अध्ययन से प्रतीत होता है । कि उनके <u>ज्ञान गरिमा से पूर्ण</u> आदर्श थे । वे कवि को आचार्यत्व पद पर आसीन करने के आदर्श को लेकर चले ।

उनके काव्य उनका देश जाति, जन्म स्थान अपने शासक के प्रति प्रेम प्रकट करते हैं । पर स्वाभिमानी थे । केशव कवि शिरमौर बन कर अपने शिष्यों को मानी किया है । अपने सनाढ्य होने के भाव प्रबल थे । फिर भी किसी तुच्छ से तुच्छ व्यक्ति से मिलने में संकोच नहीं करते थे । जन की अपेक्षा सम्मान व आदर पाते थे । तथा स्पष्ट वादी व निर्भीक थे । इस निर्भीकता व स्पष्टवादिता के प्रमाण रामचन्द्रिका में मिलते हैं । जब स्वयं सीता का राम द्वारा त्याग <u>उन्होंने सदैव खटका</u> और जब लव कुश युद्ध अवसर पर वे भरत के मुख से कहला देते हैं कि आपने सीता को बिना पाप की सजा दी, निर्दोषिता के दंड देने का फल आपको मिला । बुद्धिमान व गुणी होने के साथ रसिक व भावुक कवि हृदय थे । अनेकों ग्रन्थ से परिपूर्ण होने पर केशव का मुख्य आदर्श स्पष्टता सम्मुख नहीं आता, केशव की कृतियाँ महाकाव्य चरित्र उनकी प्रवृत्तियाँ सामंत आदि का विस्तृत अध्ययन करने पर

यही निष्कर्ष निकलता है कि भक्ति भाव का आदर्श मात्र पातुष्ट पुत्र से राम रटने के समान है । वास्तविक आदर्श काव्य जगत साहित्य जगत रस, छन्द, अलंकार शास्त्रों का निरूपण कर कवि शिक्षक कर्म को पूरा करना था । न रामचन्द्रिका द्वारा भी भक्ति आदर्श का निर्वाह न कर सके, न सीता शक्ति व प्रेरक के रूप में,आदर्श चरित्र के रूप में प्रस्तुत कर सके । अतः स्वर्ग का आदर्श अभिलाषाय नहीं तो उनके राम का शक्तिशाली होना कैसे सम्भव हो । साहित्य में काव्य रचना एवं काव्य शास्त्रों द्वारा अपने पाण्डित्य प्रदर्शन व विशिष्टतापूर्ण साहित्य देकर साहित्य या भाषा में नवीन गति देना था । छन्द योजना, रस, अलंकार योजना को नया विकास देना और हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान बनाना, राजाओं के प्रसन्न करना, उनसे सम्बन्धित ग्रंथों की रचना कर, प्रशंसा को प्राप्त करने की तीव्र इच्छा की ही योजना उनके काव्य साहित्य में दृष्टिगोचर होती है । दार्शनिक विवेचन में "ब्रह्म" के परम स्वरूप को दिखाकर फिर राजाओं के साथ उनके चरित्र को एकाकार कर उक्त आदर्श को खो दिया । ब्रह्म, जगत, माया मोह आदि को जानते हुए भी संसार माया मोह में लिप्त रहना "राम-नाम" की मुक्ति आधार मानकर पालन नहीं कर सके । अतः वे विशिष्ट आदर्शों को लेकर नहीं चले । मात्र कवि कर्म, कवि शिक्षा कर्म को पूरा करना ही उनका मुख्य आदर्श था ।

और चन्द्रदास के सभी महाकाव्य व ग्रन्थ प्राचीन व वैदिक कथाओं की आधार भूमि पर आधारित होकर ऐतिहासिक तथ्यों व कथाओं के साथ एकाकार होकर भक्ति में सगुण निर्गुण, रामकृष्ण ज्ञानाश्रयी प्रेमाश्रित

बौद्ध, जैन योग व साधन आदि सभी को समन्वित कर भक्ति की एक नवीन रसात्मक धारा बहायी है । जिसमें शुद्ध और परम् ब्रह्म रूप की योग साधना प्राणायाम द्वारा प्राप्त किया जा सकता है । भाव भूमि से ऊपर आदर्श के उच्च आकाश पर आसीन है । इन ग्रंथों में ये कवि ने आध्यात्मिक आदर्श के साथ देशहित व राष्ट्रहित चेतना की भावना से युक्त करके देश, समाज, धर्म रक्षा प्रेरणा की शक्ति दे राष्ट्रीय व धार्मिक व सात्विक आदर्शों को प्रयुक्त करके साहित्य की एक नवीन रचना पद्धति, योग साधना, दार्शनिक व ऐतिहासिक समन्वय का अच्छा आदर्श प्रस्तुत किया है । जो कवि के उच्च आदर्शों का प्रतीक है ।

"दोनों महान कवि राम के महान आदर्शों को लेकर चले किन्तु दोनों के आदर्श भिन्न है । "

1- दोनों कवि के "राम" तुलसीकृत रामायण के पौराणिक कथा के आदर्श राम महात्मा के रूप में प्रस्तुत नहीं किये गये ।

चन्द के राम सांकेतिक रूप में गुरु गोविन्द के रूप में प्रस्तुत हैं जो कि रामविनोद में अवतार कथा से आप लिये से दस अवतारों के अवतार दशम गुरु गोविन्द सिंह का अवतरण सांकेतिक है । इस प्रकार राम रूप में गोविन्द सिंह 18 शताब्दी के राम के प्रति भी दोहरे आदर्श को प्रकट करते हैं । राम विरोधी रावण लंका शासक न हो, दिल्ली शासक औरंगजेब है । जो भारतीय सभ्यता संस्कृति, वास्तुकला, जाति, धर्म का विनाशक है । जिसका संहार शिव और गोविन्द सिंह द्वारा होना प्रकट होता है । इस प्रकार चन्द के राम और उनके सहयोगी पात्र व नायक राम के समकक्ष और

और परिवेश को लिये हुए उन पात्रों का रामायण के राम के रूप में समायोजन करके नायक निर्धारण में एक नवीन कार्य किया है । उन ऐतिहासिक पात्रों को साधारण व्यक्ति से उठाकर विशेष या महामानव मानकर विशेष चेतना से सम्पन्न करके मनुष्य को व्यक्ति पूजा से बचाकर राष्ट्रीय चेतनाकी उज्ज्वल ज्योति को प्रज्वलित कर युग के बलिदानों को नायक राम के सांकेतिक रूप में चित्रित किया तथा राम कथा के विपरीत "राम व उनके सहयोगी पात्र चरित्र को अठारवीं शताब्दी के ऐतिहासिक वीरों के साथ अभेद रूप में प्रस्तुत कर एक नवीन आदर्श प्रस्तुत किया ।

दूसरी ओर केशव की रामचन्द्रिका की कथावस्तु का आधार राम कथा है । उनके राम तुलसी के राम आदर्श कवि के आधार को लेकर चलीं किन्तु वहाँ राम का आदर्श अपने स्तर की आध्यात्मिक यौगीय शक्ति से अभिभूत नहीं है । क्योंकि रामचन्द्रिका के नायक हैं आदर्श पात्र । अनन्त शक्ति के साथ, धीरता, गम्भीरता, और सुशीलता, योग्यता, सौजन्यता, की समता है । बाल्मीकि और तुलसी ने यथा स्थान [illegible] इन गुणों का दिग्दर्शन अपने काव्य में स्पष्ट रूप से किया है । किन्तु केशव की रामचन्द्रिका में राम के रामत्व की, रक्षा नहीं हो पायी । उनके राम तो लक्ष्मण की भाँति ही उग्र हैं ।

ग- चन्द्रदास व केशव के दार्शनिक चिन्तन का रहस्योद्घाटन:-

केशव के काव्यों में वेद, बौद्ध, योग मिमांसा का प्रभाव उनकी गहन अध्ययन शील प्रवृत्ति के द्वारा परिलक्षित होता है । वैदिक ब्रह्मवाद से प्रभावित होकर देह में ब्रह्म की कल्पना न कर, लौकिक दृष्टि अनुसार

मिटा दिया है । यौगिक क्रियाओं के साधनात्मक क्रियाओं द्वारा सिद्ध कर दिया है कि मानव ही विराट ब्रह्म स्वरूप है । शंकराचार्य ने यही कहा "अहं ब्रह्म" उस दर्शन की सम्पूर्ण झाँकी राम काव्य "रामविनोद" में झलकती है ।"देह में सदेह ब्रह्म की समता न पावें" कहा है - वेद ब्रह्म प्राप्ति के लिये रीति अनुसार आपके काव्य रहस्योद्घाटन मान्यतोचित तथा न्यायोचित गीतानुसार कर्म की झाँकियाँ भी दिखाता है ।

इस प्रकार भारतीय दर्शन के विभिन्नताओं में, राजनीतिक विशेषताओं व सामाजिक अपेक्षाओं को अपने दर्शन से एक कर अभिन्नता का बोध करा"मानव देह के विराट स्वरूप, शक्ति, ज्ञान, भौतिकता की प्राप्ति आत्मा साधना, योग साधना, यौगिक क्रियाओं द्वारा है ।, का दिग्दर्शन कराकर मानव को भौतिकता व संसार की ओर से आध्यात्मिकता की ओर जाने के उस सूक्ष्म पथ का रहस्य दिखाया है ।

जीव जगत, माया आत्मा, परमात्मा से सम्बद्ध दर्शनों के समन्वय के साथ आत्म साक्षात्कार की सूक्ष्म तार्किक पद्धति का रहस्योद्घाटन करना ही आपके काव्य का लक्ष्य है ।

इस प्रकार आप प्राचीन वेदान्तिक सिद्धान्तों का रहस्यात्मक स्वरूप रखते हैं पर उन रहस्यों को परम्परा के अनुसार प्राप्त करके "परम ब्रह्म" को पाने का साधन साधना भक्ति पूजा कहा गया है जो सर्वविदित है । माया जगत अनिवार्य है । ब्रह्म जग से परे वस्तु है जो उपनिषद के

से प्राप्त है । उसमें उन्हें " सुकुल " अर्थात मधुर भाषा बतायी गया है जिसका प्रमाण " शिवकाव्यप्रकाशावली" नामक ग्रंथ से भी प्राप्त होती है ।

> मिष्ठ गिरा गुन छाप ग्रं प्रकासी ।
> निंदारहित, शांत अविनासी ।।

<u>न्यायप्रियता:-</u> "कहि कबीर सुनि चन्द नाम गुरु चंद न्याय धरि" से सिद्ध होता है कि वे न्यायप्रिय थे । "सत्य रूप सत्य अवतारे" ।।1। तथा शिव सिंह सारंगी की कुछ पंक्तियों से सत्यवादी होने के प्रमाण मिलते हैं जैसे "रहे सत्यधारी सदा सत्यवादी" । इससे उनके सत्यवादी होने का पता चलता है । चन्द की न्यायप्रियता का प्रमाण इससे से मिलता है । "कहि कबीर सुनि चंद न्याय धरि" अर्थात वे न्यायप्रिय थे । इसी न्यायशील प्रवृत्ति के कारण औरंगजेब से मुकाबला कर के और अत्याचार के विरोध में शस्त्र ग्रहण किया और जनआन्दोलन के लिये जनता को प्रेरणा दी । क्रांति का नाद बजाया । वे शस्त्र और शास्त्रों में पारंगत थे । इसलिये शिवाजी छत्रसाल, गुरु रामदास, प्राणनाथ आदि वीरों की कोटि में गिने जाने लगे ।

अपनी प्रतिभा से महाकाव्यों व ग्रन्थों की रचना की जिसमें "रामविनोद" कृष्णविनोद, भवानीविहार, शृंगार सागर, शिवसिंहसारंगी, राममाला, चन्ददास पदावली, साखी, आदि से साहित्य भंडार भरा और कबीर, सूर, तुलसी आदि की परम्परा में अपना स्थानपा लिया । आपने

1- सत्यं रूप सत्य अवतार "- रासो, पृष्ठ 61, छं० सं० 144 ।

आपने वेद, वेदांग, पुराण, धर्म शास्त्र, नीति शास्त्र, का गहन अध्ययन किया था । यौगिक क्रिया द्वारा सिद्ध किया कि "देह ब्रह्म" अर्थात देह में ब्रह्म को प्राप्त करने की शक्ति आपमें थी । गुरुकी परम्परा से भिन्न गुरु भक्ति को प्रतिष्ठित किया । प्राण को गुरु माना । प्राणाः वै परमात्मा" । कहा है । और उसका ज्ञान प्राप्त किया ।

आप वेध कला से भी परिचित थे । शलाका, सूचिका या किसी अन्य पदार्थ द्वारा सुपारि आदि स्वल्प पदार्थों को वेधने का नाम वेधकला है । किन्तु बिना गुरु के इस कला में शिक्षा प्राप्त नहीं हो सकती ।

इस प्रकार विद्या, आत्मा की स्वस्थ शीलता की साधना चन्द ने की थी । यही उनकी साधना की आधारभूमि थी ।

चन्द महान ज्योतिष थे । "रासविनोद" में अनेक स्थानों पर ग्रहों और नक्षत्रों का वर्णन है । जिससे स्पष्ट होता है कि चन्द ज्योतिष थे । बृहदारण्यकोपनिषद में लिखी मधु विद्या का भी चन्द को ज्ञान था । शिरच्छेद तथा दूसरे का सिर लगा देना अर्थात संधानीकरण की विद्या का उन्हें ज्ञान था ।

शल्य चिकित्सा तथा विज्ञान विद्या के भी वे पूर्ण ज्ञानी थे ।

"रासविनोद" की फलश्रुति के "मधु रोग आरोग प्रयोग" से सिद्ध होता है कि उन्होंने मानव को निरोग करने की विद्या आती थी । इस प्रकार औषधि, भेषज, लेपन आदि क्रियाओं का सूक्ष्म उल्लेख रासविनोद में है जो उनके चिकित्सक होने का बोध कराती है ।

वे इतिहास वेत्ता भी थे । उन्होंने अनेकों दुर्लभ शिलालेखों, हस्तलेखों का अध्ययन किया था । इसी के आधार पर फ्रांसिसी विद्वान "गार्सिंद तासी" ने भी चन्द को महान इतिहास वेत्ता कहा है । उनके ग्रंथों में इतिहास बिखरा पड़ा है ।

इस प्रकार कलाओं और ज्ञान से परिपूर्ण जीवन अपनी कीर्ति को ऊँचा किए हुये आज भी उनके व्यक्तित्व का प्रकाश विकीर्ण कर रहा है । वे स्वयं लिखते हैं - कीर्तिहीन जीवन की अपेक्षा मरण ग्रहण करना अधिक श्रेयस्कर है ।

अपनी योग्यताओं, प्रतिभा, ज्ञान, व्यक्तित्व मान्यताओं से उनका व्यक्तित्व निखर आया । वे साहित्य, इतिहास, चिकित्सा, वेद कला, शस्त्र कला, ज्योतिष विद्या सभी कलाओं में पारंगत थे । जिसने उनकी कीर्ति को चतुर्दिक फैला दिया ।

केशव:-

कवि केशव का व्यक्तित्व भी अपने स्थान पर अपने समकालीन साहित्यकारों से ऊँचा और विकसित था । ओरछा से घनिष्ठ सम्बन्ध उनकी जन्म भूमि प्रेम का प्रतीक है । चन्द की भाँति केशव भी विनीत भाव व मधुर वाणी वाले थे । विदेशी और भिखारियों से भी मधुर वाणी से बोलते थे ।

प्रतिष्ठित व्यक्ति के समान उन्हे धन के स्थान पर सम्मान व आदर को अधिक मूल्यवान मानते थे ।

चन्द के समान केशव भी निर्भीक पुरुष थे । आत्मक सौम्य युद्ध और प्राणा में सबका मोह त्याग कर देते थे । चन्द अपार यौगिक क्रिया से

"सदैव ब्रह्म" की कल्पना करते है। तो केशव भक्ति से ब्रह्म प्राप्ति की मान उपासना करते थे। चन्द की भाँति वे भी अनेकों विषयों के ज्ञाता थे। जैसे भौगोलिक ज्ञान ज्योतिष ज्ञान, वैदक ज्ञान, वनस्पति विज्ञान, संगीत शास्त्र का ज्ञान, अश्व शास्त्र का ज्ञान, पौराणिक ज्ञान, राजनीति सम्बन्धी ज्ञान, धार्मिक शास्त्र तथा दर्शन शास्त्र सम्बन्धी ज्ञान, अश्व परीक्षा ज्ञान।

इससे सिद्ध होता है कि केशव का ज्ञान चन्द के ज्ञान विस्तार से कम न था। वे प्रकाण्ड पंडित थे। अगर राज दरबार से दूर रहकर वह भी स्वान्तः सुखाय ग्रंथ की रचना करते तो उनके काव्य साहित्य की अनुपम निधि होती। वे चन्द व तुलसी, सूर की साहित्यिक परम्परा से भी ऊँचे उठ जाते पर ज्ञान में ज्ञान शिखा की प्रदीप्ति को कम कर दिये। उनका मानस दीपक न बन सका। मस्तिष्क तार्किक ज्ञान विशेषता विशेषता रहा जो निर्जीव व नीरस रहता ही है। मर्म को न छू सका। और उनका व्यक्तित्व चन्द के व्यक्तित्व से समक्ष होकर भी उस व्यक्तित्व विकास गरिमा को न प्राप्त कर सका। केशव ने भी चन्द की भाँति महाकाव्यों की रचना कर साहित्य का भंडार पूर्ण किया। उनके द्वारा रचित ग्रंथ निम्न प्रकार से है।

1- कवि प्रिया
2- विज्ञान गीता
3- रसिक प्रिया
4- वीरसिंह देव चरित
5- जहांगीरजस चन्द्रिका
6- रतन बावनी
7- नख शिख
8- रामालंकृत मंजरी

9- प्रद्युम्न की कथा

10- हनुमान जन्म लीला व बाललीला ।

11- आनन्द लहरी ।

12- रस मालिका ।

13- कृष्ण लीला ।

14- वैराग्य की अनुभूति ।

15- ये अप्रामाणिक ग्रंथ हैं ।

इस प्रकार उनके ग्रंथ वेद के ग्रंथों की संख्या से अधिक और अप्रामाणिक हैं । पर वैराग्य अपना कलात्मकत्व प्रदर्शन हेतु मानव की सहज अनुभूति का ध्यान न रख सके । और यहाँ उनके द्वारा नीरसता पैदा करने के कारण उनके ग्रंथ उनके व्यक्तित्व विकास में भी बाधक हैं ।

वस्तु को अपने काव्य कौशल दिखाने या समयाभाव होने के कारण मुख्य विषय वस्तु को इतना संक्षिप्त कर दिया कि वह मुख्य प्राय है सा हो गया । यह विषयवस्तु का संक्षिप्तीकरण का भाव बालकांड अरण्यकांड तक चला । तथा किष्किंधा काण्ड में बाली सुग्रीव युद्ध बालि वर्णन आधे छन्द में वह सब कर समाप्त कर दिया ।

सुन्दर काण्ड में भी सुरसा तथा सिंहिका का मिलना उनके द्वारा हनुमान जी का भक्षित किया जाना तथा हनुमान के द्वारा पेट फाड़कर बाहर निकल आना सब एक ही छन्द में वर्णन कर दिया गया है । लंका काण्ड में विषय कथा, अन्य लेकिन वर्णन विस्तृत रूप से किया गया है ।

इस प्रकार इन विशेष रुचि व अल्पज्ञ विषय वस्तु वाले स्थल यत्र तत्र दिखायी पड़ते हैं । इनके साथ मानव दुखों का विशद वर्णन किया जो विषय वस्तु के साथ मुख्य विषय से लगने लगते हैं । और मुख्य विषय वस्तु छिप सी जाती है । तत्पश्चात आख्यान का भी विषय वस्तु से कोई सम्बन्ध नहीं है किन्तु इसे यहां जोड़ दिया गया । इसे आख्यान का उद्देश्य राम के द्वारा से तत्कालीन राजाओं को भोग विलास छोड़कर राज काज में लगने की चेतावनी देना चाहते हैं । रामचन्द्रिका की विषय-वस्तु रामकथा प्राचीन परम्परा पर आधारित है । किन्तु अपनी प्राचीन का गौरव "रामचन्द्रिका" द्वारा न कर सकी जबकि वाल्मिकी रामायण व तुलसीकृत रामायण अपने विषय वस्तु को केन्द्र बिन्दु "राम" की महत्ता

तथा प्राणनाथ (राम) द्वारा लड़के का संकेत किया है, "दिया दान दैके दिया दान को दे" कवित्त में कथा का वर्णन है।

इस प्रकार प्रस्तुत रामकथा कथा वस्तु के साथ अप्रस्तुत ऐतिहासिक कथा वस्तु को प्रस्तुत किया है तथा एक नाटक में अनेक नायकों का समायोजन करके अनेक नायक निर्धारणमें प्रासंगिक कार्यों का प्रदर्शन किया। जबकि केशव ने पूर्व परिचित रामकथा वस्तु का भी पूर्ण निर्वाह क्रम प्रस्तुत नहीं किया।

दोनों बड़े महाकाव्य चित्रण की दृष्टि से एक पारिवारिक पक्ष में और रामविनोद वर्णन व आदर्श दृष्टि से प्रभावकारी सिद्ध होता है। भावानुसार "रामविनोद" का वस्तु वर्णन "पन्द" काव्य चित्रण प्रतिभा, साधना संस्कृतियों का समन्वयात्मक भाव लिये हैं।

रामविनोद व रामचन्द्रिका की प्रासंगिक कथाओं का तुलनात्मक अध्ययन :-

दोनों ग्रन्थ रामविनोद व रामचन्द्रिका की आधिकारिक कथा। तो रामायण परम्परा, वाल्मिकी व तुलसीकृत रामायण की भाँति आध्यात्मिक भाव लिये हुए है।

"रामविनोद" प्रासंगिक कथा रामायण मंजरी, रघुवंश, रामचरित मानस, हनुमन्नाटक से युक्त है। तथा दार्शनिक अद्वैत तथा विशिष्टाद्वैत द्वैतवादी, केशव दर्शन की अनेक प्रासंगिक कथाओं कम्बन रामायण, आनन्द रामायण, रामलिंगामृत, भुशुंडि रामायण, शिव संहिता, लोमश संहिता,

हनुमत संहिता, सत्योपाख्यान्, मुक्त कौशल खण्ड दर्शन ग्रन्थों से युक्त है । इन ग्रन्थों से प्रासंगिक कथा युक्त की गयी ।

केशव की रामचन्द्रिका वाल्मीकि रामायण, तुलसीकृत रामायण से युक्त है । हनुमन्नाटक और प्रसन्नराघव की विषय वस्तु भी उसमें प्रसंगानुसार प्रयुक्त किये है । दार्शनिक तथ्य, जीव जगत, सृष्टि व रचना शक्ति की कथा वस्तु दर्शन से लेकर प्रासंगिक रूप से प्रस्तुत है ।

वैसे ही रामविनोद में ऐतिहासिक एवं दार्शनिक प्रासंगिक कथाओं का समावेश किया गया है ।

"रामविनोद" व "रामचन्द्रिका" की कथा वस्तु का शास्त्रीय विवेचन:-

रामविनोद व रामचन्द्रिका वस्तु का विस्तार और विकास "रामकथा" विषय वस्तु को लेकर हुआ है । दोनों की विषय वस्तु राम भक्ति परम्परा के पूर्ण करती हुई जो राम आदर्श के पक्ष को प्रसारित करती है ठीक साम्य है ।

रामचन्द्रिका में रामकथा वस्तु के अनेक प्रसंगों जैसे नारद संवाद, रामजन्मोत्सव, चारों भाइयों का वर्णन, अयोध्या काण्ड में मंथरा प्रसंग, अरण्य कांड का प्रारम्भ का प्राणायाम, पंचवटी निवास करने के पूर्व जटायु से मिलना, किष्किंधा काण्ड में बालि वध, तथा वालि की अन्योक्ति, सुन्दर काण्ड में सीता विलाप, युद्ध काण्ड में अंगद द्वारा कमदर्पु मकराक्ष वध आदि किसी का वर्णन नहीं अपितु उसे वाल्मीकि रामायण कथा वस्तु के आधार पर लिखा गया अधिक विस्तार हनुमन्नाटक व प्रसन्न-

राघव से मूल भाव को लेकर, शब्दों को बदल कर रख दिया गया है । तथा विषय वस्तु के अनुसार कथा क्रम निर्वाह पर ध्यान नहीं दिया गया कि ऊपर दिखाया है असम्बद्ध तथा बीच में अधिक रच दिये गये जिनको कथा वस्तु से किसी प्रकार सम्बन्ध नहीं है । जैसे रामपियर का वर्णन में मानव जीवन के दुखों का वर्णन जो कि कथा वस्तु से असम्बद्ध होने के कारण अप्रासंगिक लगते हैं । तत्पश्चात् कथा का भी राम कथा वस्तु से किसी प्रकार सम्बन्ध नहीं है तथा अपनी रुचि के अनुसार मुख्य कथा वस्तु को छोड़कर दूसरी व अन्य वर्णों में लग जाते हैं । विश्वामित्र मुख्य बातोंको छोड़कर छन्दों का प्रयोग हेतु अयोध्या वन, तालाब भवन हाथी आदि के साथ अवधपुरी का वर्णन किया । दशरथ सेना वर्णन के लिये ।। छन्दों का प्रयोग किया । जनकपुर में विश्वामित्र आने पर मिथिला वर्णन है दो छन्दों में समाप्त कर पूर्ण वर्णन 6 छन्दों में किया । इससे कथा वस्तु का क्रम निर्वाह नहीं हुआ । विषय वस्तु में निखार नहीं आ सका । कथा वस्तु के निर्वाह के लिये पात्रों का चरित्र वर्णन में भी न्याय नहीं किया गया । परन्तु छन्द प्रकृति वर्णन, श्रृंगार, रस योजना, के आभूषणों से कथा वस्तु का उज्ज्वल प्रखर नहीं हो सका ।

रामविनोद की कथा वस्तु भी प्रसिद्ध "राम" की महत्व व गरिमा से युक्त होकर रामविनोद में प्रस्तुत की गई है । इस कथा के अतिरिक्त धार्मिक सात्विक कथा व तत्कालीन ऐतिहासिक कथा से युक्त है ।

जिसमें राम प्रसिद्ध कथा व उत्पाद्य दोनों प्रकार की कथा वस्तुओं

को सुनियोजित किया गया । प्रसिद्ध में पुरानी ऐतिहासिक है । दूसरे ओर नवीन पद्धति के कारण उत्पाद्य है ।

यह कथा वस्तु राम का रामत्व, वैदिक साहित्य परम्परा की वस्तु है जिसमें उन्हें इक्ष्वाकु वंश का बताया गया है । इक्ष्वाकु से तात्पर्य आत्म के वंश की कथा है । इक्ष = वाक्, और वाक् से सृष्टि की रचना हुई है । ऐसे नाद व अक्षर पुरुष के रूप में राम को प्रयुक्त किया गया है । ये कोई राजवंश के देव कल्पित नायक नहीं है । इस प्रकार रामविनोद की विषय वस्तु वैदिक साहित्य के गहराई से निकली है ।

इसके साथ ऐतिहासिक व आध्यात्मिक कथा वस्तु को समायोजित कर तत्कालीन विषय वस्तु का अवलोकन कराया गया है । जो नितान्त नवीन है ।

प्रबन्ध काव्य की दृष्टि से दोनों महाकाव्यों की कथा वस्तु का अनुशीलन:-

श्रव्य काव्य की दृष्टि से काव्य दो हैं, एक प्रबन्ध काव्य और मुक्तक काव्य ।

महाकाव्यों के लक्षण बताते हुए आचार्यों ने लिखा है कि महाकाव्य में जीवन का व्यापक रूप से चित्रण होता है । नायक उदात्त, महान चरित्र वाला, इतिहास प्रसिद्ध, तथा कथा इतिहास प्रसिद्ध होते हुए अपने काव्य तत्वों के साथ सम्बद्ध व सुनियोजित होकर किसी एक रस आस्था से समायोजित होने वाले सर्ग बद्ध होकर कथा में धारावाहिकता रखकर हृदय को भाव विभोर करने वाले ग्रन्थ को महाकाव्य कहा गया है ।

की है । मुख्य कथानक के प्रसंग भेद अथवा कथा भेद या स्थल भेद या विश्रामान्तर भेद के लिये अथवा पाठक के विश्राम स्थलों के लिये प्रबन्ध काव्यों में सर्गों में बांटने का निर्देश दिया गया है ।

अन्य भारतीय आचार्यों जैसे - दण्डी[1], रुद्रट[2], हेमचन्द्र[3], व विश्वनाथ[4], आदि ने [illegible] काव्यों के शास्त्रीय विवेचन में बताया है कि महाकाव्यों में सर्गों का होना अनिवार्य है ।

उक्त परम्पराओं के निर्वाह के लिये केशव व चन्ददास ने अपने महाकाव्यों "रामचन्द्रिका" व "रामविनोद" में क्रमशः राम कथा वस्तु को विकसित करने के लिये बाल काण्ड से लेकर उत्तर काण्ड तक सात सर्गों में तथा रामचन्द्रिका में सर्गों के अन्तर्गत कथा वस्तु को विभिन्न प्रकाशों में विभक्त किया गया है जबकि रामविनोद के सर्गों के अन्तर्गत कथावस्तु को विभिन्न अध्यायों में रखा है । विभाजित किया गया सर्ग के अन्तर्गत प्रविधि की व्यवस्था दोनों काव्यों में समान है । दोनों का मूल स्रोत रामायण है । यहाँ अन्य कथाओं को प्रासंगिक रूप में लिया गया है ।

यहाँ रामविनोद व रामचन्द्रिका के काण्ड अन्तर्गत प्रसंगों को संक्षिप्त रूप में लेना अनिवार्य है ।

रामचन्द्रिका में सब पद एक दूसरे से अपनी कथा के विचारधारा शृंखला की कड़ियों की भाँति जुड़े हुए है । केशव के प्रबन्ध काव्य में रामचन्द्रिका का प्रमुख स्थान है ।

1- दण्डी काव्यादर्श 1/14/20, 2- रुद्रट काव्यालंकार 16/7/19,
3- हेमचन्द्र का काव्यानुशासन 1/8/9, 4- साहित्य दर्पण विश्वनाथ 6/215/325

बालकाण्ड में राम कथा का व्यापक वर्णन करके कथा व्यापार की सूचना मात्र दी है । गणेश वन्दना, सरस्वती वन्दना, राम वन्दना से आरम्भ कर

सिद्धी हैं जगत जाकी ज्योति जगत्मय स्वच्छन्द
रामचन्द्र की राम चन्द्रिका बरनति हौं बहु छन्द

शुभ सूरज कुल कलश नृपति दशरथ भये भूपति
तिनके सुत भये चारि चतुर चित चारु-2 भाँति ।

इस प्रकार मात्र चार भाइयों की संख्या व नाम गिनाने के बाद अयोध्या के भवन, तालाब, हाथी आदि 12 छन्दों में किया । और विश्वामित्र आने पर उन्होंने उनका वर्णन संक्षेप में कर अयोध्यापुरी का वर्णन विस्तृत रूप से किया ।

छप्पय:-

राजाधिराज को पुत्र साधि सब मित्र शत्रु धन ।
मान कृशानु विधान, पाप कीन्हो मुनि मंडल ।
कै मन आने हाथ पौनि धन इन्द्रिय अनपति ।
जग जग दोष देह भये छत्रिय ते चन्द्रपि पति ।
तेहि पुर प्रसिद्ध केशव सुमति काल अतीत गनानि मुनि ।
तेहि अद्भुत गति पगु धारियौं विश्वामित्र पवित्र मुनि ।

छप्पय में मुनि के आने का व राम माँगने का वर्णन तत्पश्चात लक्ष्मण का जाना फिर अनेकों छन्दों में सुरथ राजा आदिका बाग आदि का वर्णन 12 छन्दों और कुछ वर्णन 1 छन्द में किया ।

सूत्रधार :- औ आवास, बहु रत्न प्रकास
सोभा विलास, सोभै प्रकास ।

आभीर :- अति सुन्दर अति साधु
थिर न रहत पवन आधु
परम सोभित भानि
दशरथ धारिणी जानि ।

यहाँ मुख्य प्रसंग से हटकर अन्य वर्णन के लिये अनेकों छन्द व अलंकार प्रयोग किया । फिर तपोवन पहुंचने ताड़का, मारीच, सुबाहु व अन्य राक्षसों का वध एक ही छन्द में किया ।

परन्तु लक्ष्मण किसी ब्राह्मण से धनुष यज्ञ कथा सुनकर जनकपुर जाना तैयार होने पर कोई ऋषि पत्नी चिन्मय सीता के भावों पर अंकित कर लायी तथा चित्रपट पर राम के रूप में साम्यता दिखाया । विश्वामित्र राम, लक्ष्मण सहित मिथिला गये । इसी के बीच मार्ग अहिल्या उद्धार वर्णन किया । धनुष तोड़ने पर शीघ्र दूत जनक द्वारा चारों पुत्रों के विवाह का प्रस्ताव भेजना शीघ्र दशरथ का बारात लेकर चलना दूसरे छन्द में ही बारात का पहुंचना लिखा । चार विवाह के स्थान पर मात्र राम विवाह का वर्णन ।

अयोध्या काण्ड :- राज्याभिषेक का निश्चय दशरथ द्वारा, दूसरे छन्द में कैकई की प्रतिज्ञा वश दशरथ से भरत का राज्याभिषेक, राम वन गमन, वर का मांगना । सूचना मात्र से राम का वन गमन के लिये तत्पर दिखना, लक्ष्मण संवाद द्वारा विदित होता है । राम वन में विराजे

है, भरत पिता का दाह संस्कार करते हैं। दूसरे छन्द में कथानक, वरन में भरत निषाद के साथ राम से मिलने आये आदि कोमल स्थलों का मार्मिक वर्णन के बिना मात्र कथन किया गया।

अरण्य काण्ड:- विराध वध सीता का हरना, एक छन्द, दूसरे छन्द में, राम सीता का अगस्त्य मुनि आश्रम में पहुँचना तीसरे छन्द में राम द्वारा खर आदि राक्षसों का वध का वर्णन, रावण व जटायु युद्ध।

किष्किंधा:काण्ड :- बालि-सुग्रीव युद्ध, राम का बालि वध करने का वर्णन आधे छन्द में किया।

सुन्दर काण्ड:- हनुमान जी का सुरसा व सिंहिका राक्षसियों द्वारा निगलना, हनुमान जी का उनके पेट को फाड़कर बाहर निकलना, एक छन्द में कहा। अहल्या उद्धार पर राम द्वारा ऋषि पत्नी का चरण छूना तक रामायणों से अलग और नवीन तथा कुशाग्र मर्यादापूर्ण व्यवहार का वर्णन है।

अयोध्या काण्ड में राम सीता के पास नारद के साथ आनन्द घन का गुरु गोविन्द सिंह की पास आना, व्यंग रूप में प्रस्तुत करके दासी द्वारा रामविरोधी का व्यंग रूपों गुरु गोविन्द सिंह का दासी द्वारा विरोध।

वशिष्ठ मुनि द्वारा आदेश सती प्रथा को रोकने वाला नवीन संकेत किया गया है।

आदि वर्णन प्राचीन कथा के साथ नवीन ऐतिहासिक कथा का जोड़ना, प्राचीन कथा को नूतन रूप देना, कवि के अपनी सूझ बूझ का प्रतीक है।

अरण्य काण्ड:- अगस्त्य जी द्वारा रघुनाथ जी का तप करने का कथन, पंचवटी में रहना, सीता हरण एवं जटायु का मिलना, व सेवा करना शिव जी राम रूप में सीता द्वारा पूजा करना।

राम-लक्ष्मण के द्वारा माया जैसे दार्शनिक विषय का विवेचन करना, शूर्पनखा के निपुण स्त्री सज्जा आभूषण से युक्त दिखाना तथा निराश होने पर विकराल रूप में प्रकट होना, लक्ष्मण का चुनौती देना, शबरी के प्रश्नोत्तर आदि का प्राचीन गौरव के साथ नवीन अनुभूतियाँ युक्त है ।

किष्किंधा कांड:- हनुमान साधु वेषन, सुग्रीव का बालि द्वारा हरण, बालि का पर्वत पर आना, शाप का कारण होना, अतः सुग्रीव का पर्वत पर निवास, सुग्रीव व हनुमान द्वारा, सीता को हनुमान भजन, जटायु का रवि मण्डल तक पहुँचना आदि का वर्णन पाठक को आश्चर्य चकित कर देता है ।

सुन्दर काण्ड:- सीता खोज में, हनुमान को इन्द्र द्वारा प्रेरित लंकनी व सुर नायक द्वारा माया वर्णन, रावण वैभव विनाश का दिग्दर्शन आदि सुन्दर स्थल हैं ।

उत्तर काण्ड:- राम के अयोध्या लौटने का वर्णन, कौशल्या को स्वप्न में प्रकट हुआ, गर्भावस्था के समय सीता और राम का रागात्मक संवाद, वाल्मीकि आश्रम में ऋषि पत्नी का सीता व राम द्वारा दर्शन, कौशल्या द्वारा सीता को निष्कासन संदेश भेजना बिल्कुल नवीन योजना है । लक्ष्मण द्वारा किन्तु रामाज्ञा पालन करना और सीता को ऋषि आश्रम भेजना, राम का अश्वमेध यज्ञ लव कुश संग्राम । इस प्रकार प्राचीन रामायणानुसार

दोनों महाकाव्य की सर्ग और उनके अन्तर्गत अध्याय व प्रकाश बांट रामकथा लिखी ।

दोनों काव्यों में हिन्दी भाषा देशी विदेशी शब्दों का समयानुसार प्रयोग करना, नये छन्दों अलंकार व रस योजना, प्रासंगिक कथा का जोड़ना पात्र संवाद , पात्र चरित्र का यथोचित वर्णन कर महाकाव्य की दृष्टि से उचित है । और अपनी कसौटी पर खरे है ।

लंका काण्ड :- से कथा विस्तार -

दोहा:-

जहँ कहँ वानर सिन्धु महँ गिरि गन डारत आनि ।

शब्द रचैया भूरि पूरि भवि रावण का दुखि दानि ।

से प्रारम्भ होता है जहाँ तोटक छन्द मे समुन्द जल का तरंग की ऊँचाई से विधान भीगने का सुन्दर वर्णन है ।

इसी प्रकार शिव मूर्ति की स्थापना, शिव वर्णन, राम द्वारा सिन्धु पार करना, अंगद संवाद, युद्ध प्रारम्भ युद्ध वर्णन, लक्ष्मण को शक्तिबाण लगने और मूर्छित होने, सुन्दर राम वियोग वर्णन, जानकी जी द्वारा राम-लक्ष्मण का नाग फाँस में बन्धा देखना गरुड़ का आना बन्धन काटना आदि का विस्तृत व धन तक युद्ध संवाद व मार्मिक स्थल है ।

उत्तर काण्ड:- श्री आश्रम वर्णन व अन्य क्रियाओं का अति संक्षेप में कहना, "रामविनोद" महाकाव्य में भी "रामकथा" वर्णित है उसमें भी महाकाव्य विधानानुसार 8 काण्ड है ।

बाल काण्ड, अयोध्या काण्ड, अरण्य काण्ड, किष्किन्धा काण्ड, सुन्दर काण्ड, लंका कांड ।

मंगलाचरण के शीघ्र बाद बाल काण्ड की कथा प्रारम्भ है, रामकथा के शिव पार्वती के स्थान पर, शिव शारदा, ब्रह्म नारद, जानकी और हनुमान को अति नवीन जामा पहनाकर प्रस्तुत किया है । रावण का वेश को अत्याचारी औरंगजेब से जोड़ा गया । राम रूप गोविन्द सिंह से प्रस्तुत कर पुराण कथा को ऐतिहासिक पात्रों से संयुक्त कर दिया ।

इस प्रकार सभी काण्डों में वाल्मिकी व तुलसीकृत रामायण के विषय वस्तुनुसार कथा का वर्णन है । परन्तु उसको तत्कालीन ऐतिहासिक पात्रों की समस्याओं के साथ ऐसा मिलाया है कि एक नवीन योजना प्रस्तुत है । रामविनोद के राम धनुर्धर वाले राम न होकर धनपवन, विष्णु, निरंजन आदि रूप में अवतरित हैं । इस कल्पना ने कथा को नूतन रूप प्रदान किया।

बाल काण्ड में बाल लीला वर्णन नवीन और मौलिक रचना पद्धति से किया गया है ।

"करतार" और "नगार" से प्रतिपक्ष संस्कृति के करतार या गुरु नगार से रणजीत के नगाड़ों का अर्थ लगाकर रघुनायक के गुरु गोविन्द सिंह के रूप में प्रस्तुत कर शैली व कथा को एक अत्यन्त नवीन अस्तित्व दिया । यी हिन्दी साहित्य के लिये अनुपम देन है ।

चतुर्थ सर्गः-

रामविनोद व रामचन्द्रिका सम्बन्ध संवेदनात्मक
अनुभूतियों का तुलनात्मक अध्ययन में :-

" रामविनोद और रामचन्द्रिका का दार्शनिक चिन्तन"

प्रत्येक काव्य कवि के दर्शन से अनुप्रेरित रहता है । दर्शन से हमारा अभिप्राय जीवन मूल्यों के बारे में कवि का चिन्तन व उन मूल्यों के बारे में कवि की व्याख्या है ।

प्रत्येक ही व्यक्ति का जीवन दैहिक और पारलौकिक होता है । उसी दैहिक और पारलौकिक भावनाओं से ओत प्रोत होता है । कवि जिस काव्य की सृष्टि करता है, उसमें दैहिक और पारलौकिक भावना का प्रतिबिम्ब उसके माध्यम से दर्शन की अपनी सृष्टि से परिलक्षित एवं मानव दर्शन को प्रकट करता है ।

अब यहाँ देखना है कि केशव और "चन्द" का दार्शनिक चिन्तन क्या है । अतः दर्शन को प्रस्तुत करने से पहले "दर्शन क्या है" जानना नितान्त अनिवार्य है ।

स्पेंसर के अनुसार विज्ञान अंशतः एकीकृत ज्ञान है तथा दर्शन पूर्णतः एकीकृत ज्ञान, दर्शन एक ऐसी सर्व समावेशी चिन्तनात्मक पद्धति है जो विभिन्न वैज्ञानिक पद्धतियों के ऊपर स्थापित किया जा सकता है । दर्शन का तात्पर्य किसी अस्तित्ववान पदार्थ नहीं है । इसकी परिधि में मनुष्य ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति सृष्टि का औचित्य, आत्मा का मोक्षआदि सभी समस्यायें

मुंदरी को भगवान नारायण का हृदय कहा है । जैसे नारायण के हृदय पर "श्री"वत्स का चिन्ह है वैसे ही इसमें राम अंकों के ऊपर "श्री" वत्सी है, अंगूठी के ऊपर शब्द "श्री रामोजयति" लिखा हुआ परा विज्ञान है । जो कि राम सुख आत्मानंद दे रही है । यहां पर अष्टपद (स्वर्ण) युक्त अर्थात स्वर्णमय अर्थात शरीर के दर्शन सौख्य यहां मिलती है । और ब्रह्म स्वर्णपात्र से ढका है ।

इस प्रकार केशव की रामचन्द्रिका उपासना के भाव राम उपासना सम्बन्धी रामानन्दी सम्प्रदाय के समान (राम) उनके इष्ट देव और मूल मंत्र "रामनाम" इसी राम का "ब्रह्मरूप" में स्वीकार किया है । जैसा कि ऊपर के पद से ज्ञात है और राम को चन्द्र की भांति ही आदि और अनन्त मानते हैं । "अमर अज अद्भुत अपूर्ण अंग" -1।
चन्द्र की भांति ही केशव ने जीव को ज्योति स्वरूप ब्रह्म के अंश प्रतिबिम्ब वालों की जगह में जीव संज्ञा दी है ।

जिस प्रकार सूर्य प्रकाश संसार को प्रकाशित करता है और अन्त में उसी में समा जाता है । उसी प्रकार जीव ब्रह्म का अंश है, परन्तु माया के संसर्ग में अनेक रूप धारण करता है ।
वसु माया अवतार लखित देखि । के पती नियम दानि लेखि ।
प्रिय प्रतिहारिनी सी निहारि । श्री रामौ जय उचार करि ।। 8।
रामचन्द्रिका पृ०सं० 24। ।

1- विज्ञान गीता छ०सं० 21, पृ०सं० 104 ।

मुंदरी द्वारा कवि लिखता है कि यह मुंदरी माया सहित अक्षर ब्रह्म है। जैसे माया और ब्रह्म एक रहते है वैसे ही इसमें भी सुवर्ण और अक्षर मिले हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि "अक्षर" रूप राम ब्रह्म है। स्वर्ण मुद्रिका माया। अतः ब्रह्म और माया के सम्बन्ध से जीव की उत्पत्ति होती है, जीव संसार में माया "स्वर्ण परदे" के कारण ब्रह्म के दर्शन नहीं कर पाता किन्तु जब वह मुंदरी स्वर्ण पर "रामनाम" दृष्टि-गोचर कर "रामनाम" जाप करता है तो जीव मुक्ति पाकर ब्रह्म को प्राप्त करता है। अर्थात परब्रह्म को प्राप्त कर लेता है।

इस प्रकार केशव के ब्रह्म अनादि, अनन्त, अमित व पूर्ण है। जैसा कि पुराणों में कथन है और जीव माया के कारण ब्रह्म को प्राप्त नहीं कर सका है। उसकी प्राप्ति के लिये योग, साधना, ध्यान और भक्ति की आवश्यकता है। उन्होंने अपने काव्य भाव द्वारा बतलाया कि सृष्टि ये संसार मिथ्या और अनित्यता पर भाव प्रकट किये हैं। दुःखपूर्ण है। उस जीव की मुक्ति तप, संयम, दम, संतोष, प्राणायाम द्वारा हो सकती है। रामरूपी ब्रह्म के बिना जीव का उद्धार नहीं।

राम राजानु के राज आये यहाँ धाम तेरे महा भाग जागे आये।

रामचन्द्रिका पृ0 209 ।

पंक्ति से सिद्ध है कि जिसकी देह पर राम कृपा होगी वह तर जायेगा। वह महा भाग्यवान है क्योंकि

केशव दास के राम विशारद और निकाम रे काम न ए है।
देखिहै देश अशेष अनूप ओक लोक अ लोई वे है।।

रामचन्द्रिका पृष्ठ 296, छन्द 25

में अंगद द्वारा रावण को चेतावनी देकर लोगों को भी चेतावनी दी है कि भव सागर पार करने के लिये कोई साथ नहीं देगा । केवल रामनाम ही है सर्वोपरि मंत्र मुक्ति का । राम की प्राप्ति या ब्रह्म और अक्षर पुरुष की प्राप्ति प्राणायाम द्वारा की जा सकती है ।

ज्यों चाहे जीवन अति अनंत । सो साधे प्राणायाम संत ।।
राम पूरक कुंभक भाव जानि । अरु रेचकादि मुद्रानि मानि ।।
जो क्रम-क्रम साधे साधु धीर । सो तुम्हें मिले या ही शरीर ।। 22

रामचन्द्रिका 8022 पृष्ठ 77

1- क्रम-क्रम साधे देहि छांति । केशव प्राणायाम ।।

इस प्रकार केशव ने चन्द्र की भांति ब्रह्म, जीव माया जगत व संसार मिथ्या तथ्यों को मानकर, "राम" नाम जप, ध्यान, योग युक्त से प्राणायाम द्वारा राम या ब्रह्म प्राप्ति का वर्णन अपनी अनुभूतियों द्वारा अभिव्यक्त किया है ।

केशव की भांति कव चन्द्रका "रामविनोद" राम लीलाओं का आलेख है चन्द्र के राम की विराट विरूपता में प्रस्तुत किया है, उनके द्वारा "रामविनोद" में चित्रित राम ।

2- अरिण्योपान 13/7/15 के अनुसार सभी जड़, जीव, जगत प्राणि अणु परमाणु में प्रवेश पाने वाला है । (रामविनोद भूमिका पृष्ठ सं० 66)

1- विज्ञान गीता , पृष्ठ 77 ।

2- यतः सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन सर्वेभ्यो भूतेभ्योन्तरो यं सर्वाणि भूतानि न विदुर्यस्य सर्वाणि भूतानि शरीरम् बृहदारण्यक 3/7/15
राम विनोद भूमिका पृष्ठ 66 ।

"निरख जी ऐसी रीति बखानी" से सिद्ध है चन्द दास जी ने निर्गुणात्मक भक्ति की अनेक धाराओं को अपने काव्य में समायोजन किया है ।

चन्द का ब्रह्म "परम पुरुष" की भाँति सर्वोच्चता का अधिकारी पुरुष "राम" रूप है प्रत्युत कथा द्वारा अनुभूतिभाव को प्रदर्शित किया गया है । जो आध्यात्मिक दैहिक व भौतिक जीवनधारा के द्वारा ऐतिहासिक प्राप्ति करने वाला है । आध्यात्मिक रूप से सार्वभौम सत्ता "परमपुरुष के रूप में भौतिक रूप में सबका ओजपूर्ण शक्तिमान राजपुरुष के रूप में, दैहिक रूप में प्रकट हो असुर और भेदरूप रावण के हन्ताकर्ता के रूप में प्रकट होता है और "देह" रूप में उसका ब्रह्म समाया है । जैसा कि विदित होता है ।

"देह में सदेह ब्रह्म मनीता [illegible] पावहि " से सिद्ध होता है कि "राम ब्रह्म" की देह शोधन प्राणायाम, योग साधना, भक्ति और निर्गुण आराधना से देह ही में ब्रह्म तत्व की प्राप्ति की ओर इंगित किया गया है ।

केशव और चन्द के ब्रह्म में यही साम्यभाव है । दोनों देह शोधन सामाधि ध्यान, योग प्राणायाम द्वारा जीव मात्र आत्म ज्ञान के दिव्य प्रकाश से प्रकाशित होने की कल्पना करते हुए से दृष्टिगोचर होते हैं । केशव का कथन -

जो चाहे जीवन अति अनेक । सो साधै प्राणायाम एक ।

यही प्राणायाम से, माया से, अमित जीवन, ब्रह्म प्रकाश पा सकता

भ्रमित जीवन ब्रह्म प्रकाश पा सकता है । दोनों ब्रह्म, माया, जीव, जगत का वर्णन अपनी दार्शनिक भाव से अभिभूत होकर काव्य में अवतरित किया है ।

छन्द- 1- गोचर प्रकट प्रसिद्ध गुन माया पापप्रकार ।। रामविनोद ।

2- जाकी माया प्रबल अति घेरा सबै संसार ।

काम क्रोध मद लोभ दारुण सब परिवार ।। रामविनोद ।

उत्तर 11/167

इस प्रकार से माया का रूप दुख का उत्पादक है ।

इसके सो रूप लोभ संगम सुख अंगन-अंगन भाव चढ़े ।
दारुन मोह हेतु वनिता सुत मोह सनेहन मारि र है ।
यहि भाँति चढ़े नर गोचर सो बहु भेद मतो निज बुद्धि कढ़ै ।
ममता मन सो प्रमता प्रकट करि, तेज अखिल लोक दहै ।

इस प्रकार माया मोह के चक्कर में पड़ कर जीव भ्रमित हो जाता है । उसे और मन द्वारा उस भ्रमित जीव से ब्रह्म के दिव्य प्रकाश को देह में देखा जा सकता है । केशव की भाँति रामोपासना चन्द ने अपने काव्य में प्रस्तुत की है ।

केशव केवल रामोपासना पर बल देते हैं । और राम को "पूर्णांश्य" कहा है कि चन्द ने रामविनोद में रामभक्ति उपासना, उपासना, माधव सम्प्रदाय, राधा वल्लभ सखि सम्प्रदायों की सभी उपासना पद्धतियों का समावेशित किया है ।

चन्द ने कर्म की विवेचना गीता के आधार पर नूतन प्रकार से की है ।

" कर्म निवास सो करि न गुमान ।
चन्द कहै ताको राम ईमान ।।

कर्म को "न माप" और ईमान को "राम" चन्द ने कर्म और धर्म को एक नवीन तेजस्विता से युक्त किया है । वैसे तो केशव द्वारा "राम", भरत, हनुमान, सुग्रीव, जामवन्त, अंगद के द्वारा कर्मों को ही धर्म से प्रयुक्त किया है । जो प्राचीन पौराणिक कथाओं के कार्यकृति के अनुसार है किन्तु चन्द द्वारा " कर्म निवास सो करनि गुमान । चन्द कहै ताको ईमान । " एक नवीन प्रकार की दार्शनिक पद्धति की समायोजना दिखाई देती है ।

आपका दर्शन कर्म की ओर इंगित करता है ।

"जग उर धरत विवाद तात थिर रहे नहुँ तपे ।
चिंता अग्नि विवेक कारन पर त्रिभुवन कपे ।
यथा पवन तरु गिरत पुहु ताका न दीजै ।
तथा आत्म अमर बुद्धि एहि धारन लीजे ।
अमर न रहत अजात देखि उर ज्ञान दीप रच ।
विश्व असत्य नहिं सत्य सिद्ध संतोष कर्म सच । "

उक्त पंक्तियों में भी आत्मा अमर है और बुद्धि और विवेक से उस अमर रूपी "राम" ब्रह्म को प्राप्त करता है । वह केवल सत्य, सन्तोष, प्रेम, कर्म द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है । अन्य सभी असत्य है । "अमर न रहत अजात देखि उर ज्ञान दीप रच" से सिद्ध है कि कोई भी

म

उनमें विभिन्नता है ।

वैष्णव पर रामानुजाचार्य, विष्णुस्वामी, निम्बार्काचार्य, माध्वाचार्य, रामानन्द सम्प्रदाय, सखी सम्प्रदाय आदि दार्शनिक सिद्धान्त का प्रभाव प्रतीत होता है । अब उक्त महान पुरुषों की विभिन्न विचार-धाराओं का स्थूल रूप का यहाँ दिग्दर्शन करना अनिवार्य है :-

रामानुजाचार्य का जन्म सं० 1074 से 1194 वि माना गया है । डा० रामकुमार वर्मा ने इस बात की पुष्टि की थी । 111
आपने "विशिष्टता द्वैतवाद" के सिद्धान्त, शंकराचार्य के मायावाद का खण्डन करके प्रतिपादन किया और ईश्वर को सगुण, शक्तिशाली, गुणवान्, सर्वेश्वर, सर्वज्ञ व सर्वाधार बताया । वह जीवों का अन्तर्यामी तथा स्वामी है । जीव उसका शरीर है । विशिष्टता द्वैत का ईश्वर व्यक्तित्ववान तथा बैकुंठ निवासी है । जीव ईश्वर की भाँति नित्य है । वह अणु तथा चेतन है । इस ईश्वर व ब्रह्म की अभिव्यक्ति पाँच रूपों में होती है । अर्चा विभव, व्यूह, सूक्ष्म तथा अन्तर्यामी । देवमूर्तियाँ भगवान का अर्चावतार है । मत्स्यावतार आदि "विभव" है । वासुदेव संकर्षण प्रद्युम्न तथा अनिरुद्ध "व्यूह" है । सूक्ष्म का तात्पर्य परब्रह्म से है तथा अन्तर्यामी प्रत्येक शरीर में वर्तमान है जिसका साधना के क्षेत्र में मनुष्य को पहले भक्तियोग द्वारा हृदय को शुद्ध कर इस परमात्मा का मनन करना चाहिये । इस प्रकार भगवान को जानने का उपाय भक्ति योग है । विष्णु स्वामी एवं निम्बार्काचार्य "कृष्ण" को ही परब्रह्म मानते हैं ।

माध्वाचार्य के मतानुसार परमात्मा अनन्त असीम गुण पूर्ण है । उनके अनुसार ईश्वर की ही सत्ता एक मात्र स्वतंत्र है और जीव और जड़ तत्व परतंत्र है ।

रामानन्दी सम्प्रदाय:- शुक्ल जी ने "रामानन्द जी रामानुजाचार्य का ही मतावलम्बी लिखा है । रामानन्द जी ने अनन्य भक्ति को मोक्ष अथवा हो मोक्ष का अव्यवहितोपाय माना है । प्रपत्ति को मोक्ष और मुक्ति को भक्ति का अंग, जगत का उत्पत्ति कारक ब्रह्म मानाहै । तथा जीवों को ब्रह्म से अभेद मानों है ।

हरिदास:- ये एक छन्द से स्पष्ट है कि ये सखी भाव से राधाकृष्ण के आनन्द विहार व केलि के रस को लूटा करते है । ।1।

उक्त दार्शनिक वादों तथा कृष्ण पूजा सम्प्रदाय का कैसा पर

1- आसधीर उद्योत कर, रसिक छाप हरिदास की ।
   जुगल नाम सों नेम जपत नित कुंज विहारी ।
   अवलोकत रहै, केलि सखि सुख को अधिकारी ।
   गान कला गन्धर्व श्याम श्यामा को तोषे ।
   उत्तम भोग लगाय मोर मर्कट तिमि पोषे ।
   नृपति द्वार ठाढे रहे दर्शन आशा जासकी ।
   आसधीर उद्योत कर, रसिक छाप हरिदास की ।
      भक्तमाल, भक्ति सुधा स्वादतिलक रूपकला, पृष्ठ 607 ।

दार्शनिक मतों से बचते और प्रभावित होकर भी उस परम्परा को न निभा सके जिससे वे चंद और तुलसी के समतुल्य हो सकते । चन्द-बैराग की भाँति रामानन्दी, रामानुजाचार्य, माध्वाचार्य सखि सम्प्रदाय से प्रभावित होकर एक नवीन स्तर प्रदान किया, तत्कालीन राजनीति, सामाजिक व ऐ स्थितियों में अनेकों धार्मिक रूढ़ियाँ व भ्रान्तियाँ उत्पन्न हो गयी थी । उसमें आस्तिक, नास्तिक, भौतिकवादी, हेतुवाद और स्वामि प्रकार से सभी विचारकों समानुपातिक रूप से समन्वय था । जीवन संग्राम संकीर्ण था, जनसाधारण हिन्दू व हिन्दू शासक का धर्म खतरे में था उसकी रक्षा करनी थी । अतः पाँचवों जैसे शासक का अपने अधिकार के लिये तथा अत्याचारी शासक दुर्योधन का नाश के लिये कुरुक्षेत्र में महायुद्ध करना पड़ा था । यह गीता संदेश है । वैसी ही स्थिति 18वीं शताब्दी में थी । औरंगजेब से धर्म की रक्षा करने के लिये भारतीय शासकों को लोहा लेना था और यह प्रेरणा गीता से प्राप्त होती है । चंद का "रामविनोद" गीता के दार्शनिक विचार का प्रभावित है जबकि बैराग दास बैराग (कृष्ण) सन्देश गीता के प्रभाव से दूर है । गीता दर्शनानुसार चन्द कवि पर ध्यान देने वाले हैं । गोविन्द (गुरु गोविन्द) की प्रेरणा से अर्जुन के रूप में जीवन जीते हुए राष्ट्रीय युद्धों में भाग लेकर, गीता सन्देश का पालन करते हैं । इन युद्धों के द्वारा पराधीनता की शृंखला तोड़ने का प्रयत्न जो अर्जुन प्रयास दिखाया गया व दूसरी धार गीता सन्देश इसका दीक्षा के अनुसार रूप है ।

इस प्रकार चन्द के दर्शन में गीता, उपनिषदों का तत्वज्ञान, प्राचीन धर्म ग्रंथ पुराणों और महाकाव्यों में व्यास व तुलसीदास के " रामचरित मानस " जैसे महाकाव्यों, तत्व मीमांसा, योगदर्शन, सांख्य, योग, वैशेषिक पूर्व मिमांसा, न्याय, वेदान्त के अलावा जैन, बौद्ध चार्वाक दर्शन के प्रभाव समाविष्ट है, इन दर्शन के आधार पर " चंद ने जीवन व ईश्वर दर्शन की रहस्यात्मकता की व्याख्या करके उसे अनन्त, परब्रह्म, सर्वव्यापी को मानव देह और मानव अस्तित्व में उद्घाटित कर दिया, " परब्रह्म के ज्ञान को प्राप्त करना कठिन है उसे नेति नेति, अगम, अगोचर कहने वालों को के सम्मुख यह सिद्ध कर दिया कि " मानव ही विराट ब्रह्म है वह उसका अंश मात्र नहीं है । सम्पूर्ण का सम्पूर्ण अवतरण है " ।

देह सदेह ब्रह्म समाया न पाये ।

इस प्रकार योग, भक्ति, की अद्वैत एकता का जो समावेश चन्द काव्य के दर्शन में प्रकट है वह हिन्दी काव्य के लिए नूतन विषय वस्तु है । क्योंकि उनके काव्य में " योग, में सम्पूर्ण भक्ति धारा को दिखा दिया गया है, संतों के योग साधना के सात सोपान हैं, अष्टांग योग के प्राणायाम, ध्यान के अन्तर्गत लययोग, अष्टांग योग में कुण्डलिनी शक्ति और उसके भेदे जाने वाले छह चक्रों, बौद्ध योग की ऋद्धि सिद्धी में चन्द की नीली साधना, जैन साधना का " सम्यक एवं मार्ग " को समायोजित कर चन्द योग दर्शन की विराट भूमि को स्थापित किया है ।

राजाश्रय से अनेक आर्थिक समानता और यश की उपलब्धि हो सकती थी ।

राजाश्रित कवियों के साहित्य का मुख्य केन्द्र श्रृंगारिकता थी जो कृ भक्तों की भावनाओं से मेल खाती थी । वैसे तो श्रृंगारिकता और रसिकता तुलसीदास के भी काव्य में है किन्तु उस श्रृंगारिकता में अलौकिक भाव है और राजाश्रित कवि के काव्य में राजाओं और उनके वैभव के कारण भाव व्यंजना के स्थान पर श्रृंगारिकता रसिकता अलंकरणप्रियता आदि विशेषताओं का विकास हुआ जैसा कि केशव दास की पंक्तियों से विदित होता है ।

" जदपि सुजाति सुलच्छनी, सुबरन सरस सुवृत्त ।
भूषन बिन न बिराजई, कविता, बनिता मित्त । "

इस पंक्ति से प्रमाणित है कि उनके काव्य में अलंकारों का सर्वोपरि महत्व है " चमत्कारिकता और कृत्रिमता " वाली शब्दावली उनकी दृष्टि में कोरी थी अतः भाव व्यंजना या मार्मिक स्थल उनके काव्य में ढूंढना उन्हीं के काव्य विवेचन का उल्लंघन करना है । इस प्रकार कहा जा सकता है कि केशव का काव्य अस्थिपंजर व मांस के अपेक्षित शारीरिक अंगों लीन होकर रह गया है । शरीर में छिपी आत्मा रस का रसास्वाद न कर सकी । इसी से रामचन्द्रिका में पात्रों में धार्मिक आदर्श न के बराबर है । साथ ही सम्वादों में संवेदना या मार्मिक स्थलों में न रस है न सौंदर्य बोध । अगर कुछ है तो पाण्डित्यप्रदर्शन । राम चन्द्रिका में कवि महान राम को भूल अपने विचारों में लीन सा हो गया है । " राम " की प्राचीन कथा

सीताहरण का दृश्य :-

"निज देखौ नाहिं शुभ गीतहि सीतहि कारण कौन कहौ अबहीं ।
अति मोहित कै बन माँझ गयी, सुर मारग में मृग मारयो जहीं ।
कटु बात कछू तुम सों कहि आई, किधौं तेहि त्रास दुराय रही ।
अब है यह पर्णकुटी किधौं और किधौं वह लक्ष्मण होइ नहीं ।

रावण द्वारा सीता हरण पर राम पागल से हो जाते हैं । और वृक्ष लताओं और पक्षियों से सीता का पता पूछते फिरते हैं । चक्रवाक से कहते हैं कि अब सीता बिना मुझे देख कर तुम्हें सुख है किन्तु अब वैरभाव छोड़ सीता का पता बताओ ।

"अब लौं तुम है जब ही जब ही, दुख होत तुम्हें तब ही तबहीं ।
अब बैर न चित्त कछू धरिये, सिय देहु बताय कृपा करिये ।

रामचन्द्रिका पूर्वार्द्ध छं०39, पृ० 233

और कहते हैं कि तुम सीता मुख को चन्द्रमा जान उसमें लीन हो जाते थे । आज वही सीता खो गयी है । अतः उसकी खोज में मेरी सहायता करो ।

"शशि को अवलोकन दूर किये , जिनके मुख की छवि देखि जिये ।
कृति चित्त चकोर कछू करो, सिय देहु बताय सहाय करो ।

रामचन्द्रिका पूर्वार्द्ध छं० 40 पृ०233

लक्ष्मण के शक्तिबाण लगने पर "राम" का शोक वर्णन एक बार पुनः दुःख से कातर राम की आँखों से अविरल अश्रुधारा बह चली

शृंगार के माधुर्य योग वर्णन चन्द कवि की अपनी विशेषता है-

" सिया कर अंकन राम सो सोहे" ।

शृंगारिक भाव चित्र -

"नृप द्वारह सिया नृप नारि लिये करि प्रेम हिये दृग रूप निहारे ।
मन सों करतार विवेक गहे कर नीरद पान सो प्यार वारे ।

यहाँ भी शृंगार में विवेक जो योग साधना का आधारभूत तत्व है आगे आकर आता है तो वह साधारण, मानस प्रेम विच्छलता विवेक आगे ठिठक कर खड़ी रह गयी सी प्रतीत होती है । अतः कह सकते हैं कि चित्रण में कवि चन्द कालिदास व भवभूति की पावनता व दिव्यता से प्रभावित रहे हैं ।

अति मार्मिक प्रेम व्यंजना- प्रेम भरे के वशीभूत मानस का आँचल खिसक जाता है किन्तु वह उस ओर से बेखबर है एक पग खड़ी के पैर पर है, एक पैर पर खड़ी है, प्रेम में सारी थकान भूल गयी है किन्तु आगे "योगी" की भाँति एक पैर पर खड़ी साधना कर रही है के भाव से उस मार्मिक प्रेम प्रवाह में ठोस रुकावट आ गयी है ।

"देखत राम विलासन को पग राख पायन सुम्म करे ।
तेहि मारग में नव नारिन लखहिं छवि हेर विलोचन वाय धरे ।
कुछ त्याग को सिद्ध प्रेम भरे कुल लाय सिया उर आन हरे ।
तब जाय जो अंचल पावन सी पर पावन सेनहिं पांव धरे ।

- रामविनोद ।

यहाँ अति मार्मिक वर्णन है कि प्रेम के वशीभूत मिथु माता - पिता तक छोड़कर राम-सीता के साथ चल दिये । यहाँ दिव्य, पावन व सात्त्विक प्रेम की झाँकी दृष्टव्य है ।

स्त्रियाँ प्रेम वश कुल लाज छोड़ चुकीं, आँचल अपने स्थान से हट कर पैरों तक चला गया और वे एक पैर पर साधक सी खड़ी राम-सीता की सुन्दरता लीन हो गयीं । लगता है कि साधक अपनी साधना में सांसारिकता को भूल अविकल्प स्थिति को प्राप्त हो गया है ।

शोक की करुण दशा- राजा दशरथ राम को विदा करते समय -

"मधुर धीर धर अंक कर गहि राम लगाये उर ।
चल औधे सुख लेय, सुत लख नीति अनीति रथ ।
- रामविनोद ।

यहाँ पिता की शोकाकुल अवस्था का सुन्दर वर्णन है कि सुत को नीति अनीति रथ के लखने से राजा दशरथ के मन के अन्तर्द्वन्द्व को प्रकट किया गया है ।

केशव की भाँति सीता हरण पर चन्द के द्वारा रामवियोग का वर्णन -

आश्रम समीप निकेत निरंतर प्रेम बिछोह वियोग भरे ।
अब प्रान निदान सो मान लिया, बहु वेग सखा किनु आसु ढरे ।
सुख साज मनोरथ सिद्ध सदा धन आयस अकाज विषाद करे ।
भर लोचन नीर सो पीर घनी तब देह शरीर कि कुम्भ परे ।

सीताहरण पर राम की व्याकुलता हृदय विदारक है ।

" बहुरो उवेग फंसे वन को मन को पद बोध न एक धरै ।
सोचत सूख मता धन की छन वृन्द विलोक वियोग करै ।
तिन सों मृदु बैन विलोक रचै कर और समीप सो प्रान हरै ।
महि मारग बास लखि बनिता कहि सो रतना दृग नीर भरै ।"

लक्ष्मण के शक्ति बाण लगने पर राम की दशा -

"हा मम,प्रान तजो सुख दान निधान कहाँ तव प्रान गये ।"

- रामविनोद । 2108 ।

आदि स्थलों में वियोग वर्णन के मार्मिक स्थलों को दिखाया गया है परन्तु योग साधना से परिपूरित है ।

" हा मम प्रान तजो सुख दान निधान कहाँ तव प्रान गये ।
विधि क्रोध की रेख अलेख अबै दुख हेर हमैं सुख सो लिखये ।
मम सेष अनंग सो अंग देखउ तन भोग कला रव जोग मये ।
कोउ देउ पियाय सिया सुधा मेघुनाद वैसास कराल भये ।"

राम व्याकुल होकर कहते हैं कोई सुधारस पिलाकर इन्हे जिला दो । योग अपने स्थान से खिसक गया और भ्रातृ प्रेम की सच्ची अनुभूति उभर आई कि किसी प्रकार उनके भाई को कोई इस कष्ट के समय जिला दो ।

दोनों कवियों में केशव भक्ति युग के अन्तिम और रीतियुगीन के प्रारम्भिक काल से निकल कर शृंगारिक और भोग विलास युक्त राजाओं

रामविनोद और रामचन्द्रिका का मानवीय एवं प्रकृति सौन्दर्य परक अनुशीलन -

---

मानव व प्रकृति का साहचर्य अति प्राचीन है । प्रकृति मानव जीवन की क्रीड़ा स्थली होने के कारण कवियों प्रकृति के प्रति आकर्षण अति प्राचीन है । प्राचीन कवियों ने अपने भाव, विचार, अनुभावों व मनोवृत्तियों के अनुसार काव्य में प्रकृति का व्यापक रूप से चित्रण किया है ।

प्रकृति की प्रभावशालिनी प्रेरणा से जो भावनायें उत्पन्न हुईं । उसी आधार भाव से विभिन्न रूपों में, जैसे प्रकृति वर्णन के लिए आलम्बन प्रथम, स्वतंत्र रूप से काव्य में प्रकृति वर्णन रूप में, द्वितीय नायक नायिका के मनोवेगों का वर्णन प्रकृति रूप में, तृतीय मानव कार्यों या मनोवेगों की क्रीड़ास्थली के रूप में, चतुर्थ अलंकार व उदाहरणों के लिए प्रकृति चित्रण का प्रयोग किया जाता है जो कवि की तत्कालीन या काव्य परिवेश के आधार पर स्वयं सृजित होती जाती है । कवि अपनी भावनाओं के अनुसार प्रकृति को कहीं सहानुभूति सहकारिता, आध्यात्मिकता एवं क्रूरता, कठोरता के रूप में काव्य में स्वयं भाव को प्रकृति द्वारा प्रतिबिम्बित करता है ।

प्रकृति वर्णन हिन्दी साहित्य की ही निधी नहीं है । बल्कि संस्कृत साहित्यकारों ने प्रकृति को उद्दीपन विभाव के अन्तर्गत प्रयोग कर वन, उपवन, सरोवर, मेघ सरिता, वायु आदि का सौन्दर्य परक वर्णन किया है । दूसरे केशव मिश्र का "अलंकार शेखर" अमर का "काव्य कल्पलता वृत्ति"

नये कवियों को शिक्षा के लिये लिखे गये थे । इन ग्रन्थों का प्रभाव हिन्दी कवियों पर पड़ा । इन्हीं के आधार पर प्रकृति वर्णन के लिए वस्तु परिगणन वाली शैली का प्रादुर्भाव हुआ ।

केशवदास के काव्य में भी प्रकृति वर्णन परम्परानुसार है चूंकि उनका प्रकृति विषयक वर्णन व्यापक है । अलंकार और उदाहरणों के प्रयोग के लिये उन्होंने वस्तु परिगणन वाली शैली अपनाई है तथा बिम्ब ग्रहण कराने वाली प्रकृति के सुन्दर स्थलों को चित्रित किया गया है । उन्होंने सभी ग्रन्थों में किसी न किसी रूप में प्रकृति वर्णन किया है तथा विशेष रूप से केशव दास जी ने अलंकार के रूप में प्रकृति वर्णन अधिक किया है ।

1- "बहुवायु बस बारिद बहोरहि अरुझि दामिनि दुति मनो"- उपमा ।

2- सुन्दर सुवास अरु कोमल अमल अति
 सीता जू को मुख सखि केवल कमल सो - उपमा ।

3- "बाढ़ी छान की धौर सुनि मोरन की ओर सुन,
 सुनि सुनि केशव अलाप अलि जन की ।
 दामिनी से दमकि देखि दीप की दिपति देखी ।
 सुख सेज देखि देखि सुन्दर सुमन की। "

इन प्राकृतिक दृश्यों के वर्णन में वस्तु परिगणन वाली शैली का

1- रामचन्द्रिका पृ०सं० 19 ।

2- रामचन्द्रिका पृ०सं० 178 ।

3- रसिक प्रिया पृ०सं० 191 ।

प्रयोग किया है वो अपने पाण्डित्य प्रदर्शन से प्रेरित होकर किया गया है । "रामचन्द्रिका" ग्रन्थ में विशेष स्थल निकालकर प्रकृति वर्णन किया गया है ।

जैसे उद्यान की वाटिकान्तर्गत सरोवर, मिथलापति के राजभवन व रामवाटिका, सरोवरों में कमल, भौरों, पक्षियों, कमलों आदि का वर्णन अनिवार्य है किन्तु वहाँ उन्होंने इन सरोवरों और वाटिका से सम्बन्धित उक्त वृक्ष, फल, पक्षी, वायु , सुगन्ध, का नाम मात्र वर्णन किया है ।

1- शुभ सर सोभै । मुनि मन लोभै ।
सर सिज फूले । अलि रस भूले ।
जलचर डोलैं । बहु खग बोलैं ।
बरनि न जाई । उर उरझाई ।

अतः रामवाटिका के विस्तृत वर्णन में उससे सम्बन्धित वृक्ष पक्षियों का नाममात्र वर्णन किया है । अतः सम्पूर्ण सौंदर्य सम्मुख नहीं आता । रामचन्द्रिका में केशव दण्डक वन का वर्णन करते समय प्रस्तुत को छोड़कर अप्रस्तुत पर दृष्टि डालते हैं । जैसे कि अर्क (मदार) वृक्ष को देखकर प्रलयकाल के अर्कों का ध्यान आना , इस प्रकार के चौंका वर्णनों के स्थल पर कठोर कल्पना करते देख लगता है कि प्रकृति सौन्दर्य से उनका

1- रामचन्द्रिका पूर्वार्द्ध , प्रकाश 1, छन्द 40 ।

हृदय द्रवीभूत नहीं होता ।

भृकुटी की कुटकी सी करके कुटकी सी
सखि नहीं मालिन सी अवरोहिया ।
(उद्दीपन के रूप में ।
कविप्रिया पृष्ठ 185 ।

केशव का प्रकृति वर्णन पढ़कर यही निष्कर्ष निकलता है कि उनका काव्य परम्परायुक्त अप्रस्तुत योजना के बोझ से दबा है । परन्तु कई स्थलों पर बिम्बग्रहण कराने की चेष्टा की है जो इस बात को सिद्ध करते हैं कि केशव में प्रकृति का स्वाभाविक चित्र खींचने की अद्भुत क्षमता थी ।

1- देखि राम वर्षा ऋतु आई । रोम रोम बहुधा दुख दाई ।
2- गरजत व्यापनि बजे निसान । चमकत बिजुरि निधान ।

इन स्थलों पर केशव ने अप्रस्तुत योजना की है । प्रस्तुत को लेकर अप्रस्तुत योजना का निरूपण किया गया है ।

केशवदास काव्य में प्रकृति चित्रण वर्णन के पश्चात चन्द का "रामविनोद" अनुशीलन की दृष्टि से सुलभ है । अतः उस ओर ध्यानावलोकन करने से विदित होता है । जो चन्द आत्म स्वरूप सिद्धता का साधना से युक्त, वैदिक संस्कृति के उद्गम के ज्ञाता, योगसाधना की यौगिक क्रियाओं का ज्ञानी, महापुरुष के काव्य में, प्रकृति जो मानव क्रीड़ा की वनस्थली है । रामविनोद की सहायक वस्तु सामग्री के रूप में

1- रामचन्द्रिका की भूमिका पूर्वार्द्ध छन्द 11-17, पृष्ठ 251-253 ।
2- वीर सिंह देव चरित्र - पृष्ठ 67 ।

क्योंकर प्रस्तुत न हो ।

परन्तु जैसा कहा गया है कि कवि अपनी भावना, परिस्थितियाँ विचार तथा मनोवेगों के अनुसार ही प्रकृति चित्रण करता है ।

यहाँ चन्द रासविनोद में प्रकृति चित्रण अपनी "योग साधना" भावना द्वारा व्यक्त करते हैं । सीता अभिलाष्य है । जिसके लिये सूर्य और सोम (पिंगला) दोनों की साधना प्रस्तुत की गई है । अतः सूर्य चन्द्रमा का वर्णन प्राचीन उपाख्यान लेकर कुण्डलिनी (सीता) सूर्यमुखी (शापिनी) चन्द्र(सोम) से सम्बन्धित योग मूल साधना का संकेत करता है । ऊषा, सूर्य, अग्नि, यह भाव प्रकट करने के लिये प्रस्तुत किये गये हैं ।

सृष्टि का न होना, सावन भादों का पावस वर्णन प्रकृति की रूप रस व गन्ध स्पर्श से योद्धाओं को राष्ट्रहित चिन्तन की प्रेरणा के रूप में प्रस्तुत किया गया है । ये प्रकृति चित्र केवल सौन्दर्य रसास्वादन के लिये प्रस्तुत नहीं है बल्कि चन्द की प्रकृति सौन्दर्य मानव को अब मानवीय चेतना के परिपूर्ण कर बलिदान द्वारा अमरत्व का आनन्द प्रदान करता है । प्रकृति का रूप, रस, चित्त और बुद्धि को शुद्ध प्रेरणा देकर कर्म और कर्तव्य की दिशा सूचित करती है ।

मानस सरोवर पुष्कर से कवि का शुभ गुण का प्रादुर्भाव करती है । कर्मेन्द्रियाँ रक्षित पशुपक्षियों से चित्त पर विषय का प्रभाव कम करने की प्रेरणा मानव को प्रेरित किया गया कि कर्मेन्द्रियों का प्रयोग करकर विषय विकार से बच साधना में लग ईश्वर प्राप्ति की जा सकती है ।

विवाह के पश्चात राजा दशरथ द्वारा शीघ्र भरत एवं शत्रुघ्न को ननिहाल भेजना सिद्ध करता है दशरथ परिवार स्नेह शिथिल है ।

शीघ्र राज्याभिषेक के विषय में मुनि से पूछने से सिद्ध होता है कि दशरथ को भय था कि भरत राज्याभिषेक में उपद्रव न करें अतः उन्हें ननिहाल भेजा गया है ।

सीता को   राक्षस को देखकर डरना, राम द्वारा उसका मारा जाना से राम का चरित्र साधारण व्यक्ति से भी गिरा हुआ दिखाया है जो पत्नी को प्रसन्न करने के लिए कर्त्तव्याकर्त्तव्य का भी ध्यान नहीं रखते । पुनः विशेष बात उनके पात्रों में दृष्टिगोचर होती है कि प्रमुख पात्र काम व अहंकार पीड़ित हैं । दूसरे के व्यवहार कुशल एवं कूटनीतिज्ञ भी है ।

वाल्मीकि व तुलसी रामायण में "राम" धीरता, शालीनता, गम्भीरता के कारण "रामत्व" प्राप्त करते हैं ।

चन्द के राम योग, चित्त, बुद्धि, समाधि, ध्यान, ज्ञान से "रामत्व" को प्राप्त हैं । तो केशव के राम उत्सुक, चोर, नारी के साथ जलकेलि करने के कारण "रामत्व" को प्राप्त करने में सफल नहीं है । केशव के "राम" अनेक स्थलों पर लक्ष्मण की भाँति उग्र दिखाई देते हैं ।

राजधनुष भंग में परशुराम से कहते हैं:-

1- टूटे टूटनहार तरु वायुहि दीजत दोष

2- भंजन कियो अब धनुष साल तुमको अब रोष ।

3- तातें नृप सुग्रीव पै जैये सत्वर तात ।

इसप्रकार से साथ केशव के राम के चरित्र में शृंगारिकता कूट-कूट कर भरी है ।

"तुम जानि लेव कछु रघुनाथ । के आय ही पाउ कमल धाम ।

तुम चन्द्र बदनि गजगामिनि नैन । मन भ्यो सो कोबै अब कौनि ।

चन्द्रिका पूर्वार्द्ध छं०सं० 23, पृ०सं० 116 ।

प्रजा रक्षक राम राज्याभिषेक के पश्चात शृंगारिक मनोवृत्ति वाले केशव तत्कालीन राजाओं के समान लगते हैं । कभी सीता के साथ वाटिका सैर कभी जलक्रीड़ा करते हैं । कभी नाच गाने का आनन्द लेते हैं। कभि रनिवास में स्त्रियों के मध्य में रस का पान करते हैं ।

सीता- इसीप्रकार "केशव" की सीता के द्वारा पतिव्रता स्त्री की भाँति न होकर पति से सेवा करवाती है ।

"मग में श्रम श्रीपति दूर करैं सिया को शुभ बालक अंचल सों ।

श्रम तेउ हरे तिनको कहि केशव चंचल चारु दृगंचल सों ।

रामचन्द्रिका पूर्वार्द्ध छं० 44, पृ०सं० 180 ।

1- केशव की सीता वीणा बजाकर खिन्न राम को रिझाती है ।

1- रामचन्द्रिका पूर्वार्द्ध, छं०सं० 27, पृ०सं० 211 ।

भेरता- जब मुख्य पात्रों का आदर्श रामचरित मानस व वाल्मीकि रामायण से उतना भिन्न प्रस्तुत है तो अन्य पात्रों की तीमा को क्या कहना । दूसरी ओर विशेष अध्ययन करने से विदित है कि चन्द के "रामविनोद" में राम न ही लीला कराने वाले इस संसार को नचा रहे हैं । वे स्वयं ब्रह्म हैं, देह संदेह में ब्रह्म के रूप में व्याप्त हैं ।

उनके "राम" "दशम गुरु लियो अवतार" के रूप में गुरुगोविन्द सिंह को संकेत करते हैं । जो सत्य, शुद्ध चित्त, योगी है । राम प्रारम्भ से योगी रूप में प्रकट होते हैं ।

रामविनोद में "अवतार कथा दस आय लियो" से ज्ञात होता है दशम अवतार गुरुगोविन्द सिंह के जीवन चरित को रामकथा में व्याजमय शैली में व्यक्त किया है ।

रामविनोद की कथावस्तु का आधार प्रख्यात रामकथा के साथ यौगिक तात्विक कथा व समसामयिक इतिहास कथा का समायोजन है । ऐसी कथा के राम के चरित्र का आदर्श या मर्यादा के साथ योगसाधनों के तत्व से युक्त ऐतिहासिक समसामयिक काल के अनुसार भारत उसके संस्कृति, सभ्यता, सामाजिक, धार्मिक, शिवचिन्तक, एकता एवं साधुवादिता को महान गुण का परिचायक प्रतीत होता है ।

रामचरित्र के साथ ऐतिहासिक वीर श्री गुरुगोविन्द सिंह के चरित्र चित्रण को इस प्रकार एकाकार कर एक नवीन आदर्श को प्रस्तुत किया है ।

है । जो वस्तु मनुष्य की नाभि पद से जो द्वारा जागने वाली कुण्डलिनी है जिसके जागरण हेतु योगसाधना में अद्भुत पुष्टि हो जाती है । अतः यहाँ सीता योग जागरण के प्रेरक साध्य के रूप में प्रस्तुत है । इसी प्रकार भरत को भारत का राष्ट्र कर्तव्य है और राष्ट्र संस्कृति की रक्षा की योजना उनके पात्रों के चारित्रिक चित्रण से एक नवीन कल्पना और आदर्श से परिपूर्ण है ।

सीता आदर्श की धारा है । वाल्मीकि ऋषि से पति दर्शन दीक्षित है । अतः हम कह सकते हैं कि चन्द के समस्त पात्र मानवोचित एवं न्यायोचित आदर्श लिए हुए "रामविनोद" में अवतरित है जो गीता के कर्म पथ से प्रेरित है जैसा कि श्री राम रूपी गुरु गोविन्द सिंह की प्रेरणा से अर्जुन की भूमिका को निभाते हुए राष्ट्रीय युद्धों में भाग लेकर [illegible] पराधीनता को तोड़ने के लिए मानवीय हितों में संलग्न हैं । इन राष्ट्रीय पात्रों में राम, लक्ष्मण, हनुमान, सुग्रीव, जामवंत के रूप में गुरुगोविन्द सिंह, शिवाजी, छत्रसाल, [illegible] आदि का सांकेतिक रूप में आध्यात्मिक शक्तियों की आनन्द अनुभूति को संजोया गया है ।

पात्रों के द्वारा कवि चन्द ने भारतीय संस्कृति, आन्दोलनों, सामाजिक विचारधाराओं को एकता प्रदान करने के भावों का आविर्भाव किया है ।

अन्त में विवेचना से यही सिद्ध होता है कि केशव की "रामचन्द्रिका" के पात्रों से कवि चन्द के रामविनोद काव्य के पात्र

अपने चरित्र से धार्मिक, आध्यात्मिक, राष्ट्रीय, सामाजिक उन्नति के आदर्शों का भाव लेकर औरंगजेब रूपी रावण की असुर प्रवृत्ति का दमन करने में कर्मरत है ।

जिससे राष्ट्रीय चेतना का भाव प्रकट होता है ।

पंचम सं सर्ग

रामचन्द्रिका और "रामविनोद" के शिल्प तत्वों का अनुशीलन -

भाषा का तुलनात्मक अध्ययन- काव्य शिल्प में काल, भाषा, परिवेश, राजनीतिक, सामाजिक स्थितियाँ, परम्परायें आदि आती है । यहाँ शिल्प तत्वों का कवि अनुभूति पर समाज, राज्य, परम्परा परिवार का परोक्ष व अपरोक्ष से प्रभाव होता है । उसी के अनुसार कवि को काव्य के लिये चुनता है ।

भाषा का अतिगति सर्वप्रथम आत्माभिव्यंजन की आकांक्षा को पूरी करने के लिये हुआ स्वयं को समाज बद्ध किया । समाज में पारस्परिक भाव विनिमय की आवश्यकता को दूर करने के लिये भाषा बनी होगी और भाव को सीधे साधे भाव से प्रकट करने मात्र करने का प्रारम्भ हुआ होगा पर मानव मानस में संस्कार और सौन्दर्य की भी एक प्रवृत्ति होती है । उस प्रवृत्ति के द्वारा वह अपने चारों ओर सौन्दर्य का वातावरण देखना चाहता है । इसी अनुसार भाषा को सुन्दर और परिमार्जित करने का प्रयत्न आरम्भ हो गया होगा ।

भावाभिव्यंजन भाषा के शब्द व वाक्यों के ऊपरी ढाँचे से सम्बन्धित है । दूसरा भाषा का सम्बन्ध हृदय से इसमें यह देखना है । भाव कितनी सुन्दर ढंग से प्रकट किये गये है । व्याकरण के प्रश्न को कुछ काल के लिये स्थगित कर उस बात का विचार करेंगे कि चंद व केशव भाव को सुन्दर से व्यक्त करने के लिये किन किन युक्तियों का आश्रय

लेते हैं और कहाँ तक समर्थ होते है ।

शब्दों का परम्परा से प्राप्त एक सांकेतिक अर्थ होता है । यह सांकेतिक अर्थ वैज्ञानिकों के भावों को प्रकट करने में समर्थ होता है कि कवि भाव क्षेत्र में आकर शब्द शक्ति की कमी का अनुभव करने लगता है । कवि, सौन्दर्य की क्रमशः वर्धमान अवस्थाओं को व्यक्त करने के लिये सुन्दर अति सुन्दर, महासुन्दर आदि कहता है किन्तु इसमें होने वाली विभिन्न स्थलों में होने वाली विविधताओं को कैसे प्रकट करे । उपयुक्त परख सुन्दर शिशु के भोलेपन को अथवा गधा की मूर्खता को नापने के लिये हमारे पास दिया हुआ कोई मापदंड नहीं है तो मूर्ख को बैल, व अति सुन्दर, अति सुन्दर या चन्द्रमुखी कह कर सन्तोष कर लिया जाता है । इसके लिये समाज की शक्तियों न एक ओर लक्षण व्यंजनादि शब्द शक्तियों की उद्भावना की दूसरे ओर विविध अलंकारों की मुहावरों और लोकोक्तियों इत्यादि की योजना भाषा व भाव अभिव्यक्ति की सुन्दरता की दृष्टि से की जाती है ।

इसी आधार से "केशव दास" जी ने अभिधा: शक्ति से अधिक कार्य लिया है । इस अभिधा शक्ति से शब्द के साक्षात अर्थ मात्र तक पहुँचा जा सकता है । वक्ता से अथवा भंगि से प्राप्त अर्थ तक नहीं । काव्य में लक्षणों के द्वारा चमत्कार पूर्ण सौन्दर्य उत्पन्न किया जाता है । चमत्कारपूर्ण काव्य अभिधा शक्ति से कार्य नहीं चलता । परन्तु कवि जिनका स्थलों पर लक्षण का प्रयोग करें उन स्थलों को कवि की परखना

अवश्य चाहिये और "केशव" ने लाक्षणिक प्रयोगों का कम आश्रय लिया है । रूपक अं अलंकार सारोप लक्षणा का आश्रय लेता है और सारोपा साध्यवसाना दोनों लक्षणायें सादृश्य पर निर्भर है । भेद रहने पर भी उपमेय उपमान में साधर्म्य रहना उपमा की मूल तत्व है तथा उपमालंकार के अंतर्गत चलकर सादृश्य मूल के सभी अलंकारों का आधार प्रमाणित होता है अतः सादृश्य मूलक अलंकार साधारणतः लक्षणा पर आधारित है किन्तु लाक्षणिकता की निरात्मा रूढि सी होने से साक्षात सांकेतिक अर्थ की तरह गोचर हो जाती है । "केशव" काव्य इस पंक्ति में आता है - "भाषा की सांकेतिकता" ।

"रामचन्द्रिका भक्ति के उत्तरेय रीतियुग के सन्धिकाल "रामचन्द्रिका" का कवि केशव अपनी बात को कहना या उसका "स्पष्टीकरण अरुचि कर समझता है " या भाव की गम्भीरता अभीष्ठ प्रभाव सुरक्षित रखने के लिये अपने शब्दों को असमर्थ पाता है । ऐसे स्थलों पर केशवदास चुने हुए संयमित शब्दों द्वारा एक संकेत मात्र देकर मौन हो जाता है । भाव विशेष का स्पष्टीकरण पाठक पर छोड़ देता है । यज्ञभूमि की रक्षा के लिये विश्वामित्र द्वारा राम लक्ष्मण का दशरथ जी से मांगा जाना, तर्क वितर्क के बाद राम लक्ष्मण को विश्वामित्र का सौंपा जाना किन्तु असमय पिता के हृदय की मनोदशा का चित्रण केशव ने कुछ शाब्दिक रेखाओं द्वारा किया । ।1। राम चलत नृप के युग लोचन ।

1- राम चलत नृप के युग लोचन ।
वारि भरत भे वारिज लोचन ।
पायन परि ऋषि के सजि मौनहि ।
केशव उठि गये भीतर भौनहि । रामचन्द्रिका पूर्वार्द्ध छ0 27, पृ0 37-38

केशव का भाव दशरथ की वेदना की तीव्रता और वेदना का मापक है और राजा का भवन में चले जाना भी इसी दुख को दिखाना मात्र है क्योंकि राजा का सभा में रोना शोभा नहीं देता । अन्य स्थल पर राम मारीच को मारते हैं । मारीच राम स्वर में लक्ष्मण को सहायतार्थ पुकारते हैं । सीता का लक्ष्मण के द्वारा यह कहना कि राम पर कोई आपत्ति नहीं आ सकती । सीता इसका अन्य लगा कर कहती है ।

> राजपुत्रिका कह्यो सु और को कहै सुनै ।
> कान मूँदि बार-बार सीस बीसबा धुनै । ।1।

पाँडित्य प्रदर्शन के लिये छन्दों का प्रयोग करके कहीं कहीं विषय, भाव, और रस के अनुकूल शब्दों का सुन्दर प्रयोग हुआ है । विशेष ध्वनि वर्णन के लिये शब्दों से वही ध्वनि निकली है । भाव मधुर है तो भाषा में माधुर्य आ गया है । कहीं भाषा ओजमयी हो गयी है । धनुष तोड़ने का टंकार ट, ड और न प्रयोग द्वारा टंकार ध्वनि उत्पन्न करने की चेष्टा की गई है ।

।2।- प्रथम टंकोर झुकि झारि संसार मद,
चंड कोदंड रह्यो मंडि नव खंड को ।
चालि अचला अचल घालि दिगपाल बल ।
पालि ऋषिराज के बचन पर चंड को ।

1- राम चन्द्रिका पूर्वार्द्ध, पृ0सं0 225 ।

2- राम चन्द्रिका पूर्वार्द्ध, छ0सं0 43 ।

तोषु दै ईश को बोधु जगदीश को,

क्रोध उपजाइ भृगुनंद बरबंड को ।

बाधि बर स्वर्ग को साधि अपवर्ग को धनु,

भग को शब्दों गयो भेदि ब्रह्मंड को ।

इसी प्रकार सारंगी के तारों की झनकार और बाँसुरी की सरसराहट के लिये क्रमशः "न" और "अनुस्वार" तथा "स" और "र" का प्रयोग है ।

कहु किनरी किन्नरी लै बजावै ।

सुरी आसुरी बाँसुरी गीत गावै ।। ।1।

इसी प्रकार राम की सेना के गमन पर धरती धसकती सी लगती है । कवि ने दपकनि, दपकति, "मचकत", "लचकत" "लचिक लचिक जात" "अतल वितल तल" आदि शब्दों का प्रयोग किया है ।

उचकि चलत कपि दचकनि दचकत ।

मंच ऐसे मचकत भूतल के थल थल ।

उचकि उचकि सैसे के ओल फन ।

भाग गई भोगवती अतल वितल तल । ।2।

केशव सौकेतिकता से भाषा में गुण व रस को बढ़ाते हैं । मुख्य गुण तीन होते हैं - माधुर्य, ओज, प्रसाद । केशव के काव्य में यथा स्थान सभी गुण वर्तमान हैं । माधुर्य गुण चित्त को द्रवीभूत करके संयोग शृंगार

1- राम चन्द्रिका पूर्वार्द्ध पृष्ठ0 169 ।

2- राम चन्द्रिका पूर्वार्द्ध पृष्ठ0 311 ।

से करुणा में, करुणा से वियोग में और वियोग से श्रृंगार रस में उत्तरोत्तर अधिक होती है । रामचन्द्रिका की अपेक्षा केशव की "रसिक प्रिया" में माधुर्य गुण की स्थिति अधिक है । ओज गुण चित्त में उद्दीपन करता है और वीर, वीभत्स, रौद्र रसों से इसकी स्थिति उत्तरोत्तर अधिक होती है । इसे स्थलों पर केशव की भाषा में स्वाभाविक रूप से ओज गुण आ जाता है ऐसे स्थल रामचन्द्रिका में अधिक हैं जैसा कि रामचन्द्रिका पूर्वार्द्ध के 125 पृष्ठ पर छ0सं0 12, में इस दिखने को मिलता है । जहाँ काव्य पढ़ते ही भाव हृदय में ग्राह्य हो जाये वह प्रसाद गुण की स्थिति सब रस में हो जाती है । भाषा की दृष्टि से केशव की अधिकांश रचना प्रसाद गुण युक्त है पर अधिकांश विद्वानों का मत है या भ्रम है उन्हें काव्य का प्रेत मान उनके काव्य को दृष्टिगत न देख कर उनकी छायामात्र से भागते हैं । स्व0 डा0 बड़थ्वाल ने लिखा है कि माधुर्य और प्रसाद गुण से तो जैसे केशव हार खाये बैठे है । ।1।

केशव के प्रसाद गुण युक्त छन्द है कविप्रिया छ0सं0 43, पृ0सं0 177 ।
विज्ञानगीता छ0सं0 17, पृ0सं0 34 ।
रामचन्द्रिका पूर्वार्द्ध छ0सं015, पृ0 47 ।

इससे विदित है केशव को अपनी काव्य भाषा पर पूरा अधिकार है । केशव की भाषा के विषय- "स्व0डा0 श्यामसुन्दर ने लिखा

1- ना0प्र0प0 भाग 10 सं0 1986, पृ0सं0 368 ।

है कि जो लोग हिन्दी भाषा को भाषा नहीं समझते और कहते हैं कि हिन्दी भाषा के मनोभावों को प्रकट करने शक्ति अति अल्प है उनसे मेरा निवेदन है कि वे केशव ग्रंथ पढ़ें और देखें कि इस भाषा में क्या चमत्कार है जिस भाषा वाले को अपनी भाषा समृद्धि और पूर्णता का अहंकार हो वह उस भाषा को सर्वोत्तम छन्द लेकर "केशव" के चुनिंदे छन्दों से मिलान करें तो मालूम हो जायेगा कि उसकी भाषा हिन्दी भाषा के आगे तुच्छातितुच्छ है क्या किसी भाषा का कवि अपने किसी छन्द के चार-चार और पाँच-पाँच तरह के शब्दार्थ लगा सकता है । केशव की कविता में ऐसे छन्द बहुत अधिक हैं जिनका अर्थ दो तीन तरह से होता है । कुछ छन्द ऐसे भी हैं जिनका शब्दार्थ पाँच-पाँच तरह से होता है । इसी कठिनता के कारण लोग केशव की कविता कम पढ़ते हैं । हमारी दृढ़ धारणा है कि केशव ने हिन्दी को महान गौरव प्रदान किया है । जिस प्रकार तुलसी अपनी सरलता और सूर अपनी गम्भीरता के हेतु सराहनीय हैं वैसे ही वरन उससे बढ़कर "केशव" अपनी भाषा की परिपुष्टता के लिये प्रशंसनीय है । [1]

चन्द्र की भाषा -

भाषा को दृष्टि में रखते हैं । अब चन्द के काव्य रामविनोद पर एक विहंगम दृष्टि डालने पर सिद्ध होता है कि महाकवि चन्द्र का

1- रामचन्द्रिका, मनोरंजन पुस्तक माला, पृ०सं० ६,५, । ।

बोध ही नहीं होता ।

जबकि केशव के भाषा की क्लिष्टता के एक मात्र कारण गहरे डूबने पर कहीं उचित रस व भाव मोती पाठक को हाथ नहीं लगता और परिश्रम व्यर्थ जाता है तो पाठक कह उठता है कि केशव की भाषा क्लिष्ट है । चन्द ने भी शब्दों को कठिन रूप में प्रयोग किया है ।

जैसे ग्रह और गृह का अर्थ कह और गृह का अर्थ घर, सरिता के स्थान पर सलिता, मर्यादा के लिये मुज्जाद, धर्म के लिये "धम्म" को प्रयोग से भाषा क्लिष्ट है किन्तु इन शब्दों को विभिन्न प्रयोजनों से प्रयुक्त कर काव्य की उत्कृष्टता को बोध कराया गया है । इस शब्द व्यंजना के द्वारा अर्थ वैचित्र्य शैली को अपनाने वाले चन्द प्रथम हिन्दी के महाकवि सिद्ध होते हैं ।

दोनों की भाषा कठिन है किन्तु दोनों ने अपनी भाषा में हिन्दी, संस्कृत, अरबी, फारसी को लिया है ।

चन्द ने प्रान्तीय भाषाओं का प्रयोग राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से किया है जबकि केशव ने अवध, ब्रज और बुन्देलखण्डी भाषा के शब्दों को वातावरण प्रभाव के कारण लिया । दोनों ने लोकोक्तियों मुहावरों या सूक्तियों का प्रयोग किया है । मात्रा पूर्ति या भाव पूर्ति में अर्थ वैचित्र्य के लिये शब्दों में परिवर्तन भी किया है । अरबी और फारसी शब्दों का "रामचन्द्रिका" में अधिक प्रयोग जैसे- नरे[1] प्रतिहार,[2] सिरताज[3]

पहुनाय,[4] भरातिमाय,[5] झुर एक फिरादहि आयो[6] आदि ।

कुछ अप्रचलित अर्थ के लिये भी प्रयुक्त किये हैं जैसे अन्त के अर्थ में विशेष "अनन्त सुख पावै विशेषहि पावै"- 7

"मारयो रघुनन्दन बाणी जहाँ" - 8

केशव ने ऐसे शब्द का प्रयोग किया जो आजकल अप्रचलित है तथा मात्रा पूर्ति के लिये सन्धियों पर शब्द लिए है जो नियम का अपवाद है जैसे-

"कै ओंणित कलित कपाल यहकिल कपालिक काल को ।-9

"जनु तरुनी है रतिनायक की" । -10

"हु आनी गहे केश लंका रानी" । -11

इन सब प्रयोगों को मात्र अपने पाँडित्य प्रदर्शन हेतु किया है इसलिये सुन्दर मार्मिक स्थल भी भावना शून्य से प्रतीत होते हैं जबकि "रामविनोद" में भी चन्द ने विभिन्न भाषाओं के शब्द को प्रयुक्त किया है कठिन भी है किन्तु उनकी शब्द योजना के साथ अर्थ वैचित्र्यशैली को अपनाया है और भाव की गहनता काव्य की सरसता के कारण भाषा केशव की भाषा के समान दुरुह नहीं लगती ।

1- रामचन्द्रिका पूर्वार्द्ध पृष्ठ 21,

2- रामचन्द्रिका पूर्वार्द्ध, पृष्ठ 30,

3- रामचन्द्रिका पूर्वार्द्ध, पृष्ठ 98,

4- रामचन्द्रिका पूर्वार्द्ध, पृष्ठ 121,

5- रामचन्द्रिका उत्तरार्द्ध, पृ०सं० 101

6- रामचन्द्रिका उत्तरार्द्ध, पृ० सं०256 ।

7- रामचन्द्रिका पूर्वार्द्ध, पृ० सं० 7 ।

8- रामचन्द्रिका पूर्वार्द्ध, पृ० सं० 279 ।

9- रामचन्द्रिका पूर्वार्द्ध, पृ०सं० 70 ।

10- रामचन्द्रिका पूर्वार्द्ध, पृ०सं० 156 ।

11- रामचन्द्रिका पूर्वार्द्ध, पृ०सं० 404 ।

राम चन्द्रिका के मुख्य संवाद-

1- रावण बाणासुर संवाद,

2- राम परशुराम संवाद,

3- राम जानकी संवाद,

4- रावण अंगद संवाद,

5- राम लक्ष्मण संवाद,

6- परशुराम संवाद,

7- रावण हनुमान संवाद,

8- कैकयी भरत संवाद,

9- सूर्पनखा संवाद,

10- सीता रावण संवाद,

11- सीता हनुमान संवाद,

12- लव कुश विभीषण संवाद ।

जिनमें रावण बाणासुर संवाद बहुत छोटे हैं । राम परशुराम संवाद तथा रावण अंगद संवाद बहुत ही लम्बे है । राम परशुराम संवाद में राम गम्भीरता पूज्यों के प्रति सम्मान तथा संकोच को लेकर भाषा संवादों में प्रवाहित हुई है । यही भाषा व्यावहारिकता का कुशलता से निर्वाह किया गया है । राम ने गम्भीरता से परशुराम क्रोधी देख, नम्रता और श्रद्धा के भाव प्रकट किये । लक्ष्मण इस निर्वाह में निर्बल दिखते हैं । अपनी जननी तुम ही तुम पाय हतो", कह कर बात बढ़ गई किन्तु राम

रावण सीता संवादः- जिसमें ऐश्वर्य का प्रदर्शन करता हुआ कहता है ।

"अदेवी नृदेवीन होहु रानी । करै सेव बानी मघौनी मृडानी ।

लिये किन्नरी किन्नरी गीत गावै । सुकेसी नचै उर्वशी मान पावै ।
।3।

सीता का क्रोधित होना:-

"दसमुख सठ को तू कौन की राजधानी ।

दसरथ सुत देषी रुद्र ब्रह्मा न जानी ।

निसिचर बपुरा तू क्यों न स्यों मूल जाते । ।4।

अति क्रोधित होकर सीता संवादः-

"उठि उठि सठ ह्वां ते भाग तौ लौं अभागे ।

मम वचन विसर्पी सर्प जौ लौं न लागे । ।5।

इन संवादों में बहुत ही स्वाभाविक भाषा का प्रयोग किया गया । सीता हनुमान संवाद में शब्दों का मायापुरी होने के कारण ।

सीता का हनुमान संवाद राम विषयः- पूछना अनिवार्य है ।

कहु रूप शील सुनाउ । कहु रघुपति के लक्षण सुनाऊँ ।

हनुमान ने बनिष्ठ बात बताई -

अति यदपि सुमित्रानन्द भक्त, अति सेवक है अति सूर सशक्त ।

अरु यदपि अनुज तीनों समान, पै तदपि भरत भावत निदान ।

3- रामचन्द्रिका पूर्वार्द्ध छन्द 60, पृष्ठ 275 ।

4- रामचन्द्रिका पूर्वार्द्ध छन्द 61, पृष्ठ 276 ।

5- रामचन्द्रिका पूर्वार्द्ध छन्द 62, पृष्ठ 276 ।

रावण अंगद संवाद :- यहाँ केशव नीतिज्ञों द्वारा अपनी बुद्धि और व्यवहार कुशलता का परिचय देते हैं । दोनों पात्र द्वारा मर्यादा का ध्यान एवं अस्वाभाविक ढंग से बातचीत करते हैं । दोनों व्यंग्यात्मक रूप में अपने प्रति पक्षी की हीनता और अपनी महानता दिखाते हैं जो पाठकों के लिए आनन्द का विषय होता है ।

केशव दास अपनी प्रत्युत्पन्न का परिचय अंगद संवाद द्वारा देते हैं । राम की महत्ता और रावण की हीनता पर भी प्रकाश डालते है ।

अंगद ।।1।-"राम को काम कहा, रिपु जीतहि, कौन कबै रिपु जीत्यो कहा।
बालि बली, छल सो भृगु नन्दन गर्ब हर्यो द्विज दीन महा।
दीन्हि कुव्यौ छिति छत्र हत्यो बिन प्राणन है उन राज कियो ।
है छत्र हीन । कही सिगर्यो बिन केशव सौ तोरि बाँधि लियो ।

रावण भेद नीति से अंगद को पिता की मृत्यु का प्रतिशोध लेने के लिये उकसाता है । इस प्रकार राजनीति व चतुरता, वाक्य कौशल, मनोवैज्ञानिक भावों का समावेश इन संवादों में केशव दास की कुशलता का परिचय देती है । इस प्रकार हम देखते है कि केशव दास जी के संवाद नाटकीय दृष्टिकोण से अपना उच्च स्थान रखते हैं और साहित्य दृष्टि से भी ऊंचे हैं ।

1- राम चन्द्रिका पूर्वार्द्ध, छ0सं0 11, पृ0सं0 343 ।

चन्द के "रामविनोद" काव्य के संवाद अपना विशिष्ट और अनोखा संवाद रखते हैं। "डा० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित" ने तो यहाँ कहा है कि चन्द राम विनोद काव्य के संवाद के आगे केशव और तुलसी के संवाद फीके पड़ गये हैं क्योंकि केशव के संवाद साहित्य की अमूल्य नाटकीय निधि हैं।

चन्द के संवाद - चन्द के संवादों की झाँकी यहाँ प्रस्तुत है।

परशुराम संवाद-

राम:- आशु सनाथ हमें करिये भृगुनाथ कृपा करि क्रोध हरौ।
शिव सेवक जान निदान कियो अपना अपमान प्रमान करौ।

यहाँ विनम्रता और गम्भीरता युक्त सहित राम परशुराम से क्रोध हरने की प्रार्थना करते हैं जो मर्यादा से परिपूर्ण है।

परशुराम:- शिव को धनु तै रिपु भग्न कियो सब सेवक निसंक अबौ मुख पावै।
पुनि बालक सी बतियाँ मुख सौं करजोर दोउ मृदु मोहि सुनावै।
देखत आनन ताप बढ़ै दृग क्रोध कृशानु क्रोध रचावै।
आज प्रचुर हनो रन मैं गुरु द्रोह कलेस हिये मिटि जावै।

सुन्दर संवाद है कि शिव धनु के विरुद्ध कार्य करके भी मृदुल बनकर हाथ जोड़कर, मुझे बातें सुनाता है इससे उनका क्रोध बढ़ रहा है। अर्थात गुरु के विरुद्ध किया गया कार्य उन्हें जरा भी उचित संगत नहीं प्रतीत होते उसके लिये कितनी मृदुल क्षमा याचना भी क्यों न की जाय।

व्यतीत कर रहे थे । उस काल में विदेशी शासन की जड़ जम चुकी थी । कहीं कहीं छोटे-छोटे राज्य अपनी स्वातंत्र्य को स्थिर रखने के लिये सदैव राजा अपनी स्वतंत्रता आकांक्षा रखते थे --------3 । ऐसी स्थिति कला के लिये प्रतिकूल थी । इन्हीं स्थितियों में राजा इन्द्रजीत के छोटे राज्य में "केशव" का जीवन निर्वाह हो रहा था ।

जहाँ शासक ने अपने लौकिक सुखभोग सामग्री संचित कर रखी नृत्यकियों और गायक-गायिकाओं का परिवार में जमघट रहता था । ऐसी स्थिति में काव्यानन्द था । वास्तविक सुख और बाह्य सुख में अधिक अन्तर था तो काव्य राज्यों को आनन्द देने मात्र से रचा गया । उसमें स्वान्तःसुखाय का भाव नहीं रहा इसलिये स्वान्तःसुखाय के स्थान पर लोकोत्तर आनन्द ने ले लिया । इसलिये कवियों ने शाब्दिक चमत्कार अलंकार योजना के वैचित्र्य पर महत्व दिया । ये साहित्य, परिस्थितियों के प्रभाव से प्रारम्भ हुआ । केशवदास भी अपने काव्य अभिव्यंजना को इन प्रभाव से बचा न सके । वैसे भी कवि केशवदास की रुचि भी गम्भीरता की न होकर चमत्कार विधान की अधिक थी ।

रीति ग्रन्थों से उन्होंने भाव रसादि। भाव विभाव अनुभाव और संचारी भाव से रस की उत्पत्ति होती है । किन्तु केशवदासजी ने विभावादि की योजना मात्र को ही कवि कार्य की इतिश्री माना । और विभावादि की योजना करते रह गये । वे वास्तविक रसोद्रेक का कौशल न जान सके । "हास्य रस" रस दिखने के लिये ऐसी स्थिति उत्पन्न

अभिव्यंजना के लिये आश्रयदाताओं की प्रशंसा नीति वैराग्य की भावना, नायिका श्रृंगार के चित्र प्रश्नोत्तर द्वारा संवाद चित्र भेद आदि आवश्यक तत्व केशव की "रामचन्द्रिका" में पाये गये हैं । दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि अभिव्यंजना के सभी तत्व कोमल शब्द, सुन्दर छन्द, और अलंकार तथा मनमोहकता है । ।1। कहा है परन्तु दोष दिखाई देता है ।

अगर उन्हें पांडित्य प्रदर्शन से या राजाओं को आनन्द देने से या अपनी श्रृंगारिक भावना को विराम देने का अवसर मिल पाता तो उनकी अभिव्यंजना अधिक सफल होती उनमें प्रतिभा थी किन्तु भावुकता बुद्धि से दब गयी लेकिन जहाँ प्रतिभा थी किन्तु भावुकता में हृदय पक्ष की प्रधानता मिली वहाँ उनकी भाव व्यंजना उच्च कोटि की रही । कई स्थलों पर भाषा का साथ छोड़ उन्होंने शाब्दिकता का आविष्कार कर ही आदर्श को प्रस्तुत किया । अनेक स्थलों पर अपनी प्रतिभा के साथ जब उन्होंने भावपूर्ण अभिव्यंजना की है तो विदित होता है कि व्यंजना शक्ति उनमें है । किन्तु वे व्यंजना या ध्वनि को काव्य का महत्वपूर्ण अंग नहीं मानते हैं इसीलिये हृदय गहन भावों की अभिव्यंजना की विशेष उपयोगिता नहीं समझी ।

यद्यपि चन्द्र का रामविनोद स्वान्तःसुखाय की भावनाओं के अभिव्यक्ति है जिसमें पाठक रस अंशों रस सागर में स्थान-स्थान से

1- रसिकप्रिया 16/13 ।

"क" काव्य तत्वों की दृष्टि से " राम विनोद " व "राम चन्द्रिका " का अध्ययन

केशवदास व चन्ददास, की राम चन्द्रिका " रामविनोद " क्रमशः बाल्मिकी रामायण की कथा तत्वों को लेकर रचे गये हैं । दोनों काव्यों का आधार तत्व " राम " है । दोनों कवियों की बाह्य व आंतरिक अनुभूति " राम " वर्णन " राम कीर्ति " प्रसारित करने के लिये की गई है। दोनों ने " राम " को ब्रह्म स्वरूप " माना है । उसी " राम " तत्व को आधारमान, जग-भव-सागर से तरने का एक मात्र अवलम्ब जान कर उसके नाम जाप को जीवन मुक्ति का आधार माना है ।

चाहे वो " राष्ट्र " " मानव " संस्कृति आदि के विषय हों, सभी विषय व वस्तुओं या प्राणी मात्र की रक्षा राम रूपी ब्रम्ह की प्राप्ति से हो सकती है । काव्य का मुख्य आधार भक्ति को संमुख रख के, काव्य रचना की गई है । इस कथा वस्तु के साथ अन्य सहायक तत्वों का निर्वाह होता चला गया है । राम चन्द्रिका कथा वस्तु बाल्मीकि रामायण व " प्रसन्नराघव " तथा " हनुमान्नाटक " जैसे संस्कृत नाटक की अनेकों विशेषताओं से लेकर की गई है । यहाँ कथा कहने का, कवि का अभीष्ट नहीं है किन्तु कथा आधार पर ही तत्वों का निरूपण किया जाना है । अतः कहा जा सकता है कि कवि केशव " राम " कथा लेकर तो चले हैं, पर प्रतीत होता है कि " राम) सम्बन्धी मार्मिक स्थलों की करके यह दिखाया है कथा कहने का उनका मुख्य उद्देश्य न था उन मार्मिक स्थलों पर अनेक

अनावश्यक बातों जैसे दान वर्णन विधान, तनादयों आदि उत्पत्ति राम कृत राज्य की निंदा वर्णन, तथा राज्य विलास व ऐश्वर्य का विस्तृत वर्णन, प्रकृति चित्रण में, अवध से सम्बन्धी स्थान वर्णन, इन वर्णन में काव्य प्रवाह भी है गतिशील नहीं है कुछ स्थलों पर यह दोष नहीं है, जैसे धनुष यज्ञ, राम सीता विवाह प्रसंग, हनुमान द्वारा सीता खोज, इन स्थलों में प्रवाह व काव्य सौंदर्य दृष्टिगोचर होता है।

इन बातों से विदित होता है " राम चरित्र " चित्रण में कवि की विशेष रुचि नहीं थी। तथ्य यही निकलता है। केशव दास " रामचन्द्रिका " रचना में अपनी निजी विशिष्टताओं से आभूषित अवश्य दिखाई देते हैं।

"राम चन्द्रिका " में कवि आत्म प्रदर्शन की अनुभूति अधिक दर्शनीय प्रतीत होती है इसलिए " राम चन्द्रिका " के पात्र, अपनी केशवदास । भाषा, वाक्य पटुता, और कूटनीतिज्ञता के कारण अधिक मानवीय और यथार्थ बन गये हैं ----- अलंकार योजना के कारण अधिकतर लोगों का चरित्र का पतन हो गया है। " राम चन्द्रिका " में एक और द्रष्टव्य है कि उनके काव्य पात्र दो व्यक्तित्व रखते हैं एक निजी दूसरा कवि द्वारा आरोपित। कवि द्वारा आरोपित की विशेषता यह है " कि सभी पात्र स्वयं कवि व अलंकार पंडित व्यवहार कुशल तथा कूटनीतिज्ञ है। यह पात्रों की कूटनीतिज्ञता व्यवहार कुशलता, केशव की " राम चन्द्रिका " के पात्रों के संवाद से प्रकट होती है।

काव्य लक्षण ग्रन्थों को रच कर आचार्य पद पाना था दूसरे कवि कर्म में शिक्षा देना, । राज्याश्रय कवि होने के कारण राजाओं को प्रसन्न करने के कारण वे भक्ति परक तत्वों को काव्य का आधार न बना सके ।

पात्रों के पश्चात प्रकृति वर्णन केशवदास ने राम चन्द्रिका में स्थल निकाल कर विशेष रूप से प्रकृति चित्रण किया था जो व्यापक है यहाँ प्रकृति वर्णन भी उन्होंने अपने कौशल व्यक्त करने के लिये प्रयुक्त किया है । प्रकृति से उद्दीपन का कार्य लिया है । अलंकार और उदाहरण के रूप में उसका प्रयोग किया तथा वस्तु परिगणन शैली अपनाई -

सुन्दर सुवास अरु कोमल अमल अति,
सीता जी का मुख सखि केवल कमल सो

नायिका का शरीर प्रकृति की लहराती लता के भाँति कोमल है

काम ही की दुलही सी काके कुल उलही सी,
लहलही ललित लता सी अवरोहिये -

इस प्रकार " केशवदास " ने प्राकृतिक वर्णन में वस्तुपरिगणन शैला में किया जो पाँडित्य प्रदर्शन की रुचि से प्रेरित होकर अप्रस्तुत योजना द्वारा, अपनी वाक्पटुता करामात दिखाना चाहते हैं । इस वर्णन में प्रस्तुत को छोड़ अप्रस्तुत पर दृष्टि डाली गई है ।

प्रकृति के पश्चात नख शिख वर्णन आता है । राम चन्द्रिका

में नखशिख वर्णन व सीता दासियों द्वारा राज्याभिषेक के अवसर पर सारा नखशिख वर्णन है नख शिख बिना कठिनता के बोधगम्य है तथा केशव दास नख शिख वर्णन के द्वारा " राम चन्द्रिका " और " राम " के ब्रह्म रूप का दिग्दर्शन किया गया है । अब भाषा अलंकार, रस सभी से दृष्टिगोचर है कि " रामचन्द्रिका " में केशव दास के इष्ट राम की कथा व यश का वर्णन करना है क्योंकि केशव पर रामोपासक वैष्णव अद्वैत वाद की छाप है उस ग्रन्थ को देख कर प्रतीत होता है कि केशव के "राम " परब्रह्म हैं किन्तु उनका " ब्रह्म " अनेकों दार्शनिकवादों में से किस वाद के अनुसार है यह उनके ग्रन्थ से प्रकट नहीं होता । इस ग्रन्थ में वे " राम " को ब्रह्म मान कर भी जीव की कल्पना में उसे दुखमय संसार के कारण दुखी व कर्मों के कारण आवागमन के चक्र में पड़ा दिखाते हैं किन्तु " राम " नाम द्वारा मुक्ति है यह सब होते हुये भी "राम भक्ति " पूर्ण भाव का प्रदर्शन राम चन्द्रिका में नहीं होता । मुख्य रूप से तथ्य पाण्डित्य पूर्ण प्रदर्शन में लगा कवि अपने आत्मा की आवाज को भी नहीं सुन पाया । बाह्य आडम्बर अलापक , अर्थ शब्द आत्मसार के लिये रस, छन्द, अलंकार योजना में लगे रहे, काव्य के मुख्य तत्व ब्रह्म, जीव, जगत और मुक्ति का तत्व लेकर चले हैं , और ऐश्वर्य भोग विलास व सांसारिक माया की लिप्त आसक्तताओं के आनन्द देने के कारण, उनका दार्शनिक तत्व अपने उद्देश्य " राम चन्द्रिका " निर्माण, करने के स्थान पर "ब्रह्म" स्वरूप और प्रभु रघुनाथ की सीता व दासियों के साथ के लिए करता

कौशल को देख आश्चर्य होता है । ऐतिहासिक भ्रान्ति नये छन्दों के रूप में प्रस्तुत है और राम कथा ऐतिहासिक घटनाओं का एकाकार करके, इतिहास व दर्शन का अभिन्न रूप प्रदर्शित किया है तथा इतिहास और दर्शन मिलन, महाकाव्य में xxxxxxx विस्तार से चित्रित है तथा शास्त्रीय कसौटी पर खरा है ।

राम विनोद का मुख्य तत्व, "राम " परम पुरुष " जो कि वैदिक साहित्य की देन है प्रकट करना है यह कथा यह सिद्ध करती है कि " ब्रह्मा पुत्रो"। के " राम " आत्माओं के राजवंश की कथा है वैदिक साहित्य से विदित होता है इस वाक्य का अर्थ है ब्रह्मा + वाक = वाणी- इसी वाणी एवं इच्छा से उत्पन्न प्रणव (पुत्र) इस प्रकार नाद या वाणि की इच्छा से सृष्टि का विकास हुआ । यह तात्विक चिन्तन का प्रदर्शन या मुख्य तत्व इस ग्रन्थ की महान आत्मा है नास्तिक बात है -- " वेद " को ब्रह्मा की वाणी " कहा गया है । बाईबिल का वर्ड आफ गाड " कुरान, कलमाउल्ला कहा " वैसे ही यहाँ ब्र + वाक् = वाणी और इसी नाद से प्रणव व इसी वाक से xxxxxx सृष्टि की उत्पत्ति का मुख्य " तत्व " राम जो कि " इक्ष्वाकु वंश का है । अर्थात वाणी की इच्छा से पंच इन्द्रियों कर्मेन्द्रियों के संयोग के फल स्वरूप अक्षर पुरुष = नाद पुरुष " राम " को संयोजित कर " राम विनोद " में वैदिक तत्व वाणी के महत्व को प्रदर्शित कर कवि यह दर्शाना चाहता है कि आदि में वचन था और वचन प्रभु था " वैदिक साहित्य परम्पराओं अनुसार " सीता " को " कुंडलनी शक्ति को प्राप्त करने के लिये सूर्य (इंगला) व सोम । पिंगला दोनों की साधना अनिवार्य

सेनानियों को निर्भय और निर्बन्ध रूप से चित्रित कर राष्ट्र रक्षा, स्वदेश प्रेम के लिए बलिदान, असुर या कुशासी शासक को मिटाने की प्रेरणा के तत्वों से पुष्पित किया । यह " राम विनोद " के तत्व साहित्यिक व चन्द्रिका के तत्वों से श्रेष्ठ स्थान रखती है ।

जब कि " राम " के प्रमुख रूप का श्रृंगारिक भाव, पाण्डित्य पूर्ण छन्द, अलंकार योजना भाषा वाक्चातुर्यता व्यवहार कौशलता को प्रगट करने में लगे रहे, जब कि मुख्य तत्व था " राम " प्रकाश या यश प्रसारित करना, दार्शनिक तत्व " राम नाम " से तरना यह अभीष्ठ तत्व की पूर्ति उक्त कौशल द्वारा न हो सकी । उनका मुख्य तत्व तो रक्षा पक्ष प्रदर्शन को सफल करना था । अतः दोनों के काव्यों का आधार तत्व एक होकर भी उद्देश्य, भावना, और उनके निरूपण और निर्धारण में नितान्त भिन्न है ।

(ख) रस नियोजन एवं निष्पादन के धरातलों पर "राम विनोद" और " राम चन्द्रिका " का अनुशीलन ।

रीति युग में हिन्दी में आचार्य व कवि का समन्वय हुआ जिससे आचार्य व कवि दोनोंने ही प्रभाव ग्रहण किया । इस प्रकार आचार्य और कवित्व का व्युत्पत्ति हुई, केवल कवित्व या अकेला आचार्यत्व अपने सम - कालीन, शासक वर्ग का मनोवृत्ति की विनोद वृत्ति को संतुष्ट नहीं कर सकता था और उस कवित्व को पूरा करने के लिये आचार्य का सहयोग आवश्यक था । आचार्य का उद्देश्य काव्य शास्त्र के विवेचनों सिद्धान्तों

नियम, उदाहरण रचना, अलंकार विधान छन्द योजना रसों से कवि व रसिक दोनों को परिचित कराना । जिसकी सफलता उत्कर्ष उदाहरणों से सफल हो सकती थी । ।1। जैसे कि ।2। कृपाराम, तथा जयदेव ने उदाहरणों से " सरस " बनाने की सृष्टि रखी थी । कृपा राम जी ने लिखा है अरु थोरे भेद बहु " से सुन शैली को प्रस्तुत किया । इस प्रकार के उदाहरणों ने "भक्ति" को अधिक स्फीत कर दिया " जैसा कि गोपा ने " राम भूषण " में राम चरित्र को उदाहरणों में प्रस्तुत किया वैसे ही " केशव दास " जी ने और चन्द दास " ने क्रमश अपने " राम चन्द्रिका " और " राम विनोद " में क्रमशः राम उदाहरण प्रस्तुत किया । चूंकि यह " राम चन्द्रिका " एक उदाहरण ग्रन्थ ही कहा जा सकता है ।2। तथा प्रबन्धात्मक प्रकृति के कारण लक्षण रहित ग्रन्थ ही है " । इन सर्व प्रबन्ध काव्यों में कवियों ने मंगल चरण परम्परा अपनाई । केशवदास ने राम चन्द्रिका में राम शिव के साथ कृष्णा वन्दना भी " रस " दृष्टि से संकलन कर दी । इस प्रकार अनेक कवियों ने कुलपति कृष्ण, ने " हरि राधिका " मति राम " ने राधा कृष्ण सौंदर्य का वर्णन उदाहरणों के रूप में

---

1. जयदेव - अप्पय दीक्षित प्रभृति आचार्य का नाम
2. हिन्दी अलंकार साहित्य - डा० ओम प्रकाश पृ० 5।

अनेकों आचार्यों पर कवि व आचार्य " केशव " का प्रभाव प्रकट किया गया रस निरूपण आचार्यों ने " केशव " के दोष प्रकरण से प्रेरणा ग्रहण की । इस प्रकार केशव रीति कवि के साथ आचार्यत्व पर विराजमान है । आचार्य जी के लिये, छन्द, रस अलंकार योजना, के लिये उदाहरणों द्वारा प्रस्तुत कर, काव्य शास्त्र का विवेचन करने वालों कवियों को आचार्य माना गया इसलिये यहाँ उनके " रस विवेचन " पर दृष्टि डालना अनिवार्य है ।

रस विवेचन के लिये आचार्य केशवदास ने कविप्रिया की रचना की जिसका आनन्द " रस प्रिये " कह सकते हैं । इस ग्रन्थ में "रस " रीति का परिचय मिलता है । उनके इस विवेचन पर, संस्कृत काव्य विचार धारा, मानसिक धारणायें नई पुरानी परम्परा, स्वयं का गहन अध्ययन का प्रभाव दिखाई पड़ता है उनके सम्बन्ध में जो मानस किया वह उनके रस विवेचन में प्रस्तुत है, अतः कहा जा सकता है कि इस ध्वनि वादियों के अनुसार उन्होंने रस को महत्व दिया किन्तु विश्वनाथ का "वाक्यं रसात्मकं काव्यम् " को पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं किया ।

जब कि " चन्द दास ने रसात्मक काव्यम् " को स्वीकार किया है । इनको केशव काव्य आत्मा स्वीकार नहीं करते किन्तु चन्द दास इसको काव्यात्मा स्वीकार करते हैं जैसे कि श्रृंगार सागर से विदित है " -

भारतीय रस शास्त्रियों के द्वारा ९ रसों को प्रस्तुत किया गया उनमें केशव व चन्ददास ने " श्रृंगार रस माधुरी के द्वारा रस राज माना और

इस भाँति आचार्यत्व की दृष्टि से केशव और चंद अपने युग के आचार्य सिद्ध होते हैं । केशव तो 17-18 वे और चन्द 18 वी शताब्दी के रसों की योजना द्वारा महान आचार्य हैं । विभिन्न रसों को विभिन्न स्थलों पर विभिन्न लक्षण द्वारा निरूपण किया गया है ।

***रीति तत्वों के आधार पर रामविनोद तथा रामचन्द्रिका का विवेचन:-**

रीति प्रयोग रीति तत्वों का सारा ही आधार संस्कृत काव्य शास्त्र ही है जो अपना स्वतंत्र विकास व क्षेत्र लेकर विकसित हुआ उन संस्कृत ग्रन्थों में काव्यांग काव्य लक्षण प्रयोजन, काव्य हेतु गुण, अलंकार रस, ध्वनि, रीति दोष, कवि शिक्षा, काव्य सिद्धान्त आदि विषयों का विवेचन किया गया । काव्य के मूल तत्व क्या हैं इनको लेकर अनेकों सिद्धान्तों ने रस, अलंकार, रीति वक्रोक्ति आदि के सिद्धान्त निरूपित किये । इसी आधार पर पाँच सम्प्रदाय बने । 1- रस सम्प्रदाय, अलंकार, रीति वक्रोक्ति तथा ध्वनि सम्प्रदाय । इन सभी सम्प्रदाय वालों ने काव्य का उद्देश्य "आनन्द" की उपलब्धि बताई है लेकिन उक्त 5 सम्प्रदायों ने क्रमशः रस, अलंकार, रीति वक्रोक्ति व ध्वनि सम्प्रदाय, वाले इन 5 तत्वों को काव्य के आनन्द देने वाले तत्व मानते हैं । किन्तु भरत मुनि भारतीय काव्य शास्त्र के प्राचीन व आदि आचार्य ने रस सिद्धान्त को काव्यात्मा माना है जो आज भी सर्वमान्य है । रस से तात्पर्य प्रत्येक दर्शक व श्रोताओं को रसानुभव कराना । इस अनुभूति की प्रक्रिया

विभावानुभाव व्यभिचारि संयोग द्वारा निष्पत्ति" है । भरत की इस सिद्धान्त या काव्य शास्त्र को लेकर बड़ी विवेचना आलोचना होकर अनेक वाद खड़े हुए । उनका विवेचन यहाँ अनिवार्य नहीं इतना कहना पर्याप्त है कि 9 रस है जिनमें श्रृंगार रस अधिक आकर्षक एवं प्रभाव सम्पन्न रस होने के कारण उसे "रसराज" की उपाधि से प्रयुक्त किया गया जिसका संयोग व वियोग पक्ष है । दूसरा सम्प्रदाय अलंकार सम्प्रदाय है जिसका प्रभाव नाटक से हुआ और भामह काव्य शास्त्र या अलंकार शास्त्र के आदि आचार्य थे जिन्होंने काव्य की आत्मा अलंकार या सौन्दर्य अलंकार एवं सौन्दर्य एवं अलंकार की अभिन्नता को प्रकट किया है । रुद्रट ने भामह का अनुसरण किया । हिन्दी रीतिकालीन आचार्यों में जसवंत सिंह दूलह, पद्माकर आदि ने इन्हीं दो अलंकार ग्रन्थों व आचार्यों का अनुसरण किया ।

रीति समुदाय के सम्पादकों का कथन है, रीतिरात्मा काव्यस्य इसके प्रतिपादक समर्थक दण्डी वामन कुन्तक ने काव्य शास्त्र की रचनायें जिनमें वामन सबसे आचार्य माने गये । इस सम्प्रदाय वालों ने अलंकार की भाँति, काव्य के बाह्य पक्ष सौन्दर्य पर बल दिया और समयानुसार रस ध्वनि सम्प्रदाय में अन्तरभुक्त कर दिया गया ।

वक्रोक्ति सम्प्रदाय ने वक्रोक्ति को ही काव्य की आत्मा बतलाया तथा इस सम्प्रदाय में रस, अलंकार, ध्वनि सभी को वक्रोक्ति के अन्तर्गत कर लिया । ध्वनि सम्प्रदाय के अनुसार ध्वनि को "काव्य आत्मान" माना

गया तथा ध्वनि शब्द को उसकी व्यंजना शक्ति पर आधारित बताया
इसी ध्वनि को काव्य श्रेष्ठता मानने का मापदंड माना गया ।

हिन्दी रीतिकारों ने उक्त काव्य सम्प्रदाय के विशिष्ट रूप
अलंकार, रस नायिकाभेद, आदि पर अनेक परिपाटियों के अनुसार
काव्य ग्रन्थों आदि की रचना की गई । केशवदास ने रस व नायिका
भेद निरूपण में रसिक प्रिया ग्रन्थ रचा और "रामचन्द्रिका" गत कथा
में उक्त सभी तत्वों का समावेश किया ।

अलंकार योजना में उन्होंने प्राचीन व सौविध काव्य के अलंकार
सम्प्रदाय का केवल दास जी ने अनुसरण नहीं किया । इसी से रीति
आचार्यों से उनका विशिष्ट स्थान है और अलंकार क्षेत्र में अधिक शक्ति
शाली रही जिसका आगे के कवियों एवं आचार्यों ने अनुसरण किया ।
यहाँ रीति तत्वों के आधार पर रामचन्द्रिका का तुलनात्मक पक्ष रखते
हुए रचना रामचन्द्रिका की रचना को सम्मुख रख उक्त तत्वों का
समावेशन किस सीमा तक हुआ है ।

1- रामचन्द्रिका महाकाव्य है जो प्रबंध बद्ध होना था किन्तु अध्ययन
से प्रतीत होता है कि कथाक्रम निर्वाह न होने से काव्य कथा क्रम
विशृंखलित है ।

2- "रामचन्द्रिका" को लेकर केशव जिस भक्ति प्रवाह को लेकर चले
उसमें पूरे न उतरे ।

3- इस में भक्ति के स्थान पर ज्ञान "वस्तु" का मान लिया है ।
रामचन्द्रिका रीति तत्वों के अनुसार छन्दात्मक शैली का वर्णनात्मक

"वामन" ने कवि के भेद बताते हुए दो भेद बताए हैं । अ-विवेकी और ब- अविवेकी । इनमें विवेकी कवि ही काव्य शास्त्र का अधिकारी हो सकता है । ।5। कवि को उसकी आवश्यकता के विषय में निर्देश दिया जाता है । सदोष काव्य का रचयिता समाज में निंदा का पात्र हैं । यह एक सुजनात्मक व साहित्यिक पाप है ।6। अतः कवि के लिये काव्य शास्त्र ज्ञान अनिवार्य कहागया । वामन ने तो काव्य शास्त्र ज्ञान के लिये गुरु सेवा को विधान किया । और "दोष" से बचने के लिये "गुण" जानने के लिये काव्य शास्त्र नितान्त आवश्यक है । इस प्रकार "काव्य शास्त्र को ग्रन्थों को प्राप्त थी ।

संस्कृत काव्य क्षेत्र में आचार्य प्रमुख रूप से अपना प्रमुख स्थान रखते है । इन आचार्यों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से हुआ ।

1- पहले प्रकार के वे आचार्य जिन्होंने "मूल भाग" कीरचना की और उदाहरण दूसरे स्थानों से प्राप्त किये ।

2- वे आचार्यों ने "मूल भाग" व "वृत्ति" की रचना की और उदाहरण अन्य स्थान से लिये ।

3- आचार्यों ने मूल भाग, "वृत्ति और "उदाहरणों" तीनों की रचना की ।

4- इन आचार्यों ने "वृत्ति" की रचना किये बगैर "कारको" और उदाहरणों की रचना की ।

5- काव्यालंकार सूत्र वृत्ति 1/2/1 ।

6- "भामह" काव्यालंकार 1/11 ।

उदाहरणों की रचना करने वाले आचार्यों को भी चार भागों में विभक्त किया गया ।

1- वे आचार्य जिन्होंने सभी उदाहरणों की रचना की ।

2- वे आचार्य जिन्होंने कुछ उदाहरण स्वयं रचे और कुछ अन्य ग्रन्थों से उद्धृत किये ।

3- वे आचार्य जिन्होंने लक्षण विवेचन के उदाहरणों के लिये मुक्त अर्थात मुक्तक उदाहरण देने के विपरीत प्रबन्ध शैली का चयन किया ।

4- इन आचार्यों ने छन्द की प्रथम पंक्ति में लक्षण और द्वितीय में उदाहरण दिये ।

उक्त वर्गीकरण के अनुसार संस्कृत भाषा आचार्यत्व का स्थान दिया गया । इन आचार्यों ने भी काव्य शास्त्र को "शास्त्र" की प्रतिष्ठा देने का भारी भगीरथ प्रयत्न किया । काव्य शास्त्र व "आचार्य" को वह प्रतिष्ठा प्राप्त हुई जो धार्मिक, दार्शनिक क्षेत्र में उनको प्राप्त थी । हिन्दी तक आते आते काव्य शास्त्र व "आचार्य" की पूर्ण प्रतिष्ठा हो चुकी थी । वैसे संस्कृत काव्य शास्त्र व आचार्य परम्परा किसी न किसी रूप में 18वीं शताब्दी तक चलती रही । संस्कृत साहित्य का अवलोकन करने पर प्रतीत होता है कि संस्कृत साहित्य उत्तरोत्तर शैलियों की वस्तु बनता गया जो कि लोक जीवन से परे हटे हुए एक कल्पित जीवन और कल्पित संसार का आभास मात्र ही है ।" -1।। आगे अपभ्रंश की विकसित परम्परा में अद्भुत रसायन

1- डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, "हिन्दी साहित्य की भूमिका" ।
पृ० सं० 10 ।

<u>रीतिकालीन आचार्यत्व:-</u> मिश्र बन्धुओं ने इसे "अलंकृत काल" नाम दिया है। दूसरा नाम "शृंगार काल" कहना चाहिये जो अधिक लोकप्रिय है। संस्कृत काव्य शास्त्रानुसार रीति का काव्यात्मा माना था। तुलसी ने भी "कवित्त रीति" का अर्थ कवि मार्ग कहा है। 1।

"केशव" के बाद प्रायः "रीति" शब्द प्रयुक्त होने लगा। चिन्तामणी, देव, मतिराम, सुरति मिश्र दास प्रभृति आचार्यों ने रीति शब्द का प्रयोग किया है। अतः यह "रीति" शब्द काव्य शास्त्रीय विधान का वाचक न होकर व्यापक अर्थ में विधान अथवा शास्त्रीय विधान का ही वाचक है। इस से सिद्ध होता है कि "शास्त्रीय काव्य विधान तथा तत्सम्बन्धी बोध और अभिरुचि की पुनर्स्थापना का यह युग था और भक्तिकालीन आध्यात्मिकता के स्थान पर शैली शिल्प के कलात्मक तत्वों को मान्यता दी गई। इस प्रकार भक्ति साहित्य ने एक आन्दोलन से पल ग्रहण किया तो रीति साहित्य कालीन साहित्य मान जन की कला-प्रियता से जन्म ग्रहण करके एक दीर्घ परम्परा स्थापित कर सका है। इसीलिये इस काल के आचार्यों ने संस्कृत काव्य शास्त्र की पूर्ण समृद्ध परम्परा को भाषा के कगारों में प्रवाहित होने के लिये बाध्य किया। रीतिकाल की दीर्घ अविच्छिन्न परम्परा इसे प्रमाण स्वयं अपने आप में कुछ निजी शक्तियां रखती हैं जो इसे जीवन रस देती है। इन्होंने प्रेम को अलौकिक धरातल से उतार कर शुद्ध मानवीय लौकिक धरातल पर स्थापित किया। इस परम्परा

1- कवि रीति नहीं जानों, कवि न कहायों।

पर सैकड़ों रीतिग्रन्थों की रचना हुई जिनमें अलंकार ग्रन्थ 49, रस ग्रन्थ 30, शृंगार नायिका भेद ग्रन्थ 30, काव्य शास्त्र ग्रन्थ 32, योग 119 । ये भागीरथी मिश्र की सूचीत्र है । हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास के षष्ठ भाग पृष्ठ 306-308में भी इसी प्रकार के सूची आकड़े हैं । उनका योग 114 है ।

इन सब में कवि शिक्षा ग्रन्थ केवल केशव का "कविप्रिया" ही है । इन ग्रन्थों में आचार्यों के आचार्यत्व की सीमायें हैं । सिद्ध है कि केशव व चंद से पहले आचार्यत्व का बीजारोपण ही हुआ था । केशव व चन्द से पूर्व आचार्यों ने नायिका भेद व अलंकार निरूपण में प्रगति की । आचार्य केशव व चन्द के प्रयासों से उनमें प्रौढ़ता आई और आचार्यत्व के क्षेत्र का पर्याप्त विस्तार हुआ । केशव के आचार्यत्व के प्रमुख आधार स्तम्भ तो शृंगार और अलंकार ही रहे पर चन्द के शृंगार के साथ भक्ति योग वीर रस के साथ प्रायशः सभी काव्यांग आ गये । केशव व चन्द के आचार्यत्व की सीमायें निश्चित करने में उनके व्यक्तित्व गुण रुचि, आश्रयदाताओं की मनोवृत्ति का विशेष हाथ रहा है । अतः सर्वप्रथम प्रस्तुत प्रकाश में तत्कालीन कवि दोनों कवियों केशव व चन्द के व्यक्तित्व और उनके काव्य शास्त्रीय क्षेत्र का निर्धारण अभीष्ट है । सं० 1600 से लेकर 1900 तक का युग केशव व चन्द का माना गया है कवि अधिकतर राज्य आश्रय प्राप्त करने के इच्छुक हो उठे थे और शृंगारिक रचना में रुचि रखने लगे थे । इस प्रकार रीतिकालीन कवियों द्वारा रचित राधा कृष्ण का शृंगारिक वर्णन उदाहरणों से

और प्रौढ़ रहा । किन्तु इस स्थिति में "केशव" ने स्वतंत्र काव्य शिक्षा की दृष्टि से "काव्य शास्त्र की पुनः प्रतिष्ठा स्थापित की । यहीं से हिन्दी महाकाव्य का सूत्र पात था । भक्ति का स्थान शृंगार ने ले लिया । इस शृंगारिक काव्य शास्त्र को राज्याश्रय ने भी प्रभावित किया। चूंकि राज्याश्रय से नवीन न थी पुराणिक कथाओं और उपनिषद् युग से राजा जनक आदि, आदि के दरबार में दार्शनिक तत्त्वानुसन्धान के निमित्त शास्त्रार्थ करते थे । वैदिक सूक्तियां अथर्व आदि में राजदरबारी कवियों का वर्णन है । बाण के आश्रयदाता हर्ष और कवियों और आचार्यों के आश्रयदाता राजा भोज, ऐतिहासिक तथ्यों द्वारा सदैव स्मरण के योग्य हैं ।

मध्यकाल में राज्याश्रय का विविध रूप हो गया । मुस्लिम और हिन्दू राजाओं का आश्रय । इन हिन्दू और मुस्लिम शासकों व सामन्तों ने शास्त्रों और काव्य के लेखन और सृजन एवं पुनरुत्थान में सक्रिय रुचि ली । जैसे भानु दत्त, केशव, गोविन्द भट्ट, अकबर, पं० जगन्नाथ, शाहजहाँ के दरबार में रहते थे । राज्याश्रय "विनोद" और विलास के रूप में काव्य और काव्य शास्त्र को प्रेरणा दे रहे थे । इस प्रकार संस्कृत काव्य शास्त्र की प्रेरणा दे रहे थे । इस प्रकार संस्कृत काव्य शास्त्र को स्वीकृत के रूप में स्वीकार कर राज्याश्रय से प्रेरणा लेकर "हिन्दी का आचार्य" बना । आचार्यत्व की पूर्णता के लिये कवि ने उदाहरणों की योजना की । आश्रयदाता की प्रशंसा करना या विनोद विलास से मंडित करना आचार्य कर्तव्य सा निश्चित हुआ । अपने आचार्यत्व के लिये आचार्यों ने काव्य

होता है कि केशव को उद्देश्य उन्हे आचार्य के पद पर अधिष्ठित कर देता है । पर हिन्दी के आचार्य के साथ कवि भी लगा है । आचार्य के लिये उदाहरणों प्रत्युदाहरणों के विषय में पहले कहा जा चुका है उसी आधार पर केशव ने राम-कृष्ण के उदाहरणों में स्थान दिया है । केशव मे चाहे भक्ति भावना न रही हो ।

"रामचन्द्रिका" वैसे एक उदाहरण ग्रंथ ही कहा जा सकता है ।1। पर राम चरित्र की प्रबन्धात्मक प्रकृति के कारण ये ग्रंथ लक्षण से मुक्त हैं । साथ ही रसराज की भूमिका में "राम" का मर्यादा वैशिष्ट चरित्र उपयुक्त नहीं हो सकता था ।इसीलिये राधाकृष्ण अपने समस्त पौराणिक सांस्कृतिक और माधुर्य की पृष्ठ भूमि के साथ इस युग के आचार्यों के उदाहरणों में विराजमान हुए । केशव ने कविप्रिया में अंलकारों दोष आदि के उदाहरण प्रस्तुत किये हैं । इस प्रकार उदाहरणों की सरसता और कवि कर्म ने केशव के आचार्यत्व को प्रभावित किया है । और केशव को हृदयहीन कवि आदि विशेषणों से युक्त करने वाले आलोचक यह भूल ही जाते हैं कि सरसता और भावुकता की दृष्टि से उन्होंने काव्य ही नहीं किया शास्त्रीय आचार्यत्व की दृष्टि प्रधान रही । यही विशेषता केशव को रीतिकालन आचार्यों से भिन्न कुछ विशिष्टता प्रदान करती है । और ध्वनिवादियों के भाँति विशिष्ट अर्थ को ही काव्य की आत्मा माना है।।2।

1- रामचन्द्र की चन्द्रिका बरनत हो बहु छन्द ।

2- मृतक कहावै अर्थ बिन, केशव सुनह प्रवीन ।।

आचार्य शब्द की व्याख्या से सिद्ध हो गया रस, अलंकार, नायिका भेद, तत्कालीन अभिरूचियाँ हैं उनके आचार्यत्व को सुरक्षित रखता है। रामचन्द्रिका कथा सूत्र, पौराणिक वाल्मीकि रामायण से प्रभावित है। चरित्र में राम, सीता, भरत, कौशल्या और हनुमान के द्वारा भक्ति, शृंगार, शोक, करुणा, रौद्र, वीर रस द्वारा विभिन्न भाव व्यंजना के साथ प्रकृति चित्रण, नखशिख वर्णन, संवाद, भाषा, छन्द महत्व, छन्द के भेद, केशव द्वारा प्रयुक्त छन्द में मालिक, दोहा, रोला, घत्ता, अरिल्ल, पादाकुलक, त्रिभंगी, कुंडलियाँ, सवैया, गीतिका आदि 25 छन्दों वार्णिक में भी दंडक, तार तरंगिका, नराच, पंकज के चौरी, तारक आदि है। कुंडलिया उदाहरण के लिये प्रस्तुत हैं। रस रामचन्द्रिका में राम सीता के विवाह है। विवाह वर्णन के प्रसंग में अनुकान्त का भी प्रयोग किया है। चन्द ने भी अनुकान्त छन्दों का प्रयोग किया है। चन्द के छन्द माला भाला, गीता-सीता, भावियाँ आदि शब्दों में अन्त्यानुप्रास है।

रामचन्द्रिका में रौद्र रस का वर्णन कई अध्याय में किया गया है। नराच और पौरुष में वीर रस का वर्णन किया है। सवैया, छन्द में शृंगार, करुणा और शान्त रस प्रभावोत्पादक है।

भावानुकूल छन्द तोटक त्रिभंगी आदि वर्णन उक्त तथ्य रामचन्द्रिका में केशव को आचार्य के स्थान पर बिठाते हैं। वैसे केशव व चन्द ने संस्कृत के प्राचीन आचार्यों की दृढ़ता से ग्रहण किया है। इसी दृष्टि से कहा जा

केशव के आचार्यत्व को स्वीकार करते हुए डा० मिश्र ने लिखा है -"केशव दास का महत्व संस्कृत के आधार पर हिन्दी में काव्य शास्त्र के विषयों पर लक्षण उदाहरणों पूर्ण ग्रंथ लिखने की परम्परा डालने में है और उसमें वे सफल भी हुए हैं । डा० ओमप्रकाश के अनुसार केशव ने भाषा में काव्य शास्त्र को ग्राह्य बनाने का मार्ग दूसरों तक के लिये भी प्रशस्त कर दिया " । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी केशव के ऐतिहासिक महत्व को स्वीकार करते हुए लिखा है कि काव्य रीति का सम्यक समावेश सर्वप्रथम आचार्य केशव ने ही किया ।

दूसरे महाकवि चंद के आचार्यत्व को सिद्ध करने के लिये आचार्य स्वरूप की व्याख्या ऊपर की जा चुकी है । आचार्य पद व्यक्तित्व राज्याश्रय, काव्य शास्त्र उद्देश्य लक्ष्य और लक्षण में रस, अलंकार, छन्द, नायिका भेद आदि का समावेश व प्रभाव होता है । आचार्य के साथ कवित्व लगा है इस समन्वय से आचार्यत्व और कवित्व दोनों प्रभावित होते हैं । इन दोनों का दिग्दर्शन के लिये कवि के काव्य और उसके अन्तर्गत समाविष्ट काव्य शास्त्र सामग्री का समन्वय व स्थिति व स्तर ही चन्द को आचार्य सिद्ध करा सकता है । चन्द ओज और पौरुष के महाकवि अपने महाकाव्य रासविनोद एक नायक में अनेक नायकों का समायोजन व अनेक चरित्र नायकों को अभेद रूप में जन्म वाला महाकाव्य है । ये चरित्र नायक विशेष चेतना से सम्बद्ध होकर राष्ट्रीय चेतना ज्योतिस्फुलिंग के रूप में प्रस्तुत है । ये नायिका नायक भेद, संस्कृत व रीतिकालीन नायिका नायक भेद निर्धारण

एक क्रान्तिकारी कार्य कर रहा है । रामकथा के प्रसिद्ध नायक, प्रतीक चरित्रों के द्वारा युग के ऐतिहासिक वीरों के साथ अभेद रूप में प्रस्तुत होकर नायकों के चित्रण में, साहित्य को नया कलेवर दे रहा है जो कि केशव के चरित्र चित्रण से सर्वदा भिन्न व नवीन और उससे भी अधिक चमत्कारिक है । अपनी इस नवीनता से कहीं भी चरित्र का विरूपी-करण नहीं होने पाता । महाभारत के अनेक नायकों की तरह चंद ने भी शिवाजी, गुरुगोविन्द सिंह, छत्रसाल, प्राणनाथ, धरनीधर, बलवंत राय आदि नायकों के मिले जुले राष्ट्रीय प्रयत्नों का चित्रण है । अतः हम कह सकते हैं कि नायक निरूपण की दृष्टि से चंद कालिदास की रघुवंश शैली को अपनाया है । उनकी ई कथावस्तु पुराकल्प श्रेणी में आती है क्योंकि वह एक नायक की क्रिया को अनेक ऐतिहासिक नायकों के साथ प्रस्तुत करती है । ये नायक भेद, काव्य शास्त्र परम्परा को लेकर भी नवीनता लिये है ।

रस की दृष्टि से चंद का काव्य आचार्य की कसौटी पर सही उतरता है । आप नव रसों के अधिकारी हैं । "नवरस षोडस मधुरस द्वादस भूषन मम"-।श्रृंगार सागर। से स्पष्ट है कि चंद के काव्य के नव रस और भक्ति को मम्मटाचार्य के "अष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः शान्तोपि नवमों रस" के अनुकूल काव्य प्रणयन किया है वहीं दूसरी दूसरी ओर भक्ति रस के सोलह रसों की मौलिक उदभावना का समन्वय कर काव्य शास्त्र को रस का नवीन मार्ग दिखाया है । लीला ललित रसा" की कृति पुष्यता को रस साधना के मर्मी आचार्य ने रस को अखंड मानवीय चेतना रस से पूर्ण करके

आसीन है ।

मुख्य रूप से केशव की रामचन्द्रिका और पं० का रामविनोद अपनी पैतृक "रामकथा" को लेकर चले हैं । दोनों महाकाव्य अपने नियमानुसार लिखे हैं । दोनों के नायक, नायिका लक्षणानुसार, धीरोदात्त, धीर, गम्भीर, [illegible], [illegible], वातावरण के अनुसार भाव, भाव को लेकर चले हैं । दोनों में अलंकार योजना, छन्दों का प्रयोग, रस निरूपण और काव्य शास्त्रों के नियमों का पालन किया गया है इस दृष्टि से केशव की रामचन्द्रिका और पं० का रामविनोद आचार्य की दृष्टि से अपनी कसौटी पर उचित स्थान पर हैं । और इन काव्य ग्रन्थों के द्वारा दोनों कवि आचार्यत्व को प्राप्त होते हैं ।

" हिन्दी साहित्य के संवर्द्धन में " चन्द दास " और केशव के प्रदेय का तुलनात्मक मूल्यांकन "

हिन्दी साहित्य का मध्ययुग साहित्यिक वैभव की दृष्टि से अत्यन्त महत्व पूर्ण रहा है । इस युग के कलाकारों ने कवि कर्म के साथ आचार्य की पदवी प्राप्त की और साहित्य के गूढ़तम और अधिक गंभीरतम विषयों पर दृष्टि डाल, उनका विवेचन व कृतित्व किया । वह हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है । यही गम्भीरता उनके आचार्यत्व का क्षेत्र है । यह क्षेत्र कवि के काव्य शास्त्रीय संस्पर्श से विकसित होता है, भक्ति काल में शैली और तत्सम्बन्धी शास्त्र की उपेक्षा हुई थी, इस उपेक्षा की प्रतिक्रिया से काव्य शास्त्रीय पुनःउत्थान, शिल्प और शिक्षा विधान की पुनः स्थापना हुई । रीतिकाल प्रारम्भ में कवि केशव इस रीति नवीन परम्परा के अग्रदूत हुए, तो अन्तिम चरण में रीति व भक्ति मिश्रित नवीन परम्परा के संचालक या संवर्धक कवि " चंद 1 हुऐ, । रीतिकाल के इन दोनों कवियों का, साहित्यिक संवर्द्धन व आचार्यत्व का सामान्य परिचय के लिये इनके सैद्धान्तिक व साहित्यिक पक्षों का अध्ययन अपेक्षित है वैसे " केशव " व चन्द दास " दोनों आचार्यों में अधिकांश वैशिष्ट्य ही मिलता है परन्तु ये वैशिष्ट्य केशव व चन्ददास पूर्ववर्ती एवं परवर्ती काव्य शास्त्रीय परम्परा के बीच की स्थिति के प्रभाव से मिलता है । स्वयं दोनों की राजनीतिक व सामाजिक भिन्नता प्रभाव के कारण काव्य-विचार धारा में वैशिष्ट्य नहीं मिलता । इस प्रकार एक ओर केशव का पक्ष पूर्वाग्रह युक्त विश्लेषणात्मक सैद्धान्तिक अध्ययन से अपेक्षा रखता है तो दूसरा ओर चन्द का पक्ष आध्यात्मिक मूल्यों का सैद्धान्तिक अध्ययन विवेचन

के लिये प्रस्तुत है उक्त दोनों कवियों की कृतियां और उनकी गम्भीर अध्ययन से प्रभावित विचार धारा का प्रदेय साहित्य का सर्वेक्षण करती है, उस साहित्यावलोक से पहिले काव्य के अन्तरंग और बहिरंग प्रदेय का तुलनात्मक मूल्यांकन करना है ।

अन्तरंग और बहिरंग प्रदेय : पहिले सन्दर्भ में केशव व चन्द के आचार्यत्व के सम्बन्ध में उनके ग्रंथों में निरूपित प्रमुख काव्यांगों का अध्ययन किया गया है वे विषय कवि चन्द व केशव ने विस्तार के साथ लिये थे, समीक्षात्मक अध्ययन के लिये वे विस्तार अपेक्षित था, क्योंकि इनके द्वारा, दोनों कवियों का काव्य शास्त्र में विशिष्ठ स्थिति भी है । इन विषयों के द्वारा दोनों के " अन्तरंग व बहिरंग क्षेत्र का प्रदेय " - देखना है ।
सर्वप्रथम " केशव " दास के इन विषय को लेना है, जिससे उनका स्थान ऊंचा न हो सका - वे तीन प्रकार के हैं :-
।।। दोष निरूपण, वृत्ति निरूपण व चित्र काव्य निरूपण इन्हें केशव ने अधिक विस्तार से निरूपित नहीं किया जितना की काव्यांगों के निरूपण को विस्तार दिया है ।
कविप्रिया: - कविशिक्षा से सम्बन्धित विषय - कवि समय, नखशिख वर्णन संख्या नियम, बारहमासा तथा सामान्यालंकार के अन्तर्गत निरूपित काव्य के वर्णन विषय ।
दोष निरूपण :- का सम्बन्ध शब्द अर्थ रस-भेद उपभेद आदि हैं । इस दोष निरूपण में उनका अपना निजी दृष्टिकोण है । केशव ने दो स्थानों पर

"बारहमासा" :- कविशिक्षा के अन्तर्गत कविप्रिया में बारहमासा का वर्णन किया गया है । अतः काव्यांगों के साथ केशव उक्त विषय वस्तुओं को स्थान देकर बहिरंग क्षेत्र द्वारा बाह्य क्षेत्र को अनेक विषय प्रदान किये । दूसरी ओर छन्द भी संस्कृत व वैदिक और उपनिषद काव्य शैली से प्रभावित हो अपने काव्य में उन्होंने काव्यांगों अलंकार, छन्द, रस आदि के साथ स्तुति, कविशिक्षा, बारहमासा के व रीति के साथ रीतियुगीन शृंगारिकता में भक्ति का समन्वय कर एक नवीन विचार धारा को प्रवाहित कर साहित्य के सम्मुख आध्यात्मिक मूल्यों का वैज्ञानिक विवेचन प्रस्तुत किया है । महाकवि चंद ने क्रान्ति और युद्धों से जुड़ कर कविता को क्रान्ति धर्मिता के वास्तविक अर्थों में प्राणवत्ता भी प्रदान की है । केशव रीतिकालीन शृंगारिकता प्रदान करके परमानन्द भगवान कृष्ण से जोड़ राधा की भक्ति को दिखाया है । तो चन्द निर्गुण भक्ति को नाथ भक्ति, सूफी भक्ति साहित्य के जोड़ वैशिष्ट्य दिखाकर भी पौराणिक परम्पराओं को इन सब का स्रोत दिखाकर प्राचीन वैदिक साहित्य को सम्मान देकर, हिन्दी साहित्य को आश्चर्यचकित कर दिया। उन्होंने ज्ञानाश्रयी प्रेमाश्रयी, व सगुण और निर्गुण को शैव व शाक्त भावना से जोड़ कर जो साहित्य प्रदान किया ऐसा काव्य चिन्तन को विकासवादी और मानवतावाद मूल्य से संयुक्त मान्यता हुई व वैदिक साहित्य से प्रभावित हो जो काव्य सृष्टि करते रहे वही उनके साधक की अनुभूति की अभिव्यक्ति का सघन रूप काव्य सरिता साहित्य सागर में अपना साहित्य का देकर साहित्य संसार को जगमगा

रही है । दोनों का प्रभाव क्षेत्र एक था । विचारधाराएँ भिन्न पर
साहित्य का जो कलेवर दिया वह अपनी विशिष्ट स्थिति लिये हुए है ।
दोनों ब्रज के ग्रन्थों से साहित्य का रूप सज रहा है । इनकी कृतियां
का समीक्षा व अध्ययन आगे के प्रकाश में है । समीक्षा व आचार्यत्व के
क्षेत्र में केशव व चंददास के प्रभाव का चिन्तनीय अनुशीलन- केशव- सर्वांग
रूपक आचार्य है । और चंद भी आचार्य । परन्तु केशव का आचार्यत्व
का क्षेत्र चंद के आचार्यत्व से अधिक विस्तृत है । संस्कृत के आचार्यों में
केशव की मान्यताओं के स्त्रोतों का अनुसन्धान विषय को अधिक विस्तार
प्रदान करता है । जबकि चंद मात्र काव्य ग्रन्थों द्वारा ही ऐसी स्थिति को
प्राप्त करते हैं । आचार्यत्व के रूप निरूपण में निष्पक्ष भाव से भ्रांतियों,
उपेक्षाओं के साथ-साथ लक्षणों एवं उदाहरणों की संगतियों और विसंगतियों
के विचार के द्वारा उसके प्रभाव पर विचार करना अपेक्षित होगा ।
उदाहरण- भाग यदि आचार्य का स्वरचित अंश होता है तो उनकी लक्षा-
नुकूलता कभी-कभी कल्पना, सौंदर्य वृत्ति और रुचि के द्वारा बाधित
हो जाती है । पर केशव एं चंद का ह उदाहरण भाग इन दोषों से बचा
है । उदाहरणों का लक्षणानुकूल बनाने के प्रयत्न में केशव के हृदय हीन होने
वाले आक्षेप क्षेत्र की चिन्ता नहीं फिर भी कहीं-कहीं त्रुटि रही ही गई
है । किसी भी कवि व आचार्य के लक्षण व उदाहरणों कीसंगति पर विचार
करना आवश्यक होता है केशव ने कहीं कहीं लक्षण के पूरक के रूप में
उदाहरणं प्रस्तुत किये हैं । जो बात लक्षण कथन में छूट गई उसकी कमी
उदाहरणों से हो जाती है । उनमें छूट गई उसकी कमी उदहरणों से ही

रस, अलंकार की दृष्टि से भामह दंडी और उद्भट से ही ग्रहण किया है । चंद व केशव ने अलंकार और अलंकार्य में भेद नहीं माना है । रसमूलक वर्ग को विशिष्ट अलंकारों में और चित्रण मूलक कथन विधि के सामान्य अलंकारमें रखा गया । काव्य की सभी सौन्दर्य विधायक उपकरण अलंकार ही है । केशव ने अलंकार का काव्य के अनिवार्य अंग माना है । तो चंद ने अलंकार को गौण स्थान प्रदान किया है । वो भामह, दण्डी, वामन की परम्परा से आच्छादित है । चंद वे केशव दोनों में श्लेष, चित्र, यमक आदि के उदाहरणों में चमत्कार की प्रवृत्ति परिलक्षित है । दोनों भक्ति भावना, श्रृंगारसे प्रेरित उदाहरण विस्तार, नीति व ज्ञान मूलक विस्तार, बहु ज्ञान प्रदर्शक उदाहरण, काव्यशास्त्रीय उदाहरण विस्तार किया है । दोनों में अनेकों छन्दों का प्रयोग किया । भक्ति और रीति परम्परा की मुक्तक परम्परा में दोहे, कवित्त, सवैया, छप्पय कुण्डलियां का प्रचलन है ।

दोनों कवियों के आचार्यत्व संस्कृत भक्ति और रीति परम्परा के प्रभावों से बना है । उसका अनुगमन अन्य कवियों ने किया । दोनों ने अपनी कृतियों द्वारा साहित्य को नवीन गति प्रदान की ।

चंद दास और केशव दास के सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रदेय एवं पाय का अनुशीलन-

चंद दास और केशव के सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रदेय एवं पक्ष का अनुशीलन करते समय यह लिखना अनिवार्य है कि किसी युग का साहित्य उस युग के सामान्य भाव विचारों और महान आकांक्षाओं का प्रकटीकरण होता है ।

प्रवृत्ति परमार्थ से विमुख होकर सांसारिक विषयों की ओर अधिक थी । ।1।
राजलक्ष्मी से मदांध राजाओं की स्फूर्ति के मद्यपान से ही प्रकट होती है ।
और परनारी रमण में वे अपना चातुर्य समझते थे । ।2। राज धर्म, विनय,
वीरता, शील आचार, व वेद पुराण के वचनों की अवहेलना करते थे ।

दर्शन दीबाई अति हानु । हँसि बोले तो बड़ सन्मान ।
जो कैहु तौ अपना कहे । तपने की सी संपत्ति है नहे ।

37, रामचन्द्रिका उत्तरार्द्ध पृ०सं० 49 ।

ते हित की राजाओं को किसी को दर्शन देना बड़ा दान है । हँस कर
बात करना सम्मान की पराकाष्ठा और किसी को अपना कह देना उसे
अक्षय धन प्रदान करना है । हित की बात करने वाला शत्रु और चापलूसी
करने वाला मित्र व मंत्री का स्थान प्राप्त करता था जो लोग रात्रि में
काम क्रीड़ा में व्यस्त रहते वे प्रातःकाल स्नान आदि के बाद लोग तिलक लगा
कर तप जप "मुक्तियों के सार" का उपदेश देते फिरते थे । वेद पाठी ब्राह्मण
वेदों रटे वेद मंत्रों का पाठ करते थे । स्थान स्थान पर कुलकी मठाधीश
थे । शूद्र लोग कर स्पर्श, भुजा, व जंघ, कटि को मुद्रित कर अपनी उच्चता
का ढोंग प्रदर्शन करने का दावा करते थे । अतः केशव के अनुसार तत्कालीन
समाज में चारों ओर पाखंड और दंभ का बोल बाला था । ।3।

1- संतत औषधनि नेरत जाके । राजन सेवक पाप प्रथा के ।
तोते गणिपति दंड संवारे । दण्ड गए धर्म न धारे । 28, विज्ञानगीता पृ०42-43

2- यद्यपि अति उज्ज्वल । तदपि सुमति राजन की दृष्टि ।
रामचन्द्रिका उत्तरार्द्ध पृ0 34। ।

3- धर्म वीरता विनयता, सत्यशील आचार,
राज्यश्री न गने कछू वेद पुराण विचार । 22, रामचन्द्रिका उ0 पृ0 43

इन तत्कालीन परिस्थितियों का प्रभाव केशव के रसिक प्रिया, कविप्रिया और रामचन्द्रिका में स्पष्ट प्रतिबिम्बित है । इन सामाजिक स्थितियों की परछाईं केशव के साहित्य में यत्र तत्र दृष्टिगोचर होती है तथा राज्याश्रय के कारण राजाओं की मनस्तुष्टि के लिये राधाकृष्ण ओट में प्रेम शृंगारिक अतः तद्रूप उद्भावनायें ही तत्कालीन काव्य क्षेत्र में वासनामय शृंगारिक की प्रचुरता के यही प्रमुख कारण है । इसी वासना मय प्रेम ने प्रेम भक्ति की आत्मिक शुद्धता ने लौकिक ऐन्द्रियता का रूप धारण कर लिया । स्वाभाविक सौन्दर्य में आयी चमक दमक विशेष आकर्षक बनी । फलस्वरूप भाव व्यंजना में कला को अधिक महत्त्व दिया और कवियों का ध्यान काव्य आत्मतत्त्व से हट कर काव्य बाह्य सौन्दर्य जैसे अलंकार, उक्ति वैचित्र्य, वाक्पटुता और कल्पना की ओर अधिक जाने लगा । अतः काव्य गुण इतने प्रिय हुए कि काव्य प्रेमी और काव्य विवेकी को काव्य शास्त्र की जानकारी आवश्यक प्रतीत होने लगी । अतः संस्कृत काव्य शास्त्र का ठेक हिन्दी में भी काव्य शास्त्र के ठेक ग्रन्थ प्राप्त करेन की उत्सुकता बढ़ी । संस्कृत रीति काव्य शास्त्र का प्रभाव हिन्दी रीति साहित्य पर पड़ने से हिन्दी में भी काव्य लक्षण, रस, अलंकार, नायिका भेद, शब्द शक्ति काव्य गुण आदि पर ग्रन्थ लिखने की प्रथा चल पड़ी और ऐसे समय में केशव दास अपनी प्रचुर रचनाओं के द्वारा इस प्रणाली के मुख्य प्रवर्तक व प्रसारक कवि हुए और तत्कालीन सामाजिक व राजनीतिक के कारण जो प्रभाव केशव पर रहा तथा समाज की मांग को पूरा करने के लिये अपने पाँडित्य से केशव ने पाँडित्य पूर्ण अलंकारिक शैली वाले ग्रन्थों की रचना । इसीलिये

केशवदास जी का आचार शैली के काव्यकारों में अग्रगण्य है । उसी आधार पर उनकी रचना को 4 भागों में बाँटा गया । 1।

1- चारण काल की लौकिक वीर गाथा काव्य की प्रणाली पर वीर काव्य ।वीरसिंह देव चरित्र, जहाँगीर जस चंद्रिका, रतनबावनी । ।

2- तुलसी के भक्ति काव्य की तरह प्रबन्ध काव्य ।रामचन्द्रिका।

3- संस्कृत के साहित्य पद्धति पर काव्य रीति के लक्षण ग्रन्थ ।कविप्रिया, रसिकप्रिया, रामालंकृत मंजरी।

4- दार्शनिक ग्रन्थ- विज्ञान गीता- यह केशव की सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव के ग्रन्थ है ।

केशव के विपरीत चंद औरंगजेब के काल के कवि माने जाते हैं । उनके काल की सामाजिक व राजनीतिक स्थिति केशव के विपरीत थी । औरंगजेब द्वारा हिन्दू जनता पर अत्याचार हो रहा था । उन्हे बलात मुसलमान बनाया जा रहा था । उन पर जजिया कर लगा दिये गये । मन्दिरों का विध्वंस किया गया उनके स्थान पर मस्जिदें बनाई जा रही थीं । हिन्दुओं की धार्मिक व सामाजिक दशा शोचनीय थी । इन अत्याचारों को मिटाने के लिये, गोकुल में गोकुल परिवार, जाट व सतनामी, मराठा शिवाजी, पंजाबी सिक्खों, में गुरुगोविन्द सिंह आदि नेता आदि नेता आदि ने युद्ध आरम्भ किये । देश अत्याचारों व यातनाओं से विकल उठा था । उस समय हुए कवि चंद दास जो औरंगजेब के अत्याचार से तंग आकर इत्वा फतेहपुर आ गये । यहाँ इत्वा फतेहपुर के ग्राम के निवासी संत मलूकदास

1- आचार्य केशव दास - डा0 हीरालाल दीक्षित ।

"ज्ञान सागर" के रचयिता संतदास सूफी कवि अब्दुल समद, अपनी मौजा तथा धर्मांतराय शोधी के दरबारी कवियों का आश्रय स्थल था । यहीं से अत्याचारों से बचने के लिये ईश्वर से उपासना करने लगे । उसी आस्था, योग साधना का प्रत्यक्ष रूप उनके काव्य पर दृष्टिगोचर होता है । पंजाब के रणजी होने के कारण समाधिस्थ गुरु महत्ता को योग साहित्य में स्थान दिया । शिव सिंह सारंगी से सिद्ध है कि वे अध्यात्म को गुरु की प्रतिष्ठित करके भक्ति आन्दोलन को जोड़ देते हैं । प्राण में परमात्मा में ध्यान किया है । उसी तत्व के आधार और गहन, गूढ़, गम्भीर योग साधना के भाव उनके ग्रन्थों में दिखाई देते हैं । उन्होंने अपने रामविनोद में योग के आसनों देह शोधन एवं प्राणायाम द्वारा कुंडली शक्ति से चक्रों के भेदन एवं ब्रह्म रन्ध्र का वर्णन किया है । उसी शक्ति जागरण द्वारा औरंगजेब व अत्याचारों को नियंत्रित किया जा सकता है । उस अन्तर्मुखी साधना करने वाले साधक कवि ने चित्त को विराट मानव समाज के प्रश्न में केन्द्रित कर दिया । यही मानव चिन्तन की रामविनोद में प्रस्तुत है । जाया प्रश्न आत्मा शोधी के द्वारा एक नवीन साधना की पुष्टि करने के लिये अनेक ग्रन्थों को प्रस्तुत किया है जैसे रामविनोद, कृष्णविनोद, मधुविहार, शृंगार सागर, शिवसिंह सारंगी, सभी ग्रन्थ कुण्डलिनी साधना के गूढ़तम रहस्यों को शृंगार के परिवेश में में सुलभ करा देने शृंगार साहित्य साधना की महान कृति है । अपने सामाजिक परिवेश से प्राप्त दुख का चित्रण योग साधना ज्ञान उसे साहित्य के द्वारा प्रसारित किया है ।

अतः ये कहना उचित होगा कि सामाजिक और राजनीतिक

परिवेश के प्रभाव साहित्यकार को नवीन दिशा प्रदान करता है, उसी से भर कर काव्य या साहित्य रचना होती है । इन पर्यावरण से कलाकार बच नहीं सकता ।

चन्द व केशव का धरातली मनन अनुचिन्तन

केशव ने हिन्दी साहित्य को अनेकों ग्रन्थों को रच कर काव्य शास्त्रों, का रच, सिद्धान्तों को दिया, ग्रन्थों को दिया जो साहित्य की अमूल्य निधि है, किन्तु उसको दिग्दर्शन उनकी काव्य साधना की झाँकी से ही प्रस्तुत किया जा सकता है ।

केशव दास के अमूल्य ग्रन्थ :-

(1) राम चन्द्रिका (2) कविप्रिया (3) रसिक प्रिया (4) विज्ञान गीता (5) रतन बावनी (6) वीर सिंह देव चरित (7) नख शिख व (8) जहाँगीर जस-चन्द्रिका ये प्रामाणिक ग्रन्थहैं ।

इन ग्रन्थों के अतिरिक्त अप्रामाणिक ग्रन्थ भी हैं जैसे वैधुनि कथा, हनुमान जन्म लीला बाल चरित्, आनन्द लहरी, रस ललित, कृष्ण लीला और अमिबूट । इन ग्रन्थों की कथावस्तु प्रस्तुत करना अनिवार्य है जिससे कवि के कथा आधार से तात्कालीन सामाजिक राजनीतिक, धार्मिक देन का ज्ञान हो । यह साहित्य की परीक्षा रूप प्रदेय है ।

रसिक प्रिया :- संवत सोलह से बरस बीते अठतालीस, ।
कार्तिक सुदि तिथि सप्तमी बार बरन रजनीस (1)

जिसकी रचना ओरछा राजा इन्द्रजीत आज्ञा से रची गई । चूंकि

---

(1) रसिक प्रिया पृ0 ।

" इन्द्रजीत " की विषय वस्तु का आधार रखा गया किन्तु काव्य रसिकों के मनोरंजन " का भी यही भाव निहित है । कला पक्ष के काव्य दोषों गुण रस वृत्ति का वर्णन के साथ श्रृंगार रस की प्रधानता है जो ग्रन्थ के तीसरे चौथे भाग में कवि ने श्रृंगार रस के विविध तत्वों सांगोपांग वर्णन है " जिसके अन्तर्गत अन्य रसों को भी युक्त किया गया है । आगे नायक नायिका भेद व चेष्टा व स्वभाव दूतत्व वर्णन है । रस के भाव स्थायीभाव अनुभाव व व्यभिचारी भाव व हाव का उल्लेख है । फिर श्रृंगार में वियोग वर्णन पुनः मान के भेद, रस व वृत्तियों के वर्णन के साथ काव्य दोष बताये हैं । (2) नख शिख इसमें राधा नख शिख वर्णन के लिये कवि परम्परा सिद्ध उपमान बताये गये है तथा उन उपमानों के द्वारा अंग विशेष का वर्णन किया है । (3) इसी नख शिख वर्णन कवियों को शिक्षा देती रही । (4) इसमें उपमालंकार का विस्तृत व्याख्या की है । इस ग्रन्थ का रचना काल कविप्रिया के अनुसार 1853 वि0 संवत प्राप्त होता है ।

(3) कविप्रिया - ये ग्रन्थ भी केशव दास जी के रसिक प्रिया ग्रन्थ के समान है । विदित होता है यह काव्य ग्रन्थ- काव्य शिक्षा देने के विचार रख कर किया गया था क्योंकि इसमें काव्य दोष, कवि भेद, कवि रीति तथा सोलह श्रृंगारों की विस्तृत व्याख्या की गई है । काव्यालंकार उनके

---

(2) रसिक प्रिया पृ0 10-11

(3) कवि प्रिया सटीक, सरदार पृ0 सं0 16।
कवि जो पूरब पंडितनि ताकि विमानी पान
तिनकी कविता अंग ताकी विमानी जान उपमा कही बखानि

भेद अभेदों, चित्रालंकार, दोहे में उदाहरण द्वारा कवित्त व सवैया में उदाहरणों को प्रस्तुत करना सिद्ध करता है कि यह ग्रन्थ काव्य शिक्षा देने की प्रेरणा से लिखा गया ।

14। राम चन्द्रिका : 1658 में की रचना मानी गई है जो भक्ति परम्परा का वाल्मिकी रामायण के अनुरूप है । इस काव्य में अन्य ग्रन्थों के अपेक्षा सबसे अधिक छन्दों का प्रयोग किया गया है ।

15। वीरसिंह देव चरित्र - जो वीर रस का ग्रन्थ मधुकर व वीर सिंह के ग्रन्थों का ऐश्वर्य प्राकृतिक सौंदर्य, ओरछा नगर वर्णन आदि राज्य व राजनीति का वर्णन इतिहास के दृष्टि से महत्व रखता है ।

16। रतनबावनी - वीरसिंह देव पुत्र कुंवर रतन सेन को आधार विषय वस्तु मान रचा गया, अतः उनके गुणों का गान ग्रन्थ है जो राजपूताने की डिंगल शैली व छप्पय छन्दों के प्रयोग से लिखा गया ।

17। विज्ञान गीता :- ये माया मोह, विवेक आदि से पूर्ण दार्शनिक ग्रन्थ है जिसमें बुद्धि विवेक राजा व श्रद्धा करुणा पटरानियां है इस प्रकार भक्ति कृष्ण तृष्णा- चिन्ता निन्दा दासियों के रूप में वर्णित है आदि दार्शनिक तथ्य व मनोवेगों के साथ सम्बद्ध करके रचा गया है । ये दार्शनिक भाव का तात्कालीन ऐतिहासिक घटनाओं पात्रों व तत्वों के साथ एकाकार करके सुनियोजित कर काशी में कु पहुंच माया के युद्ध पर विवेक विजय पाता है दिखाई देता है ।

18। जहांगीर जस-चन्द्रिका :- संवत 1669 को रची गई मानी

जाती है जिसमें शहंशाह जहाँगीर के प्रशंसा व आशीष देने का वर्णन है ।

इन सब काव्यों में किसी न किसी काल की शैली को अपनाया गया है जैसे चारण काल की याद दिलाने वाले ग्रन्थ रासा के अतर जिसमें " विज्ञान गीता " निर्गुण भक्ति कवि प्रिया, रसिक प्रिया, नखशिख वर्णन वाले काव्य रचना रीति साहित्य का अनुकरण करते हुए दिखाई देते है चन्द्रिका रामानन्दी प्रभाव से पूर्ण " राम " भक्ति की ओर इंगित करती हुई उनके पाण्डित्य की कसौटी है । ये ग्रन्थ काव्य शास्त्र व रीति भक्ति व चारण काल के पद्धति से - साहित्य के अनेक साहित्य सामग्री प्रदेश करते हैं, और साहित्यिक के लिये अनुकरणीय है तथा साहित्य के विविध काव्य शास्त्र अलंकार विवेचना, रस, छन्द अलंकार, कवि शिक्षा पाने की बहुमूल्य शिक्षाप्रद सिद्धान्त है । जो उनके ग्रन्थ शास्त्रों के द्वारा साथ के अन्तरंग व बहिरंग प्रदेशों को दिखाया है ।

केशव दास 16वीं शताब्दी के महान कवि, योद्धा, दार्शनिक, भौतिक क्रियाओं के ज्ञाता, राम भक्त, उनका राम अक्षर पुरुष - है अर्थात वाणी उप नाद से सृष्टि की उत्पत्ति का बोध करने वाले अक्षर पुरुष को देह ब्रह्म " को देखने का व यौगिक क्रियाओं द्वारा प्राप्त करने का मार्ग गुरु सहयोग से बता कर, कबीर दादू नानक की गुरु महत्ता या वैदिक साहित्य के ॐ गुरु ब्रह्म, गुरु देव देवा " की महत्ता को प्रगट करने वाले सगुण व निर्गुण को एकाकार कर योग साधना के तत्वों का दिग्दर्शन अपने काव्य से प्रस्तुत कर, साहित्य, दर्शन इतिहास, समाज को एक नवीन देन है ।

कृतियां :-

।1। राम विनोद ।2। कृष्ण विनोद ।3। भक्त विहार
।4। शिव सिंह सरोज ।5। राम माला, चन्ददास पदावली आदि
ग्रन्थों की प्रमाणिकता - " चन्ददास । कवि राम विनोद का एक
अध्ययन चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित कृत ग्रन्थ से विदित होता है ।
।1। राम विनोद " - राम परम्परा पर आधारित महाकाव्य की
राम परशुराम के कथा के साथ समसामयिक स्थिति व पात्रों के साथ
एकाकार करके सुनियोजित करके नवीन व मौलिक पद्धति से रचा गया,
जिसमें भारतीय दर्शन के वैष्णव, शिव, बौद्ध , जैन वैदिक तांत्रिक योग
व भक्ति की विभिन्न पद्धतियों को दिखाया गया है इतिहास दार्शनिक
चिन्तन से युक्त सामाजिक दर्शन को भी अपने विषय वस्तु , रचना पद्धति
एक शैली में लपेटे हुए है जिसमें 18वीं शताब्दी के औरंगजेब कालीन
अत्याचार के विरुद्ध क्रान्ति करने वाले वीर पुरुष बैरागिदास की गौरव
मय कथा को संयुक्त किया गया है ।

।2। कृष्ण विनोद - ये भी कृष्ण कथा रूपक द्वारा समकालीन
तत्कालीन ऐतिहासिक युद्ध व गुरु गोविन्द सिंह व चन्द दास प्रेम का व्यक्त
करने वाला काव्य है ।
।3। भक्त विहार :- एक जीवनी साहित्य का परिचय देने वाला
महत्वपूर्ण ग्रन्थ है जो कि हिन्दी साहित्य के मूल्यांकन का स्थाई आधार
होने के कारण महत्वपूर्ण ग्रन्थ है ।
।4। श्रृंगार सागर - निर्गुण साधना को रसाभास बनाने वाले गीत
गोविन्द ग्रन्थ है ।

(5) शिव सिंह सरोज :- यौगिक क्रियाओं व योग साधना द्वारा समस्त वस्तु इच्छा संसार में विजय पाई जा सकती है, ये राज या साधना वाला महत्वपूर्ण ग्रन्थ है ।

राग माला - संगीत कला की राग रागनी से सम्बन्धित वेदान्त साधना से युक्त ग्रन्थ भक्ति की भूमि से इन रागों को सम्बद्ध करता है । इसी प्रकार चन्द दास के रासो चन्द दास पदावली, गीता, भागवत पुराण, भारतीय वैदिक धर्म, साहित्य दार्शनिक परम्परा आदर्श, योग दर्शन, से युक्त होकर अपने साथ ऐतिहासिक और सामाजिक कलेवर में समाती हुई प्रवाहमयी है जो साहित्य की अमर व अनुपम अनोखी कृतियाँ है जब में साहित्य को ग्रन्थ का कलेवर देकर प्रभावान बना रही है ।

दोनों कवियों की कृतियां ग्रन्थ अपने स्थान पर महत्वपूर्ण हैं, एक (शिव) भाषा साहित्य काव्य शास्त्र, शब्द कोश अलंकार कर्म रस योजना व विवरण की सामग्री प्रदान करके अपने ग्रन्थों में अनुकरण रस व अलंकार भेद विभेद दे कवि शिक्षा का पाठ देता है तो दूसरी ओर चंद काव्य शास्त्र तत्वों के साथ प्राचीन वैदिक साहित्य का वेदान्तिक दार्शनिक चिन्तन, गौरव, योग साधना व यौगिक क्रियाओं से आत्म को वश में करने की विधि प्रदान करता है । राष्ट्र रक्षा प्रेरणा की चेतना जो रीतिकालीन युग के नवीन व मौलिक प्रवृत्ति की उनकी सशक्त स्थिति को प्रकट करता है जो कि उनके ग्रन्थों द्वारा प्रकट होता है ।

" महाकवि चन्द दास की रामविनोद व केशव की राम चन्द्रिका "

शोध विषय कवि चन्द दास की राम विनोद एवं केशव दास जी की राम चन्द्रिका का सार तत्व, यहाँ प्रस्तुत है दोनों कवियों के राजनीति, सामाजिक व धार्मिक परिवेश का प्रभाव उनके द्वारा निर्मित साहित्य पर पड़ा । दोनों कवियों का काल भिन्न भिन्न था । उन विभिन्न कालों की धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक स्थितियाँ भी भिन्न भिन्न थीं । इसलिये दोनों कवियों के साहित्य में भी उस वैविध्य की झाँकी दिखाई पड़ती है ।

<u>केशव दास जी -</u> कवि केशव दास जी मुगल शासक जहाँगीर के काल । सन् 1606 से 1627 ई० के, ओरछा नरेश वीर सिंह देव के राज्याश्रित कवि थे उनके समस्त ग्रन्थों की रचना ओरछा राज्य की छत्रछाया में हुई थी । तत्कालीन युग सुख शान्ति व समृद्धि का युग था । राजा महाराजा, विलासिता के प्रमाण हैं । भिन्न भिन्न राज्यों ने भी सुख शान्ति का प्रसार किया । मुगल शासकों ने अनेकों कलाओं को प्रसार करने में सहयोग दिया । कवियों विद्वानों और कला विदों को भी विशेष प्रोत्साहन मिला । राजा महाराजाओं ने भी मुगल शासकों का अनुकरण किया और कवियों को प्रोत्साहन दिया । इस सम्मान को प्राप्त करने के अनेक कवि दरबारों में आने लगे । राजाओं ने उन्हें श्रृंगारिक कविता करने के लिये बाध्य किया । कवियों को भक्ति काल की राधा-कृष्ण व गोपियों के पवित्र प्रेम का आलम्बन भी मिल गया । भक्त कवियों ने अलौकिक की अभिव्यंजना की थी । परन्तु जनता को उसमें श्रृंगारिकता अधिक मिली, राज्याश्रित कवियों को भी अपने आश्रयदाता राजाओं की मनोवृत्ति की तृप्ति के लिये, विषय मिल गया । तथा राधा कृष्ण की ओट में वासनामय कलुषित प्रेम की उद्भावनायें की गईं । ऐसी स्थिति में केशव जी राजदरबारी कवि थे, वे भी श्रृंगारिक कविता के रंग में रंगने से न बच सके । सुख समृद्धि के युग में जहाँ शासकों में विलासता बढ़ी उसका समाज पर भी प्रभाव पड़ा तथा सामाजिक स्थिति पर भी उसका प्रभाव पड़ा इसी सामाजिक स्थिति अधःपतन को प्राप्त हुई । अगर राज्य वर्ग ऐश्वर्य एवं विलासता में मग्न था, तो प्रजा वर्ग पाखण्ड दम्भ, चोरी व व्यभिचार की वृद्धि हो रही थी, वर्ण व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो रही थी । सभी वर्ण अपने अपने कर्तव्यों से विमुख हो रहे थे । शासक वर्ग को

विलासिता का प्रभाव समाज के साथ धर्म पर पड़ा । धार्मिक कहलाने वाले लोग, निरन्तर रात्रि में काम क्रीड़ा में प्रवृत्त रहते थे । वे प्रातः स्नान आदि कर स्वच्छ स्वच्छ वस्त्रों को धारण कर टीका लगा, दूसरों को पाप तप, व धर्म का उपदेश देते फिरते थे, तथाकथित धर्म, संयम व योग से वंचित होकर शरीर सेवा, इन्द्रिय सुख भोग को ही ईश्वरोपासना समझते थे, ब्राह्मणों को वेद ज्ञान न था, केवल मंत्रों को रट कर उसका उच्चारण मात्र करते थे । इन सभी त्रुटियों वा स्थितियों का " केशव दास जी ने अपने ग्रन्थों में वर्णन किया, इन स्थितियों के प्रभाव से कवि " केशव " भी नहीं बच सके । उनका साहित्य भी श्रृंगारिक हो गया । रसिक प्रिया " इसका उदाहरण है । जो कि राजा इन्द्रजीत सिंह की प्रेरणा व आज्ञा से 1648 में लिखा गया । श्रृंगार रस की जानकारी के लिये यह " रसिक प्रिया " महत्वपूर्ण ग्रन्थ है , तथा काव्य सौंदर्य की दृष्टि से भी महत्व पूर्ण है । नखशिख " इसमें राधा के " नख से शिख " तक प्रत्येक अंगों का वर्णन है जो कि कवि ने कवियों को " नख शिख " शिक्षा देने के लिये रचा था ।

बहि विधि वरणहु सकल कवि अविरल छवि अंग अंग,

कवि प्रिया - लटीक सरदार,

पृ0 सं0 294

अन्य ग्रन्थों की रचना भी आश्रयदाताओं को काव्यानन्द, या उनके यश वर्णन के लिये की । जैसे - " वीर सिंह देव चरित " - इस ग्रन्थ में भी तत्कालीन सामाजिक, राजनीति, धार्मिक व संस्कृत साहित्य का पूर्ण प्रभाव दृष्टिगोचर होता है ।

" रामचन्द्रिका " धार्मिक ग्रन्थ होकर भी श्रृंगार प्रधान काव्य के साथ काव्य कौशल कलेवर से परिपूर्ण है जो रीति काल की विशेषता थी ।

चन्द - दूसरी ओर " चन्द " कवि मुगल शासक औरंगजेब काल के कवि माने गये हैं । औरंगजेब के शासन काल में हिन्दुओं को किसी प्रकार से राजनीति, धार्मिक व सामाजिक स्वाधीनता नहीं थी । उन्हें उच्च पद नहीं मिल सकते थे । धर्मानुसार वे अपना तिलक लगाने, तीर्थ यात्रा करने, त्यौहार मानने की स्वाधीनता नहीं थी ।

धर्म व साहित्य पर प्रहार हो रहे थे । युद्धों से जनता परेशान थी । उनकी आर्थिक दशा शोचनीय हो गई थी । मन्दिर तोड़े जा रहे थे , उन्हें जबरदस्ती मुसलमान बनाये जाने के प्रयत्न किये जा रहे थे । अतः भारतीयों की आत्मा विद्रोह करने के लिये उद्यत हो गई । अनेकों वीर पुरुषों, जैसे गुरु गोविन्द सिंह, छत्रसाल, भगवन्त राय खीची शिवाजी, आदि शासक व नेताओं ने औरंगजेब की धार्मिक असहिष्णुता की नीति का विरोध किया ।

गोकुल परिवार ने केशव मन्दिर तोड़े जाने पर, सतनामियों, जाटों, राजपूतों, सिक्खों व शिवाजी धर्म व हिन्दू सभ्यता व संस्कृति की रक्षा हेतु युद्ध आरम्भ किये । " चन्द " लाहौर के रहने वाले थे । गुरु गोविन्द सिंह के दरबारी कवियों की सूची में उनका नाम पाया गया किन्तु उनके ग्रन्थ । हस्वा । या हस्वा फतेहपुर । हंस पुरी । में पाये गये जिससे प्रमाणित होता है कि कवि योद्धा व भक्त थे । युद्धों से विरक्त होकर पंजाब छोड़ हस्वा को आ आये और योग साधना करके ज्ञान को प्राप्त किये । ऐसी राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक दयनीय स्थिति को देख उन्होंने जो साहित्य की रचना की उसमें रावण के रूप में औरंगजेब तथा राष्ट्ररक्षक के रूप में गुरु गोविन्द सिंह राम रूप में अंकित किया । उन पात्रों को आधार मान उन्होंने " राम विनोद " की रचना की जो दुहरे अर्थ को लेकर चली है, ये कथा पौराणिक राम कथा को लेकर तत्कालीन राजनीतिक दुराचारी शासक औरंगजेब रावण व गुरुगोविन्द सिंह के राम रूप को लेकर चली है, सीता से जिया राज्यों को मुक्त करने का संकेत किया गया है । इस प्रकार दोनों कवियों के ग्रन्थ तत्कालीन परिस्थितियों के प्रभाव से प्रभावित है ।

व्यक्तित्व व कृतित्व दोनों कवि के व्यक्तित्व व कवित्व के लिये यही कहा जा सकता है की दोनों आध्यात्मिक थे । केशव ओरछा के राजा वीर सिंह देव के दरबारी कवि, व चन्द हस्वा शासक भगवन्त राय खीची के संरक्षण में थे । दोनों विद्वान कवियों ने अनेकों ग्रन्थों की रचना की । दोनों युद्ध व पर्यटन में अपने शासकों के साथ साथ रहते थे । तथा चंद के कई युद्धों में भाग लेने के प्रमाण प्राप्त होते हैं । चंद के ग्रन्थों से उनकी प्रतिभा, स्वभाव, जीवन दर्शन शिक्षा व उनके पाण्डित्य का

दिग्दर्शन होता है । मिष्टगिरा गुन छमा प्रणाली । निवारहित सहित अविनाशी । से चंद की न्यायप्रियता का ज्ञान होता है । इसया सवारोष में चंद को मृदुल कहा गया है । जो उनके मधुरभाषी होने की बात प्रमाणित करता है । " सत्य व्रत सत्य आकार " छ0 ।44 रासो तथा रहे सत्य धारी सत्यवादी तिरसिद्ध सारंगी । सत्यवादी होने को प्रमाणित करता है । क्षत्रिय होने के कारण योद्धा प्रतीत होते हैं जिन्होंने औरंगजेब के अत्याचारों के विरुद्ध अस्त्र ग्रहण करके जन आन्दोलन का जागरण किया । उनके अतिरिक्त " रामविनोद " में उनकी प्रतिभा, वेद पुराण, धर्म शास्त्र, नीति शास्त्र के गहन अध्ययन का ज्ञान होता है जिसकी छाप उनके काव्य पर पड़ी है ।

पिंड प्राण आदि केवल त्रिविध साची बात कही " वाक्य से सिद्ध होता है कि चंद ने पिंड, प्राण, और आत्मा की सिद्धता के वे साधक थे । चन्द ने राम विनोद " में अनेक स्थलों पर चाप छटिका, चक्र आदि ज्योतिषि शास्त्र के शब्दों का प्रयोग किया है जो " चंद " के ज्योतिषिद होने का सूचक है । उनके साहित्य अध्ययन से उनकी मधु विद्या, काय चिकित्सा ज्ञान, संजीवनी विद्या, इतिहास ज्ञान, का पता चलता है । अतः कहा जा सकता है कि महान विद्वान अनेकों शास्त्रों के ज्ञाता थे । उन्हीं गहन अध्ययन, योग्यताओं और प्रतिभा पांडित्य के कारण वे लोक प्रिय थे । श्री एम0एम0 किरन जी एक अनूठे उर्दू वाले ने चंद की रचना के कंठस्थ किये हुए सुना । चंद ने स्वयं लिखा है कि उन्हें देश विदेश वाले जानते थे " कीरति देश-विदेश बखाने । उक्त योग्यता से परिपूर्ण हो उन्होंने अनेकों ग्रन्थों जैसे राम विनोद कृष्ण विनोद भक्त विहार, श्रृंगार सागर शिवसिंह सारणी राग माला चन्द दास पदावली आदि की रचना की जो उनके साहस, ओज, पांडित्य , भक्तिभाव, गहन ज्ञान, आध्यात्मिक ज्ञान को प्रकट कर उनके व्यक्तित्व को प्रखरता प्रदान करती है ।

दूसरी ओर कवि " केशव दास " ओरछा नरेश, के आश्रय में केशवदास जी अपने काव्य व साहित्य रचना की । परिवार से सुखी केशव सम्पन्न जाति के सनाढ्य ब्राह्मण कवि सन्त जाति व वंश परम्परानुसार विद्वान व शिक्षित थे । आप हिन्दी भाषा के उन कवियों में से हैं जिन्हें राजाओं महाराजाओं से विशेष सम्मान मिला । आप भूषण, चंद, के समकक्ष रहे । वे सम्मान अधिकार " केशव जी का प्रमुख अधिकार था । चन्द की भांति आप भी प्रतिभा सम्पन्न कवि व अनेकों ज्ञान के भण्डार थे ।

आपको भूगोल ज्योतिष का ज्ञान था ।

(1) श्रवण मकर कुण्डल लसत मुख सुषमा एकत्र
शशि समीप सोहत मनौं, श्रवण मकर नक्षत्र

रामचन्द्रिका उत्तरार्द्ध छं० सं० 49, पृ० सं० 111

इस छंद से होता है ।

(2) " धनन की धोरन क्यारी ज्यों लसत है " छं 14 राम चंद्रिका पूर्वार्द्ध
कुम्हड़े की बतिया उँगली दिखाने से पृ० सं० 206
मुरझा जाती है - इससे सिद्ध है कि आपको वनस्पति विज्ञान का ज्ञान था ।

(3) मन मूँदिबे राज रुचै करि के दुःख दीरघ देखन को हरिहौ " ।
सित कंठ के कंठहि को कठुला दस कंठ के कंठहि को करिहौ ।

छं० 4, पृ० 286 से

उनके वैद्यक ज्ञान को प्रदर्शित करता है इसमें ज्वर उपचार के लिये
स्वर्ण भस्म के विषय में कहा गया है ।

(4) स्वर नाद ग्राम मुख्यतः सताल । सुर वरन विविध आलय जालि ।
बहु कला जानि मूर्च्छना मानि । षड भाग गमक गुण कला जानि

छं-3 रामचन्द्रिका उत्तरार्द्ध
पृ० सं० 158

से विदित होता है कि कवि को स्वर स्वर तान रूप - स्वर उच्चारण "नाद", ताल, गत अलाप, स्वर सन्धि मूर्च्छना, संगीत के छः भाग " गमक " आदि सभी का ज्ञान है जो उनके संगीत शास्त्र के ज्ञान का सूचक है ।

इसी प्रकार केशव दास जी, अस्त्र शस्त्र, पौराणिक ज्ञान राजनीति सम्बन्ध ज्ञान दर्शन शास्त्र, धर्मशास्त्र आदि ज्ञान में पारंगत है जो कि उनके काव्य ग्रन्थों में यथा स्थान दिखाई देते हैं । इसके अतिरिक्त काव्य शास्त्र परम्परा, संस्कृत साहित्य आदि का उन्हें विस्तृत ज्ञान था, अतः कह सकते हैं कि कोई ज्ञान ऐसा न था जो " केशव दास " जी के ज्ञान परिधि के बाहर है । इसीलिए उनका

सभी पात्रों के चित्रण में जो आध्यात्मिक तत्वों हैं । शिथिल होकर सांसारिक पात्रों के चरित्र से मेल जाते हैं । उनका तुलसी के राम चरित मानस के राम सीता व आध्यात्मिक पात्रों से कोई मेल नहीं न रामविनोद के राम से तुलना रामविनोद में रामकाव्य की परम्परा का काव्य है जो कि रामकथा के साथ पौराणिक तात्विक कथा व समसामयिक कथा के साथ साथ लेकर चली है । रामविनोद के राम दशरथ, सीता, ऐतिहासिक पात्र न होकर उनके जीवन की विराट चेतना की स्थितियों, योगसाधना क्रियात्मक स्थितियां से सम्बन्धित कर उनके मानवीय चेतना के अमूर्त रूपों का मूर्त करने का प्रयत्न रामविनोद में चंद ने किया है । इस प्रकार रामविनोद में रामकथा का कोई ऐतिहासिक सत्य न होकर मानवीय चेतना का इतिहास है । इसी में कवि ने राम द्वारा भारतीय चिन्तन की सार्वभौमिक उपलब्धि प्रस्तुत की है जो वैदिक तत्व चिन्तन से युक्त है । अतः रामविनोद का दर्शन रामचन्द्रिका से अत्याधिक ऊँचा है ।

इस राम भावना का प्रकटीकरण एवं भाव अभिव्यंजना के लिये या काव्य गठन के लिये दोनों कवियों ने सभी काव्यांगों जैसे रस, छन्द, अलंकार आदि का सहयोग लिया है । रामविनोद "वीर रस" और रामचन्द्रिका श्रृंगार रस प्रधान काव्य है । जिसमें सभी रसों का वर्णन है । काव्य सौन्दर्य हेतु अलंकार और छन्दों का विस्तृत रूप से दोनों ने प्रयोग किया । इन काव्यांगों के प्रस्तुतीकरण की विशिष्टता के कारण दोनों आचार्यत्व पद प्राप्त किया । दोनों कवियों के ग्रन्थों में संवादों, अभिव्यंजना कौशल रस निरूपण भाषा, कला कौशल का निरूपण अपने अपने स्तर से साहित्य में विशेष स्थान रखता है । दोनों साहित्य को अनेकों मूल्यवान ग्रन्थ प्रदान किये और कवि के साथ साथ आचार्य कार्य सम्पादन कर आचार्यत्व को प्राप्त हुए ।

रामचन्द्रिका व वीर सिंह देव चरित में केशवदास जी ने काव्य के आवश्यक तत्व कोमल शब्द, सुन्दरछन्द, तथा मनमोहक कथा इ की ओर संकेत किया है । मनमोहकता रस के द्वारा प्रयुक्त है । रसिकप्रिया में रस का महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है जिसके बिना पाठक का मन कविता में नहीं लगता । केशव ने दोष त्याग व अलंकार की बात भी कही है । राजा एवं न दोष युक्त कविता वनिता मित्र । उनकी ये मान्यताएँ आगे तक चली चंद की साहित्यिक मान्यतायें वैदिक साहित्य की भाँति हैं । छन्द विचार से उन्होंने पद का क्रम निर्धारित किया है जो वैदिक भाषा की भाँति है और चंद ने रामविनोद में समासयुक्त पदों का प्रयोग किया है । दोनों कवियों ने प्राचीन आचार्यों में से विश्वनाथ आनन्द वर्धन, दण्डिन, पंडितराज जगन्नाथ की रस योजनानुसार अपने काव्यों में रस योजना की है ।